नुक़ूशे इस्मत

(5)

हज़रत **इमाम हुसैन** अ० स०

अल्लामा

सै० ज़ीशान हैदर जवादी

ता ब सराह

हिन्दी तर्जुमा

उम्मे जाफ़र

नाशिर

तनज़ीमुल मकातिब

नुक़ूशे इसमत

(5)

हज़रत **इमाम हुसैन** अलैहिस्सलाम

लेखक :
अल्लामा सै० **ज़ीशान हैदर जवादी** ता-ब-सराह

तर्जुमा :
उम्मे जाफ़र

नाशिर :
तनज़ीमुल मकातिब
गोलागंज, लखनऊ-18
फोन : 522–6565982, 6565985
ई-मेल : makatib@makatib.net

इस किताब की पब्लिशिंग का हक़ सिर्फ़ तनज़ीमुल मकातिब को है

- नाम किताब : नुकूशे इस्मत-5
- मुसन्निफ़ : अल्लामा सै० ज़ीशान हैदर जवादी ता-ब-सराह
- तर्जुमा : उम्मे जाफ़र
- पहला एडीशन : अप्रैल सन् 2015 ई०
- तादाद : एक हज़ार
- प्रिन्टिंग : ए.बी.सी.आफ़सेट, दिल्ली।
- पब्लिशर : तनज़ीमुल मकातिब लखनऊ-18 (इण्डिया)
- क़ीमत 45/- :

फ़ेहरिस्त

मज़मून — पेज नं०

मज़मून	पेज नं०
अपनी बात	5
हज़रत इमाम हुसैन[अ०]	9
बीवियां	22
औलाद	23
फ़रज़न्दे ज़हरा[स०]	25
मुक़दमए किताबे कर्बला	27
पसमंज़र	58
कर्बला का मंज़र	69
तमहीदे कर्बला	79
शोहदाए कर्बला	88
इन्क़ेलाबे कर्बला	90
नक़्शे हयात	100
तरजुमए दुआए अरफ़:	111

अपनी बात

तनज़ीमुल मकातिब ने बेहतर से बेहतर मज़हबी लिट्रेचर छापने का बेड़ा उठा रखा है और मुसलसल ऐसा लिट्रेचर पेश कर रहा है, जिसकी मिसाल पिछले पचास साल के अन्दर नहीं दिखाई देती बल्कि शायद यह कहना ग़लत न होगा कि बीसवीं सदी के दूसरे हिस्से में कोई भी इदारा ऐसा नहीं है, जिसने इतना मज़हबी लिट्रेचर दिया हो जितना तनज़ीमुल मकातिब ने दिया है।

"नुकूशे इस्मत" अल्लामा जवादी[ता–ब–सराह] की लिखी हुई किताब है, जिसमें रसूलुल्लाह[स०] से इमाम महदी[अ०] तक चौदह मासूमों की ज़िन्दगी को अलग–अलग चौदह हिस्सों में पेश किया गया है। यह किताब उर्दू में कई बार छप चुकी है। अब हिन्दी में छापी जा रही है। चूँकि किताब लगभग सात सौ पेज की है जिसे ख़रीदना और एक साथ पढ़ना आम आदमी के लिए अक्सर मुमकिन नहीं हो पाता। इसलिए इस किताब को चौदह हिस्सों में छापा जा रहा है ताकि ज़ियादा से ज़ियादा लोग फ़ायदा उठा सकें।

बानिये तनज़ीम से वाबस्तगी के ज़रीए मिलने वाले दीनी ख़िदमत के जज़्बे के तहत मोहतरमा उम्मे जाफ़र साहिबा ने नुकूशे इस्मत को हिन्दी में लिखने का काम शुरू कर दिया और तेज़ रफ़्तारी से पाँच हिस्से पूरे कर लिए। पहला हिस्सा "हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स०]", दूसरा हिस्सा "हज़रत अली[अ०]", तीसरा हिस्सा हज़रत फ़ातिमः ज़हरा[अ०] और चौथा हिस्सा इमाम हसन[अ०] के नाम से पेश किया जा चुका है, अब यह पाँचवाँ हिस्सा पेशे ख़िदमत है जो हज़रत इमाम हुसैन[अ०] की ज़िन्दगी से मुतअ़ल्लिक़

है। बाक़ी हिस्से कम्पोज़िंग के मरहले में हैं, इन्शाअल्लाह जल्द ही आपके सामने किताबी शक्ल में आ जाएँगे।

उर्दू को हिन्दी लिपि से बदला गया है **Translation** नहीं किया गया है बल्कि अस्ल किताब से सख़्त अरबी, फारसी अल्फाज़ की जगह आसान उर्दू लिख दी गयी है। कहीं–कहीं अस्ल जुमले को ही बदलना पड़ा है, लेकिन इस बात का पूरा ख़याल रखा गया है कि मफ़हूम बदलने न पाए। कुछ पैराग्राफ़ भी इसलिए नहीं शामिल किये गये कि उनमें मौजूद इल्मी बातें हिन्दी जानने वालों के मतलब की नहीं थीं। इस काम में वक़्त ज़रूर लगा मगर अब इन्शाअल्लाह किताब आम आदमी के समझने के लायक़ हो गई है।

करीम परवरदिगार हमारी कोशिशों को क़बूल फ़रमाए और मोमेनीन ख़ासकर जवानों को अच्छे और मुफ़ीद लिट्रेचर से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाए।

वस्सलाम,

सय्यद सफ़ी हैदर

सेक्रेटरी तनज़ीमुल मकातिब

लखनऊ

हज़रत इमाम हुसैन अ०
की ज़िन्दगी का ख़ाका

विलादत : 3 शअ्बान
सन् 4 हिजरी

शहादत : 10 मुहर्रम
सन् 61 हिजरी

हज़रत इमाम हुसैन[अ०]

शअ्बान के महीने सन् 4 हिजरी की तीसरी तारीख़ की सुब्ह थी जब परवरदिगारे आलम ने सिद्दीक़: ताहिरा हज़रत फ़ातिम: ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा को दूसरा बेटा अता किया। जिसका सबसे पहला इम्तियाज़ यह था कि उसके शिकमे अत्हर में रहने की कुल मुददत छ:6 महीने थी जिसकी मिसाल अम्बिया की तारीख़ में हज़रत ईसा और हज़रत यहया के अलावा किसी और मक़ाम पर नहीं मिलती है और क़ुर्आन ने भी इन्सान के हमल और रेज़ाअत[1] के 30 महीने से इसी नुक्ते की तरफ़ इशारा किया है। फ़र्क़ सिर्फ़ यह है कि हज़रत ईसा और हज़रत यहया पर आयत के दूसरे हिस्सों का इन्तेबाक़[2] नहीं होता है और उसका हक़ीक़ी मिसदाक़ इमाम हुसैन[अ०] के अलावा कोई नहीं रह जाता है। आयत में 40 साल की ज़िन्दगी का ज़िक्र है और हज़रत यहया इस उम्र से पहले शहीद कर दिये गये और इसी तरह आयत में माँ–बाप के साथ नेक बर्ताव का ज़िक्र है और हज़रत ईसा बग़ैर बाप के इस दुनिया में भेजे गये थे लेहाज़ा आयत का इन्तेबाक़ उनकी ज़ात पर भी नहीं हो सकता है।

- आपकी विलादत के मौक़े पर भी जनाबे उम्मुल फ़ज़्ल के ख़ाब का तज़किरा पाया जाता है और आपकी इब्तेदाई ज़िन्दगी की शुरूआत भी उम्मुल फ़ज़्ल की ख़िदमतों से होती है। फ़र्क़ सिर्फ़ यह है कि इस मौक़े पर उम्मुल फ़ज़्ल ने यह बयान भी दिया है कि रसूले अकरम[स०] ने बच्चे की पैदाइश की ख़ुशी के साथ रोये भी हैं और उम्मुल फ़ज़्ल और उम्मे सलिम: के सवाल पर उस अंजाम की निशानदिही की जो इस बेटे की ज़िन्दगी के

1. बच्चे को दूध पिलाने की हालत, 2. फ़िट बैठना

ख़ातिमे पर मसाएब और शहादत की शक्ल में पेश आने वाला है।

➤ पैदाइश के बाद रसूले अकरम[स०] ही ने कानों में अज़ान और इक़ामत कही और आप ही ने परवरदिगार के हुक्म के मुताबिक़ [अ०] नाम रखा जो इससे पहले किसी बच्चे का नाम नहीं था और क़ुदरत ने इसे अपने ख़ास ख़ज़ाने में महफ़ूज़ कर रखा था और उसकी मर्ज़ी यह थी कि जिस तरह शख़्सीयत का कोई जवाब नहीं है उसी तरह नाम भी बेमिसाल और लाजवाब रहे।

➤ रसूले अकरम[स०] ही ने अपने ज़ेरे एहतेमाम अक़ीक़े का इन्तेज़ाम किया और आपने ग़िज़ा का यह अनोखा इन्तेज़ाम किया कि बच्चे को अपनी ज़ुबान या उँगली के ज़रीए सेर व सेराब कर दिया करते थे और किसी दूसरी गिज़ा की तरफ़ मुतवज्जेह न फ़रमाते थे, यहाँ तक कि रवायत के मुताबिक़ माँ के शीर से भी बेनयाज़ रखा था:

बज़ाहिर तो ज़ुबाँ चूसी ब–बातिन इब्ने हैदर[अ०] ने !
ज़ुबाँ दे दी पयम्बर[स०] को ज़ुबाँ ले ली पयम्बर[स०] से !!

इमाम हुसैन[अ०] की ज़ियारत में भी इस नुक्ते की तरफ़ इशारा मौजूद है कि आपकी तरबियत इस्लाम की आग़ोश में हुई है और आपको दूध ईमान के मरकज़ से मिला है।

➤ आपके अलक़ाब में सय्यद, सिब्ते असग़र, शहीदे अकबर और सय्यदुश्शोहदा मशहूर अलक़ाब हैं, और कुन्नियत अबू अब्दिल्लाह है जिससे आमतौर पर याद किया जाता है।

➤ आपकी शख़्सीयत का दूसरा इम्तियाज़ यह था कि आपकी विलादत पर जिबरील अमीन फ़रिश्तों की फ़ौज लेकर रसूले अकरम[स०] की ख़िदमत में मुबारकबाद पेश

करने के लिए आये और इस सिलसिले में कुछ मअ्तूब मलाइका की बख़्शिश का भी इन्तेज़ाम हो गया जिन्होंने कोई गुनाह नहीं किया था लेकिन तर्के औला की बिना पर उन पर एताब नाज़िल हो गया था और हुसैन[अ०] की अज़मत के इज़्हार के लिए रब्बुल आलमीन ने उनके एताब को बरतरफ़ फ़रमा दिया। (रवायतों में उनके नाम फ़ित्रूस ओर दरदाईल बयान किये गये हैं)

➢ आपकी विलादत का साल इस्लामी तारीख़ में किसी बड़े हादिसे का साल नहीं लेकिन इसके बाद इस्लाम चारों तरफ़ से नरग़ए अअ्दा में घिर गया और सबसे पहले इसे कुफ़्र व शिर्क के तमाम गिरोह से एक ही वक़्त में मुक़ाबला करना पड़ा, जो इमाम हुसैन[अ०] की ज़िन्दगी का पहला तास्सुर था कि कुफ्र व शिर्क और यहूदियत ने चारों तरफ़ से घेर कर इस्लाम को मिटा देने का मन्सूबा बना लिया है और नाना एक मेरे वालिद की ताक़त के भरोसे पर सबसे मुक़ाबला करने के लिए तैयार हैं और आख़िर में फिर सारे कुफ़्र का ख़ात्मा भी हो जाता है। जिसने इमाम हुसैन[अ०] की इस ज़िम्मेदारी का भी एलान कर दिया कि जब इस्लाम चारों तरफ़ से नरग़ए अअ्दा में घिर जाये तो उसकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी अपने ही घराने पर लागू होती है और सारे कुफ़्र के ख़ात्मे का अमल अपने ही घराने को अंजाम देना होता है जिसका दूसरा मन्ज़र इस्लाम की तारीख़ में कर्बला के मैदान में पेश आया और इमाम हुसैन[अ०] की ज़िन्दगी की इब्तेदा और इन्तेहा यक्सा हालात का नमूना बन गयी।

➢ सन् 6 हिजरी में हुदैबियः की सुल्ह का वाक़िआ पेश आया जो इमाम हुसैन[अ०] की ज़िन्दगी का दूसरा मौक़ा था और जिस पर आपने इसी तरह इमाम हसन[अ०] की सुल्ह के मौक़े पर अमल–दर–आमद किया जिस तरह रसूले

अकरम[स०] के साथ मौलाए काएनात ने सुल्ह में हिस्सा लिया था और न अली[अ०] के हाथ में भी ख़ैबर शिकनी का ज़ोर था और हुसैन[अ०] भी कर्बला के जेहाद का हौसला रखते थे।

- सन् 7 हिजरी में इस्लाम को बदतरीन दुश्मन यहूदियों से साबेक़ा पड़ा जहाँ सारे मुसलमानों के भाग जाने के बाद मौलाए काएनात ने ख़ैबर को फ़त्ह कर दिया जो इमाम हुसैन[अ०] की ज़िन्दगी का तीसरा मौक़ा था। जिसका नमूना उस दिन पेश आया जब तमाम बड़ी शख़्सीयतों ने यज़ीदियत से ख़ौफ़ज़दा होकर ख़ाना नशीनी या राहे फ़रार इख़्तियार कर ली और इमाम हुसैन[अ०] अपने घर वालों के साथ क़स्रे यज़ीदियत की चूलें हिला देने के लिए खड़े हो गये और अपने मन्सूबे को पूरा करके दिखला दिया।
- सन् 8 हिजरी में मक्का फ़त्ह हुआ जहाँ इमाम हुसैन[अ०] ने अपने नाना के जूदो व करम का मुशाहेदा[1] किया और यह देख लिया कि मुनाफ़िक़ीन किस तरह कलिमः पढ़कर इस्लाम में दाख़िल हो रहे हैं और रसूले अकरम[स०] किस तरह शरीफ़ लोगों को तलीक़[2] लोगों से अलग रखना चाहते हैं ताकि तलक़ाअ् के ख़तरे से महफ़ूज़ रहा जाये और इस्लाम को हर तरह की हिफ़ाज़त फ़राहम कर दी जाये।
- सन् 9 हिजरी में ईसाईयों के मुक़ाबले में मुबाहला हुआ तो उसमें इमाम हुसैन[अ०] ने बनफ़्से नफ़ीस शिरकत की और सबसे कमसिन बल्कि बिलकुल कमसिन होने की बिना पर अपने नाना की आग़ोश में मैदान में आये और यह वाज़ेह कर दिया कि हक़ व सच्चाई का मारका सिन व साल का मोहताज नहीं होता है और जिस शख़्स को

1. देखना, 2. आज़ाद करदः गुलाम

अपनी सच्चाई पर भरोसा होता है उसे ऐसे मारके में हिस्सा लेना होता है।

इमाम हुसैन[अ०] ने नाना के इस तर्ज़े अमल की भी तजदीद कर्बला के मैदान में की जब ईसाई औरत मैसून: की गोद के पाले यज़ीद के लश्कर के मुक़ाबले में हक़ व सच्चाई का सबसे कमसिन मुरक़्क़ा अली असग़र[अ०] की शक्ल में पेश कर दिया और दुश्मन की फ़ौज को इस तरह मुँह फेर–फेर कर रोने पर मजबूर कर दिया जिस तरह ईसाई अपनी हार मानकर जज़या देने पर तैयार हो गये थे।

- सन् 10 हिजरी में आख़िरी हज का वाक़ेआ पेश आया जहाँ हज से वापसी पर रसूले अकरम[स०] ने ग़दीर के मक़ाम ख़ुम पर हज़रत अली[अ०] की मौलाईयत का एलान किया और तमाम बड़े–बड़े असहाब ने मय उमर के इस मौलाईयत की मुबारकबाद पेश की और हज़रत अली[अ०] के हाथों पर बैअत की जिसके बग़ैर तीन दिन तक क़ाफ़िला आगे न बढ़ सका और रसूले अकरम[स०] इसी बेयाबान में ठहरे रहे।
- सन् 11 हिजरी में 28 सफ़र को रसूले अकरम[स०] ने इन्तेक़ाल फ़रमाया और अहलेबैत[अ०] के घर में मसाएब का सिलसिला शुरू हो गया। पहली मुसीबत यह सामने आयी कि ज़िन्दगी भर जाँ निसारी का दावा करने वाले लोगों ने जनाज़े में भी शिरकत न की और सक़ीफ़: में ख़लीफ़ासाज़ी का अमल अंजाम देते रहे अगरचे ख़ुद रसूले अकरम[स०] ग़दीरे ख़ुम के मैदान में ख़िलाफ़त का फ़ैसला कर चुके थे और तमाम सक़ीफ़ासाज़ लोगों को इस हक़ीक़त का इल्म था और ख़ुद इस तक़रीब में भी शिरकत कर चुके थे।

- इसके बाद दूसरी मुसीबत यह आयी कि मौलाए काएनात से वक़्त के हाकिम की बैअत की माँग की गयी और इस सिलसिले में गले में रस्सी डालकर खींचा गया, दरवाज़े में आग लगायी गयी और रसूल[स०] की बेटी के पहलू को ज़ख़्मी करके उनके बेटे मोहसिन की ज़िन्दगी का ख़ातिमा कर दिया गया।
- तीसरी मुसीबत हज़रत फ़ातिमः ज़हरा[अ०] की फ़िदक की जायदाद पर सरकारी क़ब्ज़े का होना था जिसके ख़िलाफ़ आपने दरबार में एहतेजाज भी किया और आयाते कुर्आनी से मीरास को साबित भी किया और हिबा के गवाह भी पेश किये। लेकिन आपकी एक न सुनी गयी और आपकी जागीर को उम्मत का सद्क़ा बना दिया गया और अहलेबैत[अ०] के घर में फ़ाक़ों का दूसरा दौर शुरू हो गया।
- इमाम हुसैन[अ०] इन तमाम मुसीबतों का ग़ौर से मुतालेआ कर रहे थे और इस्लाम की राह में ऐसी ही कुर्बानियाँ पेश करने पर आमादा थे ताकि ख़ुदा का दीन किसी दौर में लावारिस न रहने पाये और उसे हर दौर में कुर्बानी देने वाले फ़राहम होते रहें।
- रसूले अकरम[स०] की वफ़ात के 75 या 95 दिन के बाद ख़ुद हज़रत फ़ातिमः[अ०] भी उन्हें मसाएब और मज़ालिम के ज़ेरे असर दुनिया से रूख़्सत हो गयीं और इमाम हुसैन[अ०] की ज़िन्दगी में मसाएब का एक नया दौर शुरू हो गया जिसका सबसे बड़ा मज़हर अमीरूल मोमिनीन[अ०] की ख़ामोशी और आपकी मुसलसल 25 साला ख़ाना नशीनी थी जिसमें अहलेबैत[अ०] के ख़िदमात का सिलसिला तो जारी रहा लेकिन इक़्तेदार परस्त तारीख़ ने इन ख़िदमात को तवज्जोह के क़ाबिल नहीं समझा और उन

मुख़्लिसीन के बयानात और तहरीरों को महफ़ूज़ नहीं रहने दिया गया।

रसूले अकरम[स०] की ज़िन्दगी के इस 6 साल में इमाम हुसैन[अ०] ने जिस तरह की ज़िन्दगी गुज़ारी है, उसका क़यास बाद की ज़िन्दगी पर किसी अन्दाज़ से भी नहीं किया जा सकता है।

- रसूले अकरम[स०] के दौर में अगर कभी आँखों से आँसू निकल आये तो आपने फ़ौरन गोदी में उठा लिया कि मुझे हुसैन[अ०] के रोने से तकलीफ़ होती है।
- अगर मस्जिद में आकर गिर पड़े तो आपने ख़ुत्बा रोक कर मिम्बर से उतर कर उठा लिया और फ़रमाया कि.... ऐ लोगो ! इसे पहचानो, इसका एहतेराम करो और वक़्त पड़ने पर इसकी मदद करना।
- अगर कभी पीठ पर बैठ गये तो आपने सजदे को बढ़ा दिया।
- अगर कभी ईद के दिन मचल गये तो आपने कान्धे पर बिठा कर सवारी का अन्दाज़ इख़्तियार कर लिया।
- अगर कभी हिरन के बच्चे की माँग कर दी गयी तो हुज़ूर[स०] उस वक़्त तक मुत्मइन नहीं हुए जब तक हिरन का बच्चा हुसैन[अ०] के हवाले न कर दिया।
- अगर मुबाहिले के मैदान में ले गये तो अपनी गोद में उठाया ताकि हुसैन[अ०] को रास्ता चलने की ज़हमत भी न हो।
- अगर आग़ोश में इब्राहीम जैसा बेटा रहा और क़ुदरत ने कह दिया कि एक को इख़्तियार करो। तो इब्राहीम को क़ुर्बान करके हुसैन[अ०] को बचा लिया। (वाज़ेह रहे कि इब्राहीम बिन मारियः क़ुब्तियः की विलादत सन् 8 हिजरी में है और वफ़ात सन् 10 हिजरी में)

➤ अगर कभी हबीब इब्ने मज़ाहिर को हुसैन[अ०] की क़दमों की ख़ाक को आँखों से लगाते देख लिया तो हबीब को गोदी में उठा लिया कि मेरे बेटे हुसैन[अ०] का क़द्रदान है।

(रौज़तुश्शुहदा)

➤ रसूले अकरम[स०] के बाद हालात बिलकुल बदल गये लेकिन वक़्तन फ़वक़्तन अहकामे वक़्त और दूसरे मुसलमानों ने इमाम हुसैन[अ०] की अज़मत का एलान व इज़हार इसलिए किया कि अभी उम्मत के जज़्बात बिलकुल मुर्दा नहीं हुए थे और अहलेबैत[अ०] पर वाज़ेह तौर पर ज़ुल्म करने से जज़्बात भड़क सकते थे, लेहाज़ा एक तरफ़ दरवाज़े में आग लगायी गयी, फ़िदक को ज़बरदस्ती छीन लिया गया, ख़िलाफ़त पर क़ब्ज़ा किया गया और दूसरी तरफ़ इमाम हुसैन[अ०] मस्जिद में हाकिम को मिम्बर पर देखकर टोक देते हैं कि मेरे बाप के मिम्बर से उतर आ, और अपने बाप के मिम्बर को तलाश कर। अगर क़ौम में ग़ैज़ व ग़ज़ब के आसार पैदा हो जाते हैं तो वक़्त का हाकिम ख़ुद बहुत ही सफ़ाई के साथ एलान कर देता है कि हुसैन[अ०] का दावा बिलकुल सही है। यह उनके बाप का मिम्बर है और मेरे बाप का कोई मिम्बर नहीं है। बल्कि अगर कभी अब्दुल्लाह बिन उमर को इमाम हुसैन[अ०] ने ग़ुलामज़ादा कह दिया तो वक़्त के ख़लीफ़ा ने फ़ौरन फ़रमाया कि इसे हुसैन[अ०] से लिखवा लेना चाहिए था कि यह तो एक नविश्तए नजात है। हुसैन[अ०] की ग़ुलामी से बेहतर और नजात का वसीला क्या हो सकता है? जबकि कल रसूले अकरम[स०] नविश्तए नजात लिखना चाहते थे तो उन्हें हिज़यानगो[1] क़रार दे दिया गया था।

➤ रवायतों में तो ज़ाहिरदारी का यह मन्ज़र भी सामने आया है कि उमर मुआवियः के साथ राज़ व नयाज़ में

1. बकवास करना

मसरूफ़ थे और इमाम हुसैन[अ०] मिलने के लिए आये तो इब्ने उमर ने यह कहकर वापस कर दिया कि जब मुझे बारयाबी की इजाज़त नहीं है तो आप किस तरह अन्दर जा सकते हैं ?......और बाद में उमर से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने हाल पूछने के बाद कहा कि आपका हिसाब इब्ने उमर से बिलकुल अलग है। ख़ुदा की क़सम यह मेरे सर के बाल पहले ख़ुदा के करम से उगे हैं और उसके बाद आप हज़रात की मेहरबानियों से।

अबू हुरैरह जो इस्लामी रवायतों के सबसे बड़े हीरो समझे जाते हैं, उनका भी यह आलम था कि अपने कपड़ों से इमाम हुसैन[अ०] की जूतियाँ साफ़ करते थे और जब आपने मना किया कि ऐसा मत करो तो जवाब दिया कि आप कुछ न कहिये। अगर लोगों को इन फ़ज़ाएल का इल्म होता जो मुझे है तो तमाम लोग आपको अपने कान्धों पर उठाकर चलते।

अमीरूल मोमिनीन[अ०] की 25 साल की ख़ामोशी के बाद जब उसमान के क़त्ल के नतीजे में लोगों ने आपकी बैअत की तो इमाम हुसैन[अ०] की ज़िन्दगी का एक और दौर शुरू हुआ, जहाँ बज़ाहिर तो ख़िलाफ़त और हुकूमत घर में आ रही थी लेकिन वाक़ेअन फ़ित्नों का एक नया तूफ़ान उठनेवाला था और आले मुहम्मद[स०] को उसका भी मुक़ाबला करना था। चुनान्चे सन् 35 हिजरी में जमल की जंग हुई, जहाँ उसमान के क़त्ल का हुक्म देने वाली आयशः ने उनकी मज़लूमियत का परचम बुलन्द कर दिया और हज़रत अली[अ०] को क़ातिल क़रार देकर उनसे बदला लेने पर आमादा हो गयीं। इस मैदान में इमाम हुसैन[अ०] की उम्र तीस साल से ज़ियादा थी, और आपने जेहाद में बाक़ायदा हिस्सा लिया था यह और बात है कि

पैग़म्बर^स॰ की अमानत होने के एतेबार से हज़रत अली^अ॰ आमतौर से इन बेटों को मैदान में नहीं भेजते थे।

- जमल की फ़त्ह के बाद सन् 36 हिजरी में सिफ़्फ़ीन की जंग हुई और इसका अन्जाम भी तहकीम और बिल आख़िर मुआवियः की हुकूमत की शक्ल में सामने आया जिसका बेहद असर हज़रत अली^अ॰ की तरह इमाम हुसैन^अ॰ पर भी हुआ लेकिन आपने इस्लाम की ख़ातिर इस मक्कारी को भी बर्दाश्त कर लिया।
- इसके बाद नहरवान की जंग हुई और इसमें भी रब्बुल आलमीन ने मौलाए काएनात हज़रत अली^अ॰ को फ़त्ह इनायत फ़रमायी लेकिन इसके बाद शाम के हाकिम की रीशा दवानियाँ[1] तेज़ हो गयीं और आख़िर में रमज़ान के महीने की 19वीं तारीख़ को हज़रत अली^अ॰ को कूफ़े की मस्जिद में इब्ने मुलजिम के ज़रीए ज़ख़्मी करा दिया गया और 21 रमज़ान को आपकी शहादत हो गयी। आपके कफ़न व दफ़्न के बाद उम्मत ने इमाम हसन^अ॰ की बैअत कर ली और शाम की हुकूमत की फ़ित्ना परदाज़ियों का नया दौर शुरू हो गया।
- जुमादल ऊला सन् 41 हिजरी में शाम के हाकिम ने अपने मख़सूस मसालेह के तहत इमाम हसन^अ॰ को सुल्ह का पैग़ाम दे दिया और इमाम हसन^अ॰ ने अपनी मख़सूस हिकमत के तहत इस्लाम व मुसलमानों की बक़ा के लिए इस पेशकश को मन्जूर फ़रमा लिया और सुल्ह मुकम्मल हो गयी जिसके बाद हुकूमत मुआवियः के हाथ में चली गयी और उसने वादा ख़िलाफ़ी करके अहलेबैत^अ॰ को तकलीफ़ देने का एक नया सिलसिला शुरू कर दिया। हज़रत अली^अ॰ पर बाक़ायदा सब्बोसितम होने लगा। अली^अ॰ के दोस्तों का क़त्लेआम जाएज़ हो गया और हर तरह की अज़ीयत व मुसीबत का जवाज़ सहल हो गया।

1. साज़िश रचना

➤ इमाम हुसैन[अ०] ने भाई की सुल्ह के एहतेराम में उन तमाम तकलीफ़ों को बर्दाश्त किया, यहाँ तक कि सफ़र सन् 50 हिजरी में इमाम हसन[अ०] को ज़ह्‌र से शहीद करा दिया गया और इस्लाम की ज़िम्मेदारी इमाम हुसैन[अ०] की तरफ़ मुन्तक़िल हो गयी। आपने इन्तेहाई शदीद ज़ुल्मों और बदतरीन वादा ख़िलाफ़ी के बावजूद भाई की सुल्ह का एहतेराम बाक़ी रखा और जनाज़े पर तीरों की बारिश भी हुई तो बनी हाशिम के बहादुरों को तलवार उठाने की इजाज़त नहीं दी और रसूल[स०] के रौज़े में तजदीदे अहद के बाद भाई की लाश को जन्नतुल बक़ीअ् में दफ़्न कर दिया, और मुआवियः अपने ज़ुल्म व सितम के कारोबार में मसरूफ़ रहा, यहाँ तक कि रजब सन् 60 हिजरी में मुआवियः भी दुनिया से रूख़्सत हो गया और उसकी जगह उसके बेटे यज़ीद ने ले ली। जिसका इन्तेज़ाम उसने अपनी ज़िन्दगी में कर दिया था और चलते–चलते वसीयतनामे के ज़रीए मुतवज्जेह भी कर दिया था कि उम्मत के कुछ लोग बहरहाल ख़तरनाक हैं। जिनमें से अब्दुल्लाह बिन उमर ने वक़्त आने पर इताअत का एलान कर दिया और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने भागने की राह इख़्तियार कर ली और इस्लामी मुहाज़ पर इमाम हुसैन[अ०] के अलावा कोई न रह गया जिन्होंने यज़ीद की बैअत की माँग का जवाब दिया और वलीद जैसे गवर्नर के दरबार में एलान कर दिया कि मैं रसूल[स०] का बेटा हूँ और यज़ीद शारिबुल ख़म्र, जुआरी और ज़िनाकार है और मुझ जैसा इन्सान इस जैसे ख़बीस इन्सान की बैअत नहीं कर सकता है। जिसके बाद मुसीबतों का एक और दौर शुरू हो गया और 28 रजब सन् 60 हिजरी को इमाम हुसैन[अ०] ने मदीना छोड़ दिया। तीसरी शअ्बान को मक्के पहुँचे और ख़ुदा के घर को मामिन[1] क़रार दिया। लेकिन हज्जे

बैतुल्लाह के मौके़ पर यज़ीदी सिपाहियों ने एहराम के लेबास में खंजर छुपाकर इमाम हुसैन[अ०] के क़त्ल का मन्सूबा बना लिया तो आपने मक्के को भी छोड़ दिया और बज़ाहिर इराक़ का रूख़ कर लिया। मुख़्लिसीन ने मशवेरे दिये, नसीहत करने वालों ने नसीहत की, नाक़िदीन ने नसीहत की लेकिन आप रसूल[स०] के ख़्वाब और ख़ुदा के हुक्म का हवाला देकर अपने सफ़र को जारी रखे रहे यहाँ तक कि 2 मुहर्रम को कर्बला की सरज़मीन पर पहुँच गये। तीसरी मुहर्रम से यज़ीदी फ़ौजें आने लगीं। पाँच मुहर्रम से फ़ुरात पर ज़ालिमों का क़ब्ज़ा हो गया। 7 मुहर्रम को हुसैन[अ०] के ख़ैमों में पानी ख़त्म हो गया। 9 मुहर्रम को हुसैन[अ०] ज़ालिमों के नरग़े में घिर गये। आशूर के दिन यज़ीद के कम से कम 30 हज़ार सिपाहियों और इमाम हुसैन[अ०] के 72 मुख़्लिसीन के बीच क़यामतखे़ज़ मुक़ाबला हुआ और अस्र का हंगाम आते–आते इमाम हुसैन[अ०] मय अपने जुमला साथियों और ख़ानदान वालों के तीन दिन के भूखे–प्यासे ख़ुदा की राह में क़ुर्बान हो गये और उनके ख़ैमे जला दिये गये। शामे ग़रीबाँ बेकसी और बेबसी के माहौल में गुज़र गयी और 11 मुहर्रम को अहले हरम को क़ैदी बनाकर कूफ़े की तरफ़ ले जाया गया, जिस क़ाफ़िले की क़ाफ़िला सालारी का काम इमाम ज़ैनुल आबिदीन[अ०] के हवाले किया गया और इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] बहुत ही कमसिनी के बावजूद इस क़यामतखे़ज़ मुसीबत में बराबर के शरीक रहे। शहादत इमाम हुसैन[अ०] पर ज़मीन व आसमान सब रोये और क़यामत के आसार नमूदार हो गये लेकिन ज़ालिमों के दिल व देमाग़ पर कोई असर नहीं हुआ, और उनके ज़ुल्मों का सिलसिला अहले हरम पर बराबर जारी रहा यहां तक कि कूफ़ा व शाम के

1. अम्नो अमान की जगह

बाज़ारों दरबारों और क़ैद ख़ानों से गुज़रने के बाद एक साल क़ैद की मुद्दत गुज़ार कर रवायतों के मुताबिक़ 8 रबीउल अव्वल सन् 62 हिजरी को लुटा हुआ क़ाफ़िला अपने वतन मदीने वापस आया, और जनाबे उम्मे कुलसूम[अ०] ने ....मरसिया पढ़ा।

बीवियाँ

तारीख़ लिखने वालों और सीरत निगारों ने इमाम हुसैन अ० की पाँच बीवियों की निशानदेही की है :

1- जनाबे शहरबानो जिन्हें शाहे जेनान भी कहा जाता है। आपके बेटे इमाम ज़ैनुल आबिदीन अ० थे और आपका इन्तेक़ाल इमाम अ० की विलादत के दस दिन के अन्दर ही हो गया था। कर्बला के वाक़िए के सिलसिले में कुछ मरसियों में आपका ज़िक्र बेबुनियाद है। हो सकता है कोई और ख़ातून रही हों जिन्हें इमाम अ० की माँ होने का शरफ़ हासिल न रहा हो मगर शहरबानो रही हों, इसलिए कि शहरबानो एक क़िस्म का लक़ब है जो किसी भी मुअज़्ज़िज़ ख़ातून को दिया जा सकता है। (कुछ मोहक़्क़ेक़ीन ने तारीख़ में शहरबानो के वुजूद ही का इनकार किया है)।

2- लैला बिन्ते अबू मर्रः बिन उरवः बिन मस्ऊद – यह जनाबे अली अकबर अ० की माँ थीं और इनके बारे में भी ज़ियादातर मोहक़्क़ेक़ीन की राय है कि यह कर्बला के वाक़िए में मौजूद न थीं और मोअ्तबर किताबों से इनका वुजूद साबित नहीं होता है, अगरचे बहुत से लिखने वालों ने आपके वाक़िआत भी दर्ज किये हैं और कर्बला के वाक़िआत में आपका ज़िक्र बार–बार किया जाता है।

3- रबाब बिन्ते अमरूलक़ैस – यह हज़रत अली असग़र अ० और हज़रत सकीना की माँ थीं। जो कर्बला के वाक़िए में मौजूद थीं और कर्बला के बाद तक़रीबन एक साल ज़िन्दा रही हैं लेकिन कभी साए में नहीं बैठीं कि धूप में इमाम अ० की लाश देखकर यह अहद कर लिया था कि ज़िन्दगी भर साए में न बैठेंगी।

4- क़ज़ाइयः – इनके बेटे का नाम जाफ़र बताया जाता है जिनका ज़िक्र कुछ तारीख़ लिखने वालों ने किया है। 5- उम्मे इसहाक़ बिन्ते तलहः – इनकी बेटी का नाम फ़ातिमः है जिनका अक़्द हसन मुसन्ना इमाम हसन अ० के बेटे के साथ हुआ था।

औलाद

ऊपर दिये हुए बयानों से यह बात वाज़ेह हो जाती है कि इमाम[अ०] की कुल औलाद छः थीं। चार बेटे और दो बेटियाँ। अगरचे इब्ने शहर आशोब ने छः बेटों का ज़िक्र किया है और दो नाम मुहम्मद और अब्दुल्लाह बताये हैं और कुछ हज़रात ने तीन बेटियों का ज़िक्र किया है और एक का नाम 'ज़ैनब' बताया है।

इसके अलावा और भी इख़्तिलाफ़ात पाये जाते हैं जिनकी तहक़ीक़ का यह मौक़ा नहीं है। अलबत्ता यह बात बहरहाल वाज़ेह है कि अगर हज़रत फ़ातिमः का अक़्द हसन मुसन्ना से हो चुका था तो फिर हज़रत क़ासिम के अक़्द की दास्तान बिलकुल बेबुनियाद है। फिर यह भी बात तहक़ीक़ के क़ाबिल रह जाती है कि अगर हज़रत फ़ातिमः और हज़रत सकीना दो ही बेटियाँ थीं तो रुक़य्यः बिन्तुल हुसैन[अ०] से मुराद कौन सी ख़ातून हैं जिनका रौज़ा शाम में नुमायाँ हैसियत रखता है और आज भी मरजए ख़लाइक़ बना हुआ है।

हज़रत सकीना के बारे में भी हमेशा से यह बहस चली आ रही है कि आपका इन्तेक़ाल शाम के क़ैदख़ाने में हुआ है या नहीं। इसलिए कि ज़ियादातर किताबों में आपका नाम नहीं ज़िक्र किया गया, सिर्फ़ एक "बिन्ते सग़ीरः" की निशानदिही की गयी है और हो सकता है कि वह रुक़य्यः बिन्तुल हुसैन[अ०] हों जिन्हें इसी मक़ाम पर दफ़्न कर दिया गया जहाँ उनका इन्तेक़ाल हुआ था। वरना हज़रत सकीना के नाम की क़ब्र दमिश्क़ के क़ब्रिस्तान में बतायी जाती है। और वह इसलिए महल्ले बहस है कि वहीं हज़रत उम्मे कुलसूम की क़ब्र भी है और उनका शाम से मदीने जाना लगभग मुसल्लमात[1] में है और फिर दोबारा हज़रत ज़ैनब[अ०] के साथ शाम में आकर इन्तेक़ाल फ़रमाने का कोई ज़िक्र अहम किताबों में नहीं मिलता है।

1. तयशुदा, मानी हुई बात

बहरहाल इमाम हुसैन[अ०] की मज़लूमियत का एक नमूना यह भी है कि ज़ालिमों ने कर्बला के वाक़िआत के बाद भी इस क़द्र ज़ुल्म का सिलसिला जारी रखा कि सही तारीख़ भी मुरत्तब न हो सकी और आले रसूल[स०] की क़ब्रों का सही तअय्युन भी न हो सका और इस मुसीबत का सिलसिला मदीने में हज़रत फ़ातिमः ज़हरा[अ०] की क़ब्र से शुरू हुआ था जो नस्लों में बाक़ी रहा और आले रसूल[स०] की ज़ियादातर क़ब्रें भी बेनिशान रह गयीं। यह और बात है कि जिस क़द्र क़ब्रों की निशानदिही हो गयी और जिन क़ब्रों पर रौज़ों की तामीर हो गयी और जहाँ आज तक ज़ियारतों का सिलसिला जारी है। इतनी क़ब्रें और इतने रौज़े भी हक़्क़ानियत के असबाब के लिए काफ़ी हैं वरना मुतवक्किल मलऊन ने तो इमाम हुसैन[अ०] की क़ब्र का निशान भी मिटा देने का मन्सूबा बना लिया था और कभी हल चलवाना चाहा तो जानवर आगे न बढ़े और कभी दरिया का पानी ले जाना चाहा तो पानी हैरत में पड़कर ठहर गया कि अब इस मज़लूम की क़ब्र की तरफ़ किस तरह जाये जिसको कल ख़न्जर के नीचे एक बूँद पानी न मिल सका था और जिसने चाहने वालों को वसीयत की थी कि ठण्डा पानी पीना तो मेरी प्यास को याद कर लेना और किसी ग़रीब व बेकस का ज़िक्र आ जाये तो मुझ मज़लूम पर आँसू बहाना जिसे बेजुर्म व ख़ता के क़त्ल किया गया है और शहादत के बाद उसकी लाश को पामाल कर दिया गया है।

फ़रज़न्दे ज़हरा अ०

वह हादिये बरहक़ —— जिसने आख़िरी सांस तक दीन का पैग़ाम सुनाया !

वह क़ारिए क़ुर्आन—— जिसने नोके नैज़ा पर भी तिलावत की !

वह मुहाफ़िज़े हरम—— जिसने काबे की हुरमत के लिए हज को उमरे से बदल दिया !

वह पासबाने शरीअत—— जिसने अम्र–बिल–मअ्रूफ़ और नही–अनिल–मुनकर के लिए अज़ीज़ वतन को छोड़ दिया !

वह मुजाहिदे फ़ी–सबीलिल्लाह–जिसने तीन दिन की भूख और प्यास में जेहाद किया !

वह इस्लाम का ज़िम्मेदार—— जिसने दीन की बक़ा के लिए भरा घर लुटा दिया !

वह इबादत शेआर—— जिसने बरसते तीरों में नमाज़ अदा की !

वह सजदा गुज़ार—— जिसने ज़ेरे खंजरे सितम सजदा किया !

वह मसावात का अलमबरदार– जिसने जौन का सर अपने ज़ानू पर रखा !

वह साहिबे ईसार——	जिसने हक़ की राह में छः महीने के बच्चे को भी कुर्बान कर दिया !
वह राकिबे दोशे रसूल[स०]——	जिसकी ख़ातिर मुरसले आज़म[स०] नाक़ा बने !
वह हाफ़िज़े फ़ुरूअ् व उसूल–	जिसने पैग़म्बर[स०] की पुश्त पर आकर सजदे को तूलानी बना दिया !
वह वारिसे ख़ुल्के अज़ीम——	जिसने बेगानों को भी सेरो सेराब किया !
वह मौलाए रहीम व करीम——	जिसने हुर की ख़ता को माफ़ करके उसे हक़ीक़ी हुर[अ०] बना दिया !

◆◆◆◆◆

मुक़द्दमए किताबे कर्बला

किसी किताब के हक़ों व मआरिफ़ व मतलबों व मफ़हूमों को समझने के लिए यह ज़रूरी होता है कि उससे पहले उनके मतलबों का एक ख़ाका देमाग़ में बिठा लिया जाये और उससे मुत्अल्लिक़ लोग किरदार ओर मक़ामात का एक नक़्शा तैयार कर दिया जाये ताकि उसी की रोशनी में अस्ल हक़ों का सही अन्दाज़ा किया जाये।

किताबे कर्बला – एक किताबे हिदायत है जिसके हर गोशे में इस्लामी तालीमात और क़ुर्आनी अहकाम की ताबानी नज़र आती है।

किताबे कर्बला – एक किताबे इबादत है जिसके हर पेज पर इबादत गुज़ारों की लाइन नज़र आती है।

किताबे कर्बला – एक किताबे इन्क़ेलाब है जिसका हर लफ़्ज़ खून की रोशनाई से लिखा गया है।

किताबे कर्बला – एक किताबे शहादत है जिसके हर नुक़्ते में हयाते जावेदानी की मरकज़ीयत पायी जाती है।

किताबे कर्बला – एक किताबे सियासत है जिसमें तद्बीरे हयात की सारी तालीमात और ज़ुल्म से मुक़ाबले की सारी तद्बीरें बयान की गयी हैं।

किताबे कर्बला – हक़ीक़त में किताबे कर्बला है जिसके मुक़ाबले में कोई किताब न इससे पहले तैयार हुई है और न इसके बाद तैयार होने वाली है।

ऐसी किताब का मुकम्मल इदराक हासिल करने के लिए इन तमाम मुक़द्दमात पर उबूर हासिल करना ज़रूरी होगा

जिनके बग़ैर इस किताब के हक़ों का इदराक मुमकिन नहीं है। इन्हीं मुक़द्दमात पर उबूर हासिल न करने का नतीजा है कि इस किताब की बेशुमार मनमानी तफ़सीरें की गयीं, तरह–तरह की शरहें लिखी गयीं, नई–नई तावीलें ईजाद की गयीं और ताबीरात की ज़ियादती से हक़ों को ख़ाबे परीशाँ बना देने की उमूमी मशीन ईजाद हो गयी।

किसी ने इस अज़ीम जेहाद को दो शहज़ादों की जंग क़रार दिया। किसी ने इसको मआज़ल्लाह इमाम हुसैन[अ०] की नाआक़िबत अन्देशी का नतीजा कहा, किसी ने यज़ीद के जवानी के जोश का नाम दिया, किसी ने उरैनब बिन्ते इसहाक़ के इश्क़ की दास्तान वज़अ् की, किसी ने आम सियासी लड़ाईयों का रंग दिया, किसी ने रोटी, कपड़े, मकान के मस्अले का हल क़रार दिया और किसी ने अपने मफ़रूजात[1] व मज़ऊमात की रोशनी में इसकी तशरीह करना शुरू की।

ग़रज़ कि जितने मुफ़क्किर थे उतने ही ख़यालात, जितने मुक़र्रिर थे उतने ही बयानात, जितने लिखने वाले थे इतने ही मक़ालात और जितने अहले ग़रज़ थे उतने ही रूजहानात।

मुक़द्दमए किताबे कर्बला का मक़सद यही है कि इस अज़ीम जेहाद फ़ी–सबीलिल्लाह की हक़ीक़त को उजागर किया जाये और उन तमाम साज़िशों को बेनक़ाब किया जाये जो हुसैनी इन्क़ेलाब के ख़िलाफ़ की गयी हैं या आज तक की जा रही है।

1. बेदलील और बेसुबूत ख़यालात और दावे

पहला मुक़दमा——शख़्सीयत इमाम हुसैन अ०

कर्बला में बुनियादी किरदार इमाम हुसैन अ० का है जिनके फ़ी–सबीलिल्लाह जेहाद की ताबानियाँ कर्बला के सफ़्हे पर हर तरफ़ नज़र आती हैं और जिनके इशारे पर वह छोटा सा लश्कर तैयार हुआ था जिसने हर तरह की क़ुर्बानी देकर इलाही दीन को हयाते दाएमी और बक़ाए जावेदानी बख़्श दी है।

इमाम हुसैन अ० की शख़्सीयत और अज़्मत को न पहचानने ही का नतीजा है कि कर्बला को दो शहज़ादों की जंग क़रार दे दिया गया और उसकी मअ्नवी और रूहानी हैसियत को नज़र अन्दाज़ कर दिया गया।

इमाम हुसैन अ० की शख़्सीयत किसी तरह भी तआरूफ़ की मोहताज नहीं है। मुसलमान, हिन्दू, सिख, ईसाई, यहूदी, पारसी कोई क़ौम ऐसी नहीं है जो किसी न किसी मिक़दार में इमाम हुसैन अ० की शख़्सीयत से बाख़बर न हो। कम से कम इतना तो हर एक को मालूम है कि इमाम हुसैन अ० रसूले अकरम स० के नवासे, मौलाए काएनात अलीयिब्नि अबीतालिब अ० के बेटे, सिद्दीक़ा ताहिरा हज़रत फ़ातिमा ज़हरा अ० के नूरे नज़र, इमाम हसन अ० के भाई और हज़रत अबूतालिब अ० के पोते थे और यह सारे रिश्ते वह हैं जो इन्सान की अज़्मत व मरतबे की बेहतरीन अलामत हैं।

रसूले अकरम स० का नवासा होना और फिर ऐसा नवासा होना जिसे इन्तेहाई कमसिनी के आलम में इस्लाम की बरतरी, क़ुर्आन की सदाक़त, तौहीद की हिफ़ाज़त के मैदान में शरीक किया जाये और अपने पैरों से न चल सकें तो गोदी में उठाकर ले जाया जाये और दुनिया पर यह वाज़ेह कर दिया जाये कि जो अहम्मीयत बाक़ी बुज़ुर्गों की बद्दुआ की है वही अहम्मीयत

हुसैन[अ॰] की बद्दुआ की है, और जिस क़द्र ख़ानदान के बुज़ुर्ग मुस्तिजाबुद्दअ्वात हैं उसी क़द्र हुसैन[अ॰] भी मुस्तिजाबुद्दअ्वात हैं और जिस क़द्र मुबाहले के मैदान को नाना और माँ–बाप की ज़रूरत है उसी क़द्र इस बेटे की भी ज़रूरत है और जिस क़द्र इस्लाम का हाल इन बुज़ुर्गों से वाबस्ता है उसी क़द्र इस्लाम का मुस्तक़बिल इस कमसिन बेटे से वाबस्ता है, और ये सारे हक़ इस एक मरकज़ी नुक़्ते की वज़ाहत कर रहे हैं कि हुसैन[अ॰] का क़यास आम इन्सानों पर जाएज़ नहीं है और हुसैन[अ॰] इस ख़ुसूसियत के हामिल हैं कि उन्हें रसूलुल्लाह[स॰] का बेटा क़रार दिया गया है कि वह मुरसले आज़म[स॰] के नवासे हैं और इस ख़ुसूसियत का काएनात में इनके भाई के अलावा कोई इनका शरीक नहीं है।

रसूले अकरम[स॰] ने उम्मत के बेटों से बड़ी मुहब्बत की है। सहाबए केराम की औलाद को बड़ी शफ़क़त व इनायत की निगाह से देखा है, अपने को सारी उम्मत का बाप कहा है। लेकिन इतनी बड़ी उम्मत में से किसी एक को भी *"अबनाअना"* की मंज़िल में मुबाहले के मैदान में नहीं ले गये हैं जो इस बात की वाज़ेह दलील है कि अख़लाक़ी एतेबार से या इताअत के फ़र्ज़ के एतेबार से उम्मत को औलाद बना लेना और है और मअ्नवीयत, रूहानियत, कमालात से किसी का *"अबनाअना"* में शामिल हो जाना और है। यह अकेले इमाम हसन[अ॰] और इमाम हुसैन[अ॰] का इम्तियाज़ है जिसमें सारी उम्मत में इनका कोई शरीक नहीं है। इमाम हुसैन[अ॰] शहज़ादे हैं और बेशक शहज़ादे हैं। लेकिन रसूले अकरम[स॰] के शहज़ादे हैं और इनके मुक़ाबले में आने वाला रसूले अकरम[स॰] के मुक़ाबले में आने वाला है जिसे किसी तरह से भी मुसलमान नहीं कहा जा सकता है।

हज़रत अली[अ॰] व हज़रत फ़ातिमा[अ॰] का बेटा होना और ऐसा बेटा होना जिसकी वेरासत में बाप का जेहाद और माँ का ईसार शामिल हो और जिसने शुरूआती दौर ही से अपने

माँ–बाप के किरदार का मुकम्मल मुशाहेदा किया हो, और इन्सानी निगाह से नहीं इरफ़ानी, ईमानी, और मन्सबी निगाह से मुशाहेदा किया हो उसकी अज़मत किरदार की बेहतरीन दलील है कि ऐसे माहौल में परवरिश पाने वाला, ऐसे किरदारों का वारिस और ऐसे हालात का देखने वाला आम इन्सान भी अच्छे ख़ासे किरदार का हामिल हो सकता है चेजाएकि वह इन्सान जिसे पहले दिन से इलाही मन्सब का हामिल बनाकर दुनिया में भेजा गया हो, और जिसकी तरबियत इस्लाम की आग़ोश में हुई हो, जिसकी रेज़ाअत ईमान के शीर से मुकम्मल हुई हो, और जिसने दर्सगाहे अलामुलग़यूब से उलूम व कमालात हासिल किये हों और शुरू ही से बुज़ुर्गों के साथ मुख़्तलिफ़ मुजाहिदात में शरीक रहा हो।

हज़रत अबूतालिब[अ०] का पोता और वारिस होना भी एक मुकम्मल तारीख़ की निशानदेही करता है जिसमें ईसार, क़ुर्बानी, जेहाद, दीन की हिफ़ाज़त, नामूसे रसूल[स०] की हिफ़ाज़त जैसे जज़्बात पाये जाते हैं और जिस तारीख़ में अपने बच्चों का फ़ाक़ा गवारा है ख़ुदा के रसूल[स०] की भूख गवारा नहीं है। अपने बच्चों की क़ुर्बानी गवारा है हबीबे किबरिया की क़ुर्बानी गवारा नहीं है।

इमाम हुसैन[अ०] एक ऐसे ही ख़ानदान के चश्मो चराग़ थे और एक ऐसे ही मुक़द्दस और पाकीज़ा माहौल की एक फ़र्द थे। इमाम हुसैन[अ०] के हालात, मुआमलात, अख़लाक़ियात, आदाब, ख़यालात, रूजहानात का क़यास दुनिया के दूसरे इन्सानों पर नहीं हो सकता है, लेहाज़ा इमाम हुसैन[अ०] के जेहाद का मवाज़ना भी दुनिया की किसी जंग से नहीं किया जा सकता है।

दूसरा मुक़दमा——यज़ीद

इमाम हुसैन[अ०] की शख़्सीयत व इरफ़ान के बाद यह भी देखना ज़रूरी है कि कर्बला के वाक़िए के सारे ज़ुल्मों के *''ज़िम्मेदारे वाक़ई'* यज़ीद का किरदार किया है और उसे

विरासत में कौन से जज़्बात व ख़यालात मिले हैं और उसने ज़ाती तौर पर किन सलाहियतों की तहसील की है।

यज़ीद ख़ानदानी एतेबार से उस दादा अबू सुफ़ियान का पोता है जिसने हर मारकए इस्लाम व कुफ़ में इस्लाम के ख़िलाफ़ लश्कर की तरतीब व तनज़ीम या क़यादत का फ़र्ज़ अन्जाम दिया है। जिसके "इस्लाम के कमाल" का यह आलम था कि उसमान बिन अफ़्फ़ान की ख़िलाफ़त के बाद अपने चहेते ख़ानदान के बेटे को मुबारकबाद देने के लिए आया तो हालात को साज़गार देखकर इस "*अज़ीम अक़ीदे*" का एलान किया कि अब यह ख़िलाफ़त तुम्हारे हाथ में आ गयी है इसे गेंद की तरह नचाओ और इसका मरकज़ व महवर बनी उमय्यः को क़रार दो, जन्नत व जहन्नम के ख़यालात को ज़हन से निकाल दो, उनकी कोई हक़ीक़त नहीं है, दुनिया यही है और दुनिया की राहत यही ख़िलाफ़ते इस्लामिया है।

यज़ीद की दादी – हिन्दः जिगरख़ारा है जिसने ओहद् के मैदान में सय्यदुश्शोहदा हज़रत हमज़ः के कलेजे को निकाल कर चबाने की कोशिश की थी और इस तरह एक अज़ीम इस्लाम के मुजाहिद की तौहीन और बेहुरमती में कोई दक़ीक़ः उठा नहीं रखा था।

तारीख़ के ये दोनों मन्ज़र याद रखने के क़ाबिल हैं कि एक तरफ़ रसूले अकरम[स०] इस बात पर आँसू बहा रहे हैं कि हज़रत हमज़ः की लाश पर रोने वाली औरतों का मजमा नहीं है और दूसरी तरफ़ हिन्दः जश्न मना रही है कि लाश के टुकड़े जमा किये गये और उनके कलेजे को मुँह में लेकर अपनी देरीना[1] तमन्ना पूरी की गयी और गोया इस्लाम की तहरीक से बदला ले लिया गया।

यज़ीद का बाप – मुआवियः है जिसे इस्लाम के एक नामवर[2] हुक्मुराँ ने "*किसरल अरब*" का लक़ब दिया था और जिसकी ख़िलाफ़त हर मकतबे ख़याल में मुलूकियत और

1. पुराना, क़दीम, 2. मशहूर

शहंशाही ख़याल की जाती है और जिसके बारे में ख़ुद रसूले अकरम[स०] ने फ़रमा दिया कि ख़िलाफ़त के बाद बदतरीन मुलूकियत का दौर आने वाला है जिसमें किसी इन्सान की जान–माल और आबरू महफ़ूज़ न रहेगी।

मुआवियः फ़त्हे मक्का में मुसलमान ज़रूर हो गया था लेकिन उस इस्लाम की हक़ीक़त रसूले अकरम[स०] के उस फ़िक़्रे से वाज़ेह होती है कि आपने ऐसे तमाम लोगों को आज़ाद किये हुए ग़ुलाम कहकर माफ़ी दी थी और यह एक सनद है कि उनकी गिनती शरीफ़ों में नहीं है, आज़ाद किये हुए लोगों में है। और इसीलिए रसूलुल्लाह[स०] के ख़ानदान वालों ने मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर यज़ीद और मुआवियः के बारे में इस लफ़्ज़ का इस्तेमाल करके उन्हें उनकी हक़ीक़त से बाख़बर किया है।

मुआवियः का सिफ़्फ़ीन के मैदान में नफ़्से रसूल[स०] से मुक़ाबला करना और मौक़ा पाते ही अली[अ०] के लश्कर के लिए पानी बन्द कर देना, रसूलुल्लाह[स०] के साथियों को क़त्ल करा देना, पहले ख़लीफ़ा के बेटे की लाश की बेहुरमती करना, तीसरे ख़लीफ़ा की किसी तरह की मदद न करना और मदीने के बाहर लश्कर को रोक कर उनके क़त्ल का इन्तेज़ार करना और उनके लिए एक पानी की मश्क का भी फ़राहम न करना इस बात की दलील है कि यह कुफ़्र व शिर्क का वह बक़ीयतुस्सलफ़[1] है जिसके दिल में किसी की हमदर्दी नहीं है और न यह मकतबे ख़िलाफ़त की अहम्मीयत का क़ाएल है और न मकतबे इमामत की। और खुली हुई बात है कि जो शख़्स अपने ख़ानदान के ख़लीफ़ा का लावारिसी के आलम में भूखा–प्यासा क़त्ल हो जाना गवारा कर सकता है और ख़ुद अपने ही ख़ानदान के चश्मो चराग़ पर रहम न करता हो वह दुनिया के किसी इन्सान पर क्या रहम कर सकता है और उसके बेटे से किस तरह की शराफ़त की उम्मीद की जा सकती है ?

1. बुज़ुर्गों का जानेशीन

उसके बरख़िलाफ़ तारीख़ में हज़रत अली[अ०] का किरदार भी है जिन्होंने न सिफ़्फ़ीन के मैदान में पानी बन्द करना गवारा किया और न तीसरे ख़लीफ़ा को महल के अन्दर बग़ैर पानी के रहने दिया। अबूतालिब[अ०] के बेटे की उस शराफ़त व नजाबत का क़यास अबू सुफ़ियान के बेटे की उस ज़िल्लत व ख़बासत पर किया जाये तो यह तारीख़ का अज़ीम तरीन ज़ुल्म है जिसकी फ़रियाद ख़ुद हज़रत अली[अ०] ने भी की है कि मुझे इतना गिराया गया, इतना गिराया गया कि अब मेरे नाम के साथ मुआवियः का नाम लिया जाने लगा है।

यज़ीद – की माँ मैसून थी जो ईसाई ख़ानदान की एक औरत थी और जिसने शुरूआती दौर में यज़ीद को अपने साथ जंगल व बियाबान में रखा था और वहीं ईसाई उसूल व क़ानून के मुताबिक़ तरबियत दी थी और नेफ़ाक़ पर ईसाईयत का रंग चढ़ाकर करेले को नीम चढ़ा बनाने का काम अंजाम दिया था।

ईसाईयत ने इस्लाम के ख़िलाफ़ जो साज़िशें की हैं उनका एक हिस्सा यज़ीद की तरबियत भी थी। इसमें कोई शक नहीं है कि जिस तरह की हार ईसाईयत को मुबाहले के मैदान में हुई थी उस तरह की हार कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन और यहूदियों को भी नहीं हुई थी। कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन को यह इतमीनान तो था कि.... *"मुक़ाबला तो दिले नातवाँ ने ख़ूब किया"* और फिर हार के बाद भी हमने हार का एतेराफ़ नहीं किया। लेकिन ईसाईयत के दिल में तो यह एक नासूर था कि हम ऐसे मैदान में आ गये जहाँ मुक़ाबला भी मुमकिन न था और फिर हमें ज़िल्लत आमेज़ शिकस्त का एतेराफ़ भी करना पड़ा लेहाज़ा जिस क़ीमत पर मुमकिन हो उन पाँच लोगों से बदला ले लिया जाये जिन्होंने मुबाहले का मैदान सर किया है और लअ्नत के हरबे से हमारी क़ौम को हार दी है। चुनान्चे तारीख़ के यह दो मुसल्लेमात तवज्जोह के क़ाबिल हैं कि मुआवियः के दरबार में एक ईसाई तबीब था जिसका काम क़ातिल का ज़ह्र तैयार करना था और

यही ज़ह्र इब्ने मुलजिम की तलवार में भी देखा गया है और जअदः के पानी में भी। यानी मुआवियः ने इस ज़ह्र के ज़रीए मुबाहले की दो अज़ीम शख़्सीयतों का क़त्ल किया है और ईसाईयत को दो अज़ीम हस्तियों से बदला लेने का मौक़ा हासिल किया है अब एक इमाम हुसैन^अ० की हस्ती बाक़ी थी और ईसाईयत को उनसे बदला लेना था, चुनान्चे मैसून को मुआवियः के घर में दाख़िल किया गया और जब यज़ीद पैदा हो गया तो उसे अपने माहौल में रखकर पाला गया ताकि एक ऐसी "*शख़्सीयत*" तैयार की जाये जिसके दिल में इस्लाम से कोई हमदर्दी न हो और वह मुबाहले के मुजाहिदों की आख़िरी फ़र्द से भी ईसाईयत की हार का बदला ले ले।

इमाम हुसैन^अ० इस्लाम के दुश्मनों की निगाह में दोहरे बदले का मरकज़ थे। एक तरफ़ यज़ीद अपने बाप–दादा की लड़ाईयों का बदला लेना चाहता था और उसका इरादा था कि इमाम हुसैन^अ० के ज़रीए बद्र की जंग में क़त्ल होने वालों का बदला ले लिया जाये ओर हज़रत अली^अ० के मुजाहिदात का बदला हो जाये इसलिये जब इमाम हुसैन^अ० ने यज़ीद के लश्कर से ख़ेताब करके सवाल किया कि आख़िर मेरा ख़ून क्यों बहाया जा रहा है ? क्या मैंने दीन बदला है ? शरीअत में कोई फेरबदल किया है ? अल्लाह के अहकाम में कोई तबदीली की है ? तो सबने एक साथ जवाब दिया कि हमारे दिल में आपके बाप अली^अ० की जलन है और हम उसका बदला लेना चाहते हैं। और फिर ख़ुद यज़ीद ने भी अपने दरबार में फ़त्ह व कामरानी के नशे में डूबकर कहा था कि काश हमारे बद्र के बुज़ुर्ग ज़िन्दा होते और यह मन्ज़र देखते कि किस तरह उनके ख़ून का बदला लिया जा रहा है।

कर्बला का वाक़िआ इमाम हुसैन^अ० की तरफ़ से इस्लाम की हिफ़ाज़त का इन्तेज़ाम था तो यज़ीद की तरफ़ से कुफ़्र की हार का बदला। कर्बला के नतीजे का फ़ैसला इस तरह आसान

है कि अगर यज़ीद का कुफ़ बाक़ी रह गया तो बदला कामियाब हो गया और अगर इमाम हुसैन[अ०] का बचाया हुआ इस्लाम बाक़ी रह गया तो इन्तेज़ाम कामियाब हुआ और बदला दोबारा हार गया।

दूसरा मस्अला यह भी था कि ईसाईयत अपनी हार का बदला लेना चाहती थी और इसके लिए मैसूनः को ज़रीआ बनाया गया था। इमाम हुसैन[अ०] ने दोनों तरह के बदले का मुक़ाबला किया और यह वाज़ेह कर दिया कि यज़ीद दो तरफ़ से कुफ़्र का वारिस है, बद्र के एतेबार से मक्के के मुश्रिकीन का वारिस है, और मुबाहले के एतेबार से नसारा नजरान का वारिस है। और मैं अकेला बद्र के एतेबार से मुहम्मद मुस्तफ़ा[स०] और अलीये मुर्तुज़ा[अ०] का वारिस हूँ और मुबाहले के एतेबार से पंजतन की जान और ईसा रूहुल्लाह का वारिस हूँ जिन्होंने गहवारे ही में एलान कर दिया था कि मैं ख़ुदा का बन्दा हूँ, ख़ुदा का बेटा नहीं हूँ।

यज़ीद – अपनी ज़ात ख़ुद यज़ीद था, जिसका किरदार तो किरदार उसका नाम भी अहले नज़र व अदब की निगाह में दाख़िल दुशनाम है।

यज़ीद की *"शख़्सीयत व हैसियत"* आलमे इस्लाम में कभी ज़ेरे बहस नहीं रही है। अलबत्ता उसका इस्लाम व ईमान हर दौर में ज़ेरे बहस रहा है और उससे बालातर यह बहस रही है कि वह लअ्नत के क़ाबिल है या नहीं। यानी यह बात तक़रीबन मुसल्लेमात में है जिसका इक़रार हर ग़ैर मुतअस्सिब आलिम ने किया है कि यज़ीद का इस्लाम वाक़ई इस्लाम नहीं था और उसका किरदार वाक़ेअन इस क़ाबिल था कि उस पर लअ्नत की जाये।

अल्लामा बज़रन्जी ने किताबुल अशाअः में और इब्ने हिजर ने सवाइक़ में नक़्ल किया है कि अहमद बिन हम्बल के बेटे अब्दुल्लाह ने अपने बाप से यज़ीद पर लअ्नत करने के बारे

में पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि जिस पर ख़ुदा ने लअ्नत की है उस पर किस तरह लअ्नत न की जाये और उसके बाद कुर्आन मजीद की उस आयत का हवाला दिया जहाँ ज़मीन पर फ़साद करने वालों को मलऊन क़रार दिया गया है।

इब्ने ख़ल्लदून का कहना है कि क़ाज़ी अबूबक्र बिन अरबिल मालकी ने अपनी किताब *"अल-अवासिम वल-क़वासिम"* में यह कहकर कि हुसैन[अ०] अपने दादा की तलवार से क़त्ल हुए हैं सख़्त ग़लती की है। यज़ीद हरगिज़ इस्लामी हाकिम न था। इस्लामी हुकूमत के लिए अदालत ज़रूरी है और हुसैन[अ०] से बालातर कोई इन्साफ़ करने वाला न था। इसके बाद मुक़द्दमए तारीख़ के पेज 254 पर इस हक़ीक़त का भी ज़िक्र किया है कि उलमाए इस्लाम यज़ीद के फ़िस्क़ पर इत्तेफ़ाक़ रखते हैं और फ़ासिक़ ऐसा इस्लामी हाकिम नहीं हो सकता कि इसके ख़िलाफ़ एक़दाम जाएज़ न हो। सहाबए केराम और ताबेईन की ख़ामोशी यज़ीद के किरदार से रज़ामन्दी की बिना पर न था बल्कि वह खूँरेज़ी को पसन्द न करते थे इसलिए यज़ीद की मदद को भी जायज़ नहीं क़रार देते थे।

इब्ने मुफ़्लः हम्बली का बयान है कि इब्ने अक़ील और इब्ने जौज़ी की निगाह में ग़ैर आदिल हाकिम के ख़िलाफ़ क़याम जाएज़ है जिस तरह इमाम हुसैन[अ०] ने यज़ीद के ख़िलाफ़ क़याम क़याम किया है। यज़ीद को अगर इब्तेदा में हाकिम मान भी लिया जाये तो हुसैन[अ०] के क़त्ल, हत्ता कि हुरमते काबा और मदीना ताराज होने के बाद तो यह हुकूमत खुद बखुद ख़त्म हो जाती है।

अल्लामा तुफ़ताज़ानी ने शर्हे अक़ाएद नसफ़ियः में लिखा है कि यज़ीद का हुसैन[अ०] के क़त्ल से राज़ी होना और उस पर ख़ुशी मनाना मुसल्लेमात में है और ऐसा इन्सान ईमान वाला नहीं हो सकता है बल्कि लअ्नत के क़ाबिल है और उस पर और उसके अंसार व अअ्वान पर ख़ुदा की लअ्नत है।

इब्ने हज़्म ने *"अलमहली"* जिल्द–11 पेज–98 में लिखा है कि यज़ीद बिन मुआवियः का क़याम सिर्फ़ दुनिया के लिये था, उसके आमाल की कोई तावील नहीं हो सकती है। वह सिर्फ़ ज़ालिम था। कुछ उलमा की तरफ़ से इसके आमाल की तावील सरासर ज़ियादती है।

हाफ़िज़ का बयान है कि यज़ीद के बदतरीन जुर्म इमाम हुसैन[अ०] का क़त्ल, असीरी बिनाते रसूल[अ०], इमाम हुसैन[अ०] के सर की तौहीन, ग़ारतगरी मदीना, हत्ता कि हुरमते काबा वह आमाल हैं जो क़सावते क़ल्ब, आले रसूल[स०] से दुश्मनी, बुग्ज़ व अदावत व कीना परवरी और नेफ़ाक़ व बेईमानी की अलामत हैं और फ़ासिक़ मलऊन होता है बल्कि जो मलऊन पर लअ्नत करने से मना करे वह ख़ुद भी मलऊन है। (रसाएल जाहुज़ पेज–298)

बुरहान हलबी ने उस्ताज़ुश्शेख़ मुहम्मद बकरी के बारे में नक़्ल किया है कि वह और उनके वालिद दोनों यज़ीद पर लअ्नत किया करते थे और कहते थे कि ख़ुदा उसे जहन्नम के पस्त तरीन दरजात में जगह दे।

ज़हबी ने सैरे अअ्लामुन नबला में बयान किया है कि यज़ीद बिन मुआवियः नासिबी, बद्सरश्त, बद्किरदार, शराबी और बदकार था। उसने अपनी हुकूमत की शुरूआत हुसैन[अ०] के क़त्ल से की है और ख़त्म वाक़िअए हर्रा पर किया है।

सिब्ते बिन जूज़ी से नक़्ल किया गया है कि इब्ने जूज़ी से यज़ीद पर लअ्नत के बारे में सवाल किया गया तो उन्होंने फ़रमाया कि इमाम अहमद ने उस पर लअ्नत को जाएज़ क़रार दिया है और हम भी यज़ीद को पसन्द नहीं करते हैं कि उसके आमाल बद्तरीन आमाल थे। अब अगर लोग इस नापसन्दीदगी पर राज़ी हैं तो ठीक वरना हम भी सरीहन लअ्नत करते। (मरअतुज़्ज़मान जिल्द–8 पेज–496)

इन तमाम बयानात से साफ़ वाज़ेह हो जाता है कि इन्साफ़ पसन्द उलेमा और लिखने वालों ने हर दौर में यज़ीद को काफ़िर या मुनाफ़िक़ या लअ्नत के क़ाबिल माना है और कोई उसके आमाल, किरदार से इत्तेफ़ाक़ नहीं कर सका है।

इस दौर में कुछ लिखने वालों ने अगर यज़ीद की तरफ़दारी की है तो उसकी वजह यह क़रार दी है कि हुसैन[अ०] का क़त्ल वग़ैरह जैसे आमाल का यज़ीद से कोई तअल्लुक़ नहीं था। यह सब इब्ने ज़ियाद और इब्ने सअ्द के आमाल थे। यज़ीद इन आमाल से बरी था वरना अगर यह तय हो जाये कि इन सारे आमाल का ज़िम्मेदार यज़ीद ही है तो बेशक ऐसा इन्सान लअ्नत के क़ाबिल होता है।

सिर्फ़ कुछ बेईमान और ख़बीस नफ़्स के लिखने वाले ऐसे हैं जिन्होंने इमाम हुसैन[अ०] को बाग़ी या ख़ारजी क़रार दिया है और यज़ीद की हुकूमत को जाएज़ और सही क़रार दिया है और यह वही मअ्नवी यज़ीद की नस्ल है जिसने कल यज़ीद को अमीरूल मोमिनीन माना था और इमाम हुसैन[अ०] को बाग़ी और ख़ारजी कहकर उनका ख़ून बहाने की तदबीर की थी। *"लअ्नतुल्लाहि अलैहिम अजमईन"*।

तीसरा मुक़दमा—हलाकत और शहादत

कर्बला के वाक़िए के सिलसिले में एक सवाल यह भी उठाया जाता है कि इमाम हुसैन[अ०] ने जान बूझकर असहाब की मुख़्तसर जमाअत के साथ कर्बला का रूख़ किया। यज़ीद की बेशुमार फ़ौज से मुक़ाबला किया। यज़ीद की बैअत से इनकार किया और यह तमाम बातें क़त्ल के इक़दाम के मुतारादिफ़[1] हैं जिसे इस्लाम ने नाजाएज़ क़रार दिया है। इमाम हुसैन[अ०] को हवा का रूख़ देखना चाहिए था और उसी के मुताबिक़ अमल करना चाहिए था। हवा के रूख़ के मुताबिक़ अमल किया होता तो इतना बड़ा सानेहा न होता और इतने लोगों का ख़ून न होता,

1. हम माना लफ्ज़

बल्कि साहेबे तोहफ़ए कर्बला ने वाज़ेह लफ़्ज़ों में यह एतेराज़ किया है कि इमाम हुसैन[अ०] की शहादत (मआज़ल्लाह) उनकी नाआक़िबत अन्देशी का नतीजा थी वरना वह अपनी जान बचा सकते थे और जो इन्सान जान बूझकर मौत के मुँह में चला जाये उसे किसी तरह मज़लूम कहा जा सकता है ?

इस सवाल और एतेराज़ के तजज़िए के लिए कुछ मरहलों पर ग़ौर करना होगा :

पहला मरहला – यह है कि इमाम हुसैन[अ०] के लिए जान बचाना मुमकिन था और अगर मुमकिन था तो उसका तरीक़ा क्या था। इस मक़ाम पर कुछ तारीख़ी हादसों से नावाक़िफ़ लोग यह कह देते हैं कि इमाम हुसैन[अ०] यज़ीद की बैअत कर लेते तो उनकी ज़िन्दगी बच सकती थी। हालाँकि यह बात तारीख़ी हक़ाइक़ के बिलकुल ख़िलाफ़ है। इमाम हुसैन[अ०] ने उस वक़्त तक कोई ऐसा क़दम नहीं उठाया था जिस क़दम से यज़ीद की ख़िलाफ़त को ख़तरा होता। यज़ीद की ख़िलाफ़त को ख़तरा इमाम हुसैन[अ०] के वुजूद से था और उसे यह अन्देशा था कि यह आँख बन्द करके मेरे आमाल की ताईद नहीं कर सकते और किसी क़ीमत पर मेरे अहकाम पर अमल नहीं कर सकते और इस तरह उम्मत में यह शऊर ज़रूर बेदार होगा कि यज़ीद में कोई ऐब, कोई नक़्स और कोई ख़राबी है जिसकी बिना पर रसूलुल्लाह[स०] के बेटे उसके अहकाम को क़बूल नहीं करते और इस तरह मेरी हुकूमत को इस्तहकाम हासिल नहीं हो सकता लेहाज़ा उनके वुजूद का ख़ातिमा होना चाहिए। बैअत की माँग को यज़ीद ने बेहतरीन बहाना क़रार दिया था कि यही वह मस्अला है जहाँ इमाम हुसैन[अ०] इत्तेफ़ाक़ न कर सकेंगे वरना बैअत के बजाय सुल्ह की माँग होगी तो वह इत्तेफ़ाक़ कर सकते हैं कि उसे मालूम था कि आले मुहम्मद[स०] सुल्ह के लिए तैयार हो जाते हैं। उसके सामने इस घराने की पूरी तारीख़ थी कि मेरे दादा ने आज़माया तो रसूले अकरम[स०] सुल्ह के लिए तैयार हो

गये। मेरे बाप में तज्रबा किया था तो हसने मुज्तबा[अ०] सुल्ह के लिए आमादा हो गये थे। अब मैं भी सुल्ह के लिए तहरीक करूँगा तो हुसैन[अ०] आमादा हो जायेंगे लेहाज़ा कोई ऐसी माँग करना चाहिए जिससे इमाम हुसैन[अ०] किसी क़ीमत पर इत्तेफ़ाक़ न कर सकें। उसे यह भी मालूम था कि इनके बाप के गले में रस्सी डाली गयी। उन्हें खींचकर घर से मस्जिद तक लाया गया। तरह–तरह की अज़ीयतें पहुँचायी गयीं लेकिन उन्होंने बैअत नहीं की जबकि सुल्ह के मक़ाम में 25 साल तक ख़ामोश रहे और वक़्त की हुकूमत से मुक़ाबला नहीं किया लेहाज़ा आले मुहम्मद[स०] के सामने सुल्ह की माँग के बजाय बैअत की माँग पेश करना चाहिए और उसके ज़रीए उनकी ज़िन्दगी का ख़ातिमा कर देना चाहिए जैसा कि ख़ुद इमाम हुसैन[अ०] ने अपने बयानात में इशारा किया था कि मैं किसी जानवर के सूराख़ में भी पनाह ले लूँ तो यह मुझे निकाल कर क़त्ल कर देंगे, इन्हें मेरी ज़िन्दगी गवारा नहीं है और यह मेरे वुजूद को ख़तरा महसूस कर रहे हैं।

दूसरी बात यह भी है कि अगर यह फ़र्ज़ कर लिया जाये कि बैअत से जान बच सकती थी तो बुनियादी सवाल यह है कि क्या बैअत इमाम हुसैन[अ०] के लिए मुमकिन थी और क्या इस्लाम हर रास्ते से नफ़्स की हिफ़ाज़त की इजाज़त देता है चाहे उसे ख़ुद उसकी बर्बादी का सामान फ़राहम हो जाये ?

इस सवाल का तजज़िया[1] उलमा व मुफ़क्किरीन ने दो रास्तों से किया है। इमाम हुसैन[अ०] के ज़ाती कमालात और नसबी करामात वग़ैरह के एतेबार से – कि क्या यह ख़ुसूसियात इस बात की इजाज़त देते हैं कि इमाम हुसैन[अ०] बैअत कर लें। जिसके बाप ने एक लम्हे के लिए यज़ीद से ग़नीमत हुक्काम की बैअत नहीं की है, जिसके भाई ने एक दिन के लिए यज़ीद के बाप की बैअत का इरादा नहीं किया है वह यज़ीद जैसे बद्तरीन इन्सान की बैअत कर सकता है ? हरगिज़ नहीं ! इस नुक्ते का एहसास इब्ने सअ्द को भी था कि उसने अपने हाकिम को आख़िरी

1. तक़सीम करना, पारा–पारा करना

इत्तेलानामे में तहरीर किया था कि हुसैन[अ०] बैअत नहीं करेंगे। उनके पहलू में उनके बाप का दिल है। यह इस बातकी तरफ़ इशारा था कि इमाम हुसैन[अ०] के नसबी खुसूसियात उन्हें बैअत करने की इजाज़त नहीं देते हैं।

दूसरा रास्ता शरीअत के अहकाम व क़ानूनों का है कि क्या इस्लामी क़ानून की रौशनी में ऐसे इन्सान की बैअत जाएज़ थी कि जो मुहम्मद[स०] के हराम को हलाल, और हलाल को हराम बना दे। अल्लाह के बनाये हुए क़ानून का मज़ाक़ उड़ाये, दरबार में शराब पिये, सौतेली माँ–बहन से ज़िना को जाएज़ क़रार दे और भरे दरबार में यह एलान करे कि दीन व आईन फ़क़त बनी हाशिम का खेल है वरना न कोई 'वही' आयी है और न ख़बर नाज़िल हुई है।

कुर्आन व सुन्नत में कोई ऐसी दलील नहीं है जो आम मुसलमान के लिए भी उसकी बैअत को जाएज़ क़रार दे सके। बैअत के क़वाएद व क़ानून मुअय्यन हैं उनमें फ़ासिक़ व फ़ाजिर की इताअत का भी इमकान नहीं है बैअत तो बहुत बड़ी बात है। लेहाज़ा इस नुक्तए नज़र से भी यज़ीद की बैअत किसी आम इन्सान के लिए भी जायज़ नहीं है। इमाम हुसैन[अ०] का मरतबा तो उन सबसे बहुत बालातर है।

लेहाज़ा यह ख़याल कि इमाम हुसैन[अ०] बैअत के ज़रीए अपनी ज़िन्दगी की हिफ़ाज़त कर सकते थे तारीख़ और शरीअत दोनों से बेख़बरी का नतीजा है। न तारीख़ इस बात की गवाही देती है कि यज़ीद का हक़ीक़ी इरादा सिर्फ़ बैअत की माँग थी और वह बैअत के बाद अज़ीयत व आज़ार से दस्तबरदार हो सकता था और न इस्लामी शरीअत के क़ानूनों के एतेबार से इमाम हुसैन[अ०] के लिये यह जाएज़ था कि वह यज़ीद जैसे फ़ासिक़ व फ़ाजिर इन्सान की बैअत कर लेते। इमाम हुसैन[अ०] तो किसी अज़ीम तरीन इन्सान की भी बैअत नहीं कर सकते थे कि वह खुद अपने दौर के हर इन्सान से अज़ीमतर थे और उनसे

बालातर कोई नहीं था कि वह उसकी इताअत या बैअत करते और फिर इमाम हुसैन[अ०] का हाथ अल्लाह ने बैअत लेने के लिए बनाया था बैअत करने के लिए नहीं बनाया था। उनका हाथ यदुल्लाह था और यदुल्लाह तमाम हाथों से बालातर होता है वह किसी के हाथ के नीचे नहीं आ सकता है।

दूसरा मरहला – यह है कि हलाकत के मानी क्या हैं और क्या इमाम हुसैन[अ०] के इक़दाम को हलाकत का नाम दिया जा सकता है। इसका जवाब तमाम उलमाए अख़लाक़ियात ने दिया है कि हलाकत बिला वजह जान को बर्बाद कर देने या अपनी हैसियत से कमतर पर जान क़ुर्बान कर देने का नाम है और इमाम हुसैन[अ०] ख़ुदा की राह में क़ुर्बानी दे रहे थे जिससे बालातर कोई चीज़ नहीं है लेहाज़ा उनके जेहाद के क़दम को हरगिज़ हलाकत का नाम नहीं दिया जा सकता है। दूसरी लफ़्ज़ों में यूँ कहा जाये कि हलाकत बर्बादी का नाम है और बर्बादी के मानी यह हैं कि चीज़ बर्बाद हो जाये और उसका कोई नतीजा बरामद न हो। बंजर ज़मीन में दाना डाल देना उसकी बर्बादी है। लेकिन ज़रखेज़ ज़मीन में बीज डाल देना उसकी बर्बादी नहीं है। और दोनों का बुनियादी फ़र्क़ यह है कि पहली सूरत में दाना बेनतीजा रह जाता है और दूसरी सूरत में एक दाने से सात बालियाँ पैदा होती हैं और हर बाली में सौ–सौ दाने पैदा होते हैं, और इस तरह दाना कारामद हो जाता है बर्बाद नहीं होता। इस्लाम में जेहाद और शहादत का क़ानून इसीलिए रखा गया है कि शहादत में ज़िन्दगी बर्बाद नहीं होती बल्कि उसके मुक़ाबले में बेशुमार नतीजे बरामद होते हैं, और वाज़ेह तरीन नतीजा यह बरामद होता है कि इन्सान की आरज़ी ज़िन्दगी ख़त्म हो जाती है और मज़हब को अबदी ज़िन्दगी मिल जाती है और खुली हुई बात है कि मज़हब की ज़िन्दगी इन्सान की ज़िन्दगी से कहीं ज़ियादा क़ीमती है।

इमाम हुसैन[अ०] के एक़दाम की सूरतेहाल भी यही थी कि उन्होंने अल्लाह की मशीय्यत के मुताबिक़ वक़्त, मौक़ा और मक़ाम चुना था जहाँ जान की कुर्बानी बर्बादी नहीं थी बल्कि एक अज़ीमतर और वसीअ्तर ज़िन्दगी का पेशख़ेमा थी। उन्हें मालूम था कि इस कुर्बानी के नतीजे में ज़ुल्म के हौसले पस्त होंगे, मज़लूम को बोलने का मौक़ा मिलेगा, शरीअत में फेर–बदल का रास्ता बन्द हो जायेगा, ख़िलाफ़त के नाम पर मुन्किरात का सिलसिला मौक़ूफ़[1] हो जायेगा। दुनिया वालों को अल्लाह के बनाये हुए क़ानून में दख़ल अन्दाज़ी का मौक़ा न मिलेगा। और जिस माहौल में बड़े–बड़े सहाबाज़ादों को बोलने की ताब नहीं है उस माहौल में एक नाबीना मर्द या नसरानी मर्द भी वक़्त के हाकिम को टोकने का हौसला पैदा कर लेगा और यह हौसला दीन व शरीअत की हिफ़ाज़त के एतेबार से बेहद फ़ायदेमन्द होगा।

इमाम हुसैन[अ०] ने अपनी कुर्बानी इन तमाम मसलेहतों के पेशेनज़र दी है और वह सारे फ़ायदे हासिल कर लिये हैं जो एक शहादत से हासिल किये जा सकते थे इस्लाम को हयाते जावेदानी दे दी है। शरीअत को हिफ़ाज़त फ़राहम कर दिया है, कुर्आन को सरबुलन्द कर दिया है, काबे की अज़मत व करामत को बचा लिया है और दीने मुहम्मदी[स०] को इस्तहकाम व दवाम अता कर दिया है और ऐसे नतीजे ख़ेज़ अमल को हलाकत या बर्बादी नहीं कहा जा सकता है।

तीसरा मरहला – यह है कि क्या इन्सान के लिये तमाम सूरतों में जान, माल, आबरू की हिफ़ाज़त वाजिब है या कुछ हालात में उनकी कुर्बानी भी ज़रूरी है ?

खुली हुई बात है कि इस मस्अले को अक़्ली तौर पर तय किया जाये तो अक़्ल वाज़ेह फ़ैसला देती है कि मक़सद की अज़मत की राह में तीनों को कुर्बान किया जा सकता है और इन्सानी ज़िन्दगी में यह बराबर होता रहता है कि हालात व

1. ठहराया हुआ, वक़्फ़ किया हुआ

मसलेहतों के तहत माल भी कुर्बान किया जाता है और बुलन्द तरीन मक़सदों के लिए ज़ाहिरी इज़्ज़त व वजाहत भी कुर्बान की जाती है और वाक़ई मफ़हूम व इक़दार के लिए जान की बाज़ी भी लगा दी जाती है। कौन अक़्लमन्द है जो इस हक़ीक़त से इनकार कर देगा और कौन ऐसा शऊर वाला है जो अपनी ज़िन्दगी में इस क़ानून पर अमल दरामद नहीं करता है।

शरई एतेबार से भी जान व माल व आबरू तीनों रब्बुल आलमीन की अतीयः और उसकी अमानतें हैं, लेहाज़ा उन्हें दूसरे की राह में ख़र्च करना नाजायज़ हो तो ख़ुद माल वाले ही अगर मख़सूस ख़र्च करने की माँग कर दे तो ख़र्च कर देना हलाकत नहीं है उससे मुँह मोड़ना हलाकत है। ख़ासाने ख़ुदा ने हमेशा इसी नुक्ते को पेशे नज़र रखा है कि जान, जाने आफ़रीं की अमानत है, माल मालिके मुल्क की अमानत है। आबरू रब्बुल इज़्ज़त की अमानत है। लेहाज़ा वह जिस तरह रखना चाहेगा उसी तरह ख़र्च कर देंगे इसमें हमारा कोई दख़्ल नहीं है और न हमारी मर्ज़ी की कोई क़द्र व क़ीमत है।

और जब यह बात वाज़ेह हो गयी कि अक़्ल व शर्‌अ दोनों के एतेबार से कुर्बानी एक ज़रूरत है और कुर्बानी को हलाकत और बर्बादी नहीं कह सकते हैं, तो अब सिर्फ़ इतना वाज़ेह करना होगा कि इमाम हुसैन[अ०] अक़्ल व शर्‌अ दोनों की तरफ़ से इस कुर्बानी के लिये मामूर थे और उन्होंने अक़्ल व शर्‌अ दोनों के क़ानून पर अमल दरामद किया है। और यह मस्‌अला तारीख़ी एतेबार से इन्तेहाई वाज़ेह है कि हालात ने अक़्ली तौर पर वजूब आएद कर दिया था और रसूले अकरम[स०] ने ख़ाब के ज़रीये, शरीअते इस्लाम ने इस्लाम की हिफ़ाज़त की ज़रूरत के ज़रीए इस वजूब का एलान कर दिया था जैसा कि ख़ुद इमाम हुसैन[अ०] ने फ़रमाया कि मैं नाना की उम्मत की इस्लाह, अम्र–बिल–मअ्‌रूफ़ और नही–अनिल–मुनकर के लिये

घर से बाहर निकला हूँ और यह सारे काम इस्लाम में वाजिबात और अहम तरीन शरीअत के फ़रीज़ों में थे।

चौथा मुक़दमा——जीत व हार

दुनिया में जो अक़्ल वाला भी कोई अमल अंजाम देता है उसका कोई न कोई मक़सद ज़रूर होता है और उसी मक़सद के एतेबार से कामियाबी और नाकामयाबी का फ़ैसला होता है। अमल के दौरान पेश आने वाले हालात और कैफ़ियात न कामियाबी की अलामत हैं और न नाकामी की। एक काश्तकार अपने काम की शुरूआत करता है तो सबसे पहले ज़मीन की हालत ख़राब होती है। उसके बाद दाना मिट्टी में मिला दिया जाता है। उसके बाद ज़मीन पर बहने वाला साफ़–सुथरा पानी मिट्टी में जज़्ब हो जाता है उसके बाद पैदावार को सहारा देने वाला कीमियाई मैटीरियल ज़मीन के नीचे गुम हो जाता है तो खेती का काम पूरा होता है जिसमें ज़ाहिरी तबाही और बर्बादी के अलावा कुछ नहीं है। लेकिन जब चार महीने इन्तेज़ार करने के बाद लहलहाता हुआ खेत सामने आ जाता है तो सब यही कहते हैं कि काश्तकार अपने काम में कामियाब है। किसी ने इस कामियाबी पर यह एतेराज़ नहीं किया कि दाना बर्बाद हो गया, पानी जज़्ब हो गया। खाद का पता नहीं चला इसलिये कि कामियाबी का फ़ैसला नतीजे के एतेबार से होता है हालात और मुक़द्दमात के एतेबार से नहीं होता है।

यही हाल ख़ासाने ख़ुदा की ज़िन्दगी का है कि उसमें ज़हमतें, मुसीबतें, आफ़तें सब हैं और हादिसों की ज़ियादती भी है। कोई पत्थरों में दबा दिया गया, कोई आरे से चीर दिया गया, किसी पर कूड़ा फेंक दिया गया, कोई सख़्त तरीन मुसीबतों का शिकार हो गया। लेकिन इन तमाम मुसीबतों व आफ़तों को उनकी नाकामी की अलामत नहीं क़रार दिया गया बल्कि अल्लाह

वालों की फ़ौज को कामियाबी और कामरानी की निशानी क़रार दिया गया है।

दुनिया वालों की निगाह में यही मुसीबतें व परेशानियाँ नाकामी की अलामत हो सकते हैं कि वह ख़िदमात से राहत चाहते हैं, तबलीग़ों से दुनियवी फ़ायदे के चाहने वाले होते हैं। लेकिन अल्लाह वाले इन मुसीबतों को उस वक़्त तक अपनी नाकामी नहीं ख़याल करते जब तक कि एक शख़्स के भी राहेरास्त पर आ जाने का इमकान होता है कि उनका मक़सद इस दुनिया में राहत व आराम तलबी नहीं है। वह ख़ुदा के बन्दों को राहे ख़ुदा पर चलाने और अल्लाह से क़रीब करने की मंज़िल तक पहुँचाने के लिये आये हैं और जब तक यह काम होता रहेगा वह अपने को कामियाब ख़याल करते रहेंगे और अपने ख़याल में हक़ की तरफ़ रहेंगे।

क्या यह तारीख़ की अज़ीम हक़ीक़त नहीं है कि जिस बहादुर इन्सान ने बड़े–बड़े मैदान सर किये, नामावर पहलवानों के गले काटे, एक–एक वार में मरहब व मरकब के दो टुकड़े किये, दो उँगलियों से ख़ैबर के दर को उखाड़ लिया, एक वार से कुल्ले कुफ़्र का ख़ातिमा कर दिया, एक अकेले दम पर सारे लश्कर से मुक़ाबला कर लिया, वह इन तमाम मुजाहिदात व फ़ुतुहात को अपनी कामियाबी के एलान का महल नहीं क़रार देता और जब सर पर इब्ने मुलजिम की तलवार लगती है तो एलान करता है कि........ *"काबे के रब की क़सम! मैं कामियाब हो गया"*।

क्या यह इस बात की अलामत नहीं है कि कामियाबी और नाकामयाबी, राहत व तकलीफ़, इतमीनान व मुसीबत, अमीरी व ग़रीबी, ज़िन्दगी का मज़ा और तल्ख़ कामिए ज़िन्दगानी की ताबेअ् नहीं है। उसका मेअ्यार सिर्फ़ मक़सद का हासिल होना और मक़सद के हासिल होने से महरूम हो जाना है। मक़सद हासिल हो गया तो इन्सान हज़ार मुसीबतों के बावजूद कामियाब

है और मक़सद हासिल न हो सका तो इन्सान लाखों राहतों के बावजूद भी नाकाम है।

इस बुनियाद पर यह फ़ैसला करना आसान है कि कर्बला के मैदान में जीत किसकी हुई और हारा कौन ? दोनों फ़रीक़ैन का मक़सद देखना होगा और फिर मक़सद के हासिल होने व अदम हुसूल का जायज़ा लेना होगा।

तारीख़ इस हक़ीक़त की बेहतरीन गवाह है कि इमाम हुसैन[अ०] की निगाह में दुनिया का कोई आराम न था। उन्होंने मुसीबतों का रास्ता इख़्तियार किया था और बार–बार अपने क़त्ल की पेशगोई कर दी थी, असहाब को भी आज़ाद कर दिया था कि मुसीबतों में साथ नहीं दे सकते तो चले जायें, मुझे दीने मुहम्मद[स०] को मुस्तहकम[1] बनाना है और इस रास्ते में तलवारों को अपना गला भी पेश कर सकता हूँ। ऐसी हालत में उनकी मुसीबत या शहादत को नाकामी की अलामत क़रार देना एक ग़फ़लत या जेहालत व हिमाक़त के अलावा कुछ नहीं है।

उसके बरख़िलाफ़ यज़ीद हुकूमत चाहता था। उसके बाप ने कूफ़े वालों से ख़िताब करके एलान कर दिया था कि मैंने तुम लोगों से नमाज़, रोज़ा और हज व ज़कात के लिये जंग नहीं की है, मैं सिर्फ़ तुम पर हुकूमत करना चाहता हूँ। उसी हुकूमत को बाक़ी रखने के लिये उसने अपने बदतरीन बेटे यज़ीद को अपना जानशीन नामज़द किया था कि यह इक़्तेदार किसी भी सूरत में बनी उमय्यः में रह जाये वरना उसके बेटे की निगाह में दीन व मज़हब सब बनी हाशिम का खेल था।

अब इमाम हुसैन[अ०] और यज़ीद की जंग सिर्फ़ इस मरहले पर थी कि दीन बाक़ी रहे या मिट जाये, रिसालत की हक़ीक़त व वाक़िईयत साबित हो या बनी हाशिम का खेल तमाशा साबित हो जाये। यज़ीद ने सारा ज़ोर सर्फ़ कर दिया कि रिसालत तमाशा बन जाये, दीन मिट जाये और अबू सुफ़ियान के क़ौल के मुताबिक़ यह गेंद बनी उमय्यः की तरफ़ नाचती रहे और इमाम

1. मज़बूत

हुसैन[अ०] का सारा जेहाद इस मक़सद के लिये था कि ख़ुदा का दीन बाक़ी रह जाये, रिसालत का वेक़ार ज़िन्दा रहे, इस्लाम की आबरू बर्बाद न होने पाये, चाहे इस रास्ते में मेरी लाश पामाल हो जाये और मेरा भरा घर उजड़ जाये।

इन हालात में नतीजा बिलकुल सामने है। अगर यज़ीद रिसालत के इनकार में कामियाब हो जाये तो मआज़ल्लाह इमाम हुसैन[अ०] अपने मक़सद में नाकाम हुए लेकिन अगर यज़ीद ख़ुद ही इमाम ज़ैनुल आबिदीन[अ०] के ख़ुत्बे को रोकने के लिये एलान कराये *"अश्हदु अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह"* तो यह अलामत है कि यज़ीद ने हार मान ली और इमाम हुसैन[अ०] ने कर्बला के बाद शाम का मैदान भी फ़त्ह कर लिया।

अगर यज़ीद शराब व बदकारी व अय्यारी को मज़हब में रवा रख सके तो अपने मक़सद में कामियाब है और इमाम हुसैन[अ०] की क़ुर्बानी बर्बाद हो गयी, और अगर यज़ीद की हिमायत करने वाले भी शराब व बदकारी को हराम कह रहे हैं तो यह अलामत है कि इमाम हुसैन[अ०] कामियाब हैं और यज़ीद नाकाम हो गया।

इन हालात में तो उन लोगों को भी अपने नज़रिये का जायज़ा लेना पड़ेगा जो कह रहे थे कि इमाम हुसैन[अ०] ने हवा का रूख़ नहीं पहचाना और इस्लाम की बड़ी–बड़ी शख़्सीयतों का साथ नहीं दिया जिसके नतीजे में क़त्ल हो गये और सारा घर बर्बाद हो गया। यानी यह लिखने वाले इस हक़ीक़त को मानते हैं कि यज़ीद के दौर में तमाम बड़ी शख़्सीयतों का मौक़िफ़[1] इमाम हुसैन[अ०] से बिलकुल अलग था। सब किसी न किसी मसलेहत की बिना पर यज़ीद की बैअत किये हुए थे और उसके आमाल व अफ़आल से रज़ामन्दी का एलान कर रहे थे और इमाम हुसैन[अ०] खुल्लम खुल्ला अपनी मुख़ालेफ़त और बेदारी का इज़हार फ़रमा रहे थे और इस राह में हर तरह की क़ुर्बानी के लिये तैयार थे। तो अब यह फ़ैसला आसान है कि अगर यज़ीद

1. खड़े होने की जगह

का दीन बाक़ी रह गया है और इस्लाम में वह तमाम मुन्किरात जाएज़ रह गये हैं जिन्हें यज़ीद अपने अमल से जाएज़ साबित कर रहा था तो इमाम हुसैन[अ०] ने ज़माने के हालात को न जानने का सबूत दिया है और मआज़ल्लाह धोखा खा गये हैं लेकिन अगर यज़ीद का दीन मिट गया, यज़ीद का मिशन फ़ना हो गया, यज़ीदियत ज़माने में रूसवा हो गयी और वह इस्लाम रह गया जो इस्लाम मुहम्मदी[स०] था और जिसकी ख़ातिर इमाम हुसैन[अ०] कुर्बानी दे रहे थे तो यह मानना पड़ेगा कि यज़ीद हारा। इमाम हुसैन[अ०] जीते और इस फ़त्ह में उनके असहाब व अंसार व अहलेबैत के अलावा किसी का हाथ नहीं था।

या वाज़ेह लफ़्ज़ों में यूँ कहा जाये कि आज जो दीने इस्लाम बाक़ी व ज़िन्दा व पाइन्दा है उसके बाक़ी होने पर न किसी सहाबी का एहसान है न सहाबीज़ादे का, न किसी शख़्सीयत का एहसान है न शख़्सीयत परस्त का। सिर्फ़ अकेले इमाम हुसैन[अ०] की कुर्बानी का असर है कि ख़ुदा का दीन ज़िन्दा व पाइन्दा रह गया और क़यामत तक ज़िन्दा रहेगा।

इमाम हुसैन[अ०] की उसूली कामियाबी के बाद ज़माने के हालात का जायज़ा लिया जाये तो हर दौर के हालात इमाम हुसैन[अ०] की कामियाबी का बबांग दह्ल एलान कर रहे हैं। यज़ीद कामियाब होता तो उसकी कामियाबी के असरात होते। लेकिन न आज उसकी कुर्बानी का निशान है न उसके ज़ाएरीन हैं, न कुछ रूपयों–पैसों के चाहने वालों के अलावा कोई उसका नाम लेवा है, न उसकी बारगाह है न उसका ज़िक्र है, न उसकी राह में फ़िदाकारी है, न उसका परचम है, न उसका कोई नाम व निशान है, और अगर कोई नाम है भी तो दाख़िल व शनाम है।

लेकिन इमाम हुसैन[अ०] आज भी हर जहत से फ़ातेह हैं और हर मुहर्रम उनकी फ़त्ह का एलान करता है। हर घर में अज़ाख़ाना उन्हीं का सजाया जाता है, हर शाहेराह पर परचम उन्हीं का लहराता है, हर महफ़िल में तज़किरा उन्हीं का होता

है, हर प्यासे को पानी उन्हीं के नाम पर पिलाया जाता है, हर इलाही क़ानून और इस्लामी तालीम का चर्चा उन्हीं की मजलिसों में होता है, हर अख़बार उन्हीं का ज़िक्र करता है, हर रिसाला उन्हीं का नम्बर निकालता है। हर मुसलमान उन्हीं को ख़ेराजे अक़ीदत पेश करता है, हर शरीफ़ ग़ैर मुस्लिम उन्हीं की बारगाह में सर झुकाता है, हर लिखने वाला उन्हीं को तारीख़े साज़गार क़रार देता है, हर मुफ़क्किर उन्हीं के जेहाद के फ़लसफ़े को अपनाता है, हर अदीब उन्हीं को सब्र व इस्तेक़लाल की अलामत क़रार देता है, हर इन्क़ेलाबी उन्हीं को हीरो तसलीम करता है, हर मोमिन उन्हीं को अपना सरदार तसलीम करता है, हर हक़ उन्हीं की तरफ़ चक्कर लगाता है, और हर बातिल उन्हीं के नाम से घबराता है, हर सिपाही को उन्हीं के जेहाद से हौसला मिलता है और हर निहत्थे इन्सान के लिये उन्हीं की इस्तेक़लाल[1] की दास्तान हथियार का काम करती है।

ग़रज़ हुसैन[अ०] ग़रीबों का सहारा, इस्लाम का हौसला, मुजाहिदों की ताक़त, शरीअत के पास्बाँ, और मुहम्मदीयत के अदबी निगराँ हैं। हुसैन[अ०] पर हमारे लाखों सलाम !

पाचवाँ मुक़दमा——इमाम हुसैन अ० और शरीअत

मज़हब के उसूल के एतेबार से हर इमाम शरीअत का मुहाफ़िज़ होता है और रिसालत के साथ इमामत की ज़रूरत इसलिये होती है कि जब रिसालत शरीअत की तबलीग़ का काम पूरा कर दे और वहीये तशरीई का सिलसिला मौकूफ़ हो जाये तो कोई ऐसा शख़्स रहे जो उस शरीअत की हिफ़ाज़त करे ताकि यह इस्लामी क़ानून अपनी वाक़ई शक्ल में बाक़ी रहे। ज़ाहिरी शक्ल में शरीअत उम्मत के उलमा के ज़रीए भी बाक़ी रह सकती है। लेकिन अस्ल इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिये बहरहाल इमामत की ज़रूरत है इसलिये कि उम्मत के उलमा

1. मज़बूती

वाक़ई अहकाम से बाख़बर नहीं होते हैं। उनका मुतालेआ लौहे महफ़ूज़ से मुत्अल्लिक़ नहीं होता है, वह किताब व सुन्नत का मुतालेआ करते हैं और बक़द्र फ़हम शरीअत के अहकाम का इस्तिनबात[1] कर लेते हैं और इसीलिये उनके फ़त्वों में इख़्तिलाफ़ होता है और उनके मसाएल अलग–अलग होते हैं। लेकिन इमाम वाक़ई अहकाम का मुबल्लिग़ होता है वह माँ की गोद से लौहे महफ़ूज़ का मुतालेआ करता है। उसके अहकाम में तअद्दुद और इख़्तिलाफ़ व तज़ाद का सवाल ही नहीं पैदा होता है कि न एक मस्अले में अलग–अलग वाक़ई अहकाम होंगे और न एक मस्अले में अइम्मए ताहिरीन[अ०] के अलग–अलग अहकाम होंगे।

अइम्मए ताहिरीन[अ०] सब शरीअत की हिफ़ाज़त करने वाले थे और सब ने अपने फ़र्ज़ को अच्छी तरह अंजाम दिया है। लेकिन हिफ़ाज़त करने की दो क़िस्में हैं :

(1) दाख़िली हिफ़ाज़त (2) ख़ारजी हिफ़ाज़त

<u>दाख़िली हिफ़ाज़त</u> : जहाँ वाक़ई अहकाम को ज़हन में महफ़ूज़ रखा जाता है और मौक़ा पड़ने पर उनकी तबलीग़ की जाती है जहाँ उम्मत की राय में इख़्तिलाफ़ पैदा हुआ और अस्ल बात से मुँह मोड़ने का ख़याल पैदा हुआ इमाम[अ०] ने अस्ल हुक्म बयान करके अल्लाह की शरीअत की हिफ़ाज़त कर ली।

<u>ख़ारजी हिफ़ाज़त</u> : जहाँ वाक़ई अहकाम दुनिया तक पहुँच जाने के बाद ख़तरों से आगाह हो जायें और उनमें फेर–बदल का अंदेशा पैदा हो जाये। ऐसे मौक़े पर भी इमाम का फ़र्ज़ होता है कि वह हर तरह की ज़हमत व मशक़्क़त का मुक़ाबला करके वाक़ई हुक्म की हिफ़ाज़त करे और उसे हर तरह के फेर–बदल से बचाये।

इस मैदान में जो ख़िदमत इमाम हुसैन[अ०] ने अंजाम दी है, उसकी मिसाल अइम्मा[अ०] की तारीख़ में भी नहीं मिलती है। न इसलिये कि अइम्मए मासूमीन[अ०] में बाहमी कमालात में तफ़ावुत

1. बात से बात निकालना

था और कोई इमाम, इमाम हुसैन अ० के दरजे का नहीं था। बल्कि इसलिये कि जो हालात व ख़तरे इमाम हुसैन अ० के दौर में पैदा हो गये थे वह हालात व ख़तरे किसी और दौर में नहीं पैदा हुए थे। और जो मौक़ा शरीअत की हिफ़ाज़त का इमाम हुसैन अ० को मिला था वह किसी इमाम अ० को हासिल नहीं हुआ था।

अहकाम व तालीमात के एतेबार से उसकी मिसाल इमाम जाफ़र सादिक़ अ० की ज़िन्दगी में मिलती है कि जितना अहकाम के बयान और क़ानून की तबलीग़ का मौक़ा आपको मिला किसी दूसरे इमाम को नहीं मिला और इसीलिये सारी फ़िक़्हे अहलेबैत अ० का नाम फ़िक़्हे जाफ़री हो गया कि आपके बयान किये हुए अहकाम सारे मासूमीन अ० के बयान किये हुए अहकाम से ज़ियादा हैं और अहलेबैत अ० की शरीअत पर आपके बयानों की छाप लगी हुई है।

ख़तरों व आफ़तों की मंज़िल में यही हैसियत इमाम हुसैन अ० की है कि आपने ख़ुदा के दीन को इन ख़तरों से बचाया है जिनकी मिसाल किसी मासूम के दौर में नहीं थी इसलिए अच्छी सोच–समझ रखने वालों ने इस्लाम की हक़ीक़त की पहचान कराते हुए यह लफ़्ज़ इस्तेमाल किया है कि..... "इस्लाम मुहम्मदील हुदूस है और हुसैनियल बक़ा इस्लाम शुरू के एतेबार से मुहम्मदी स० है कि उसके तालीमात अल्लाह की 'वही' के ज़रीये रसूले अकरम स० पर नाज़िल हुए हैं और बक़ा के एतेबार से हुसैनी है कि इसके सारे क़ानून को कुफ़्र व अलहाद, दीनी व अय्यारी, उमवीयत व यज़ीदियत के ख़तरों से इमाम हुसैन अ० ने बचाया है।

इमाम हुसैन अ० हर एतेबार से शरीअत की हिफ़ाज़त करने वाले हैं इसलिये शरीअत वालों की हकीमाना ज़िम्मेदारी थी कि वह हुसैनियत के बाक़ी रहने का इन्तेज़ाम करे जो शरीअत की बक़ा की अलामत भी है और ज़मानत भी। इसीलिये इस्लाम की शरीअत ने हुसैनियत को हर एतेबार से ज़िन्दा व पाइन्दा बनाया है। इमाम हुसैन अ० की मुहब्बत को इस्लाम का फ़र्ज़ बनाया है।

उनके ज़िक्र को इबादत बनाया है। उनके ग़म में आँसू बहाना, उनकी याद में खोए रहना, उनकी मुसीबतों की याद में मरासिमे अज़ा का क़ाएम करना उनके सारे आमाल को खुदा की इबादत और खुदा की इताअत का दरजा दिया है, यहाँ तक कि अश्के अफ़शानी के साथ अश्के अफ़शानी की दावत और उसके मुज़ाहरे को भी नजात का वसीला क़रार दे दिया है। शरीअत की हिफ़ाज़त करने वाले मासूम ने वाज़ेह लफ़्ज़ों में एलान किया है कि इमाम हुसैन[अ०] पर रोना, रूलाना और रोने वालों की सूरत बनाना सब जन्नत का वसीला और अल्लाह की इबादत है अगरचे कुछ नासमझ लोगों ने इस क़िस्म के मज़मूनों पर यह एतेराज़ किया है कि सूरत बनाना रियाकारी है और रियाकारी इस्लाम में हराम है और हराम काम किसी सूरत से इबादत नहीं हो सकता है। लेकिन इन बेचारों को यह ख़बर नहीं है कि *'तबाकी'* उस तअस्सुर की शिद्दत का नाम है जिसका इज़हार चेहरे के खुतूत और शक्ल व सूरत की कैफ़ियतों से हो जाता है। चाहे मुख़्तलिफ़ असबाब के तहत आँसू न निकल सकें। गोया मासूम ने इस नुक्ते की तरफ़ इशारा किया है कि बुनियादी काम आँसू बहाना और आँसू बहाने की दावत देना है लेकिन ग़म का मस्अला इन्हीं हदों तक महदूद नहीं है और आँसू अपनी ज़ात से कलाम का मौज़ूअ् नहीं हैं। आँसू एक तरीक़ा है उस दिल के ज़ज़्बे के इज़हार का जो हर ईमान वाले के दिल में पाया जाता है। इसके बाद अगर आँसू न निकल सकें तो इस मुहब्बत के जज़्बे का इज़हार किसी न किसी शक्ल में होना चाहिए ताकि यह मालूम हो सके कि दिल में मुहब्बत पायी जाती है और इन्सान मसाएब के ज़िक्र या तसव्वुरे आलाम से मुतास्सिर है।

इस्लामी रवायतों में इसकी बहुत सी मिसालें पायी जाती हैं। चुनान्चे साहिबे कन्ज़ुल उम्माल जिल्द–1 पेज–147, रसूले अक़रम[स०] के बारे में नक़्ल करते हैं कि आपने सूरए ज़मर की आख़िरी आयतों की तिलावत की जिसमें जहन्नम के अज़ाब का

ज़िक्र है तो अंसार की सारी जमाअत ने रोना शुरू कर दिया। सिर्फ़ एक नौजवान था जिसकी आँखों से आँसू न निकले। उसने परेशान होकर कहा, सरकार ! मेरी आँखों से आँसू नहीं निकलते "व इन्नी तबाकियत" मैं सिर्फ़ तबाका पर इक्तेफ़ा कर रहा हूँ। फ़रमाया : "मिन तबाकिय फलाहल जन्नतः" जो रोने वाले की सूरत इख़्तियार करे उसके लिये भी जन्नत है। जो इस बात की अलामत है कि इन्सान का दिल उस अज़ाब से मुतास्सिर है वरना बेदीन लोगों की तरह आख़िरत के अज़ाब का मज़ाक़ उड़ाता, उसके ज़िक्र पर मुस्कुराता, रोने की सूरत न बनाता। यह सूरतेहाल दिल के लगाव की अलामत है और दिल का लगाव बेहतरीन इबादत है।

दूसरी रवायत कन्ज़ुल उम्माल ही में दी हुई है कि रसूले अकरम[स०] ने सूरए तकासुर की तिलावत करते हुए फ़रमाया कि जो इस सूरे को सुनकर रोयेगा उसके लिये भी जन्नत है और तबाका करेगा उसके लिये भी जन्नत है।

किताब लूलू व मरजान पेज 47, और मजमूअः वराम पेज 272 पर हज़रत अबूज़र से रवायत है कि रसूले अकरम[स०] ने फ़रमाया कि अगर कोई शख़्स रो सकता है तो रोये वरना रोने को दिल का शेआर बनाये और तबाका करे कि संगदिल अल्लाह की रहमत से बईद होता है।

इस रवायत में वाज़ेह तौर पर तबाका की दावत भी मौजूद है और उसका मफ़हूम भी बयान कर दिया गया है लेहाज़ा न इन्सान तबाका की रवायत को रद कर सकता है और न उसे रियाकारी क़रार दे सकता है। शेख़ मुहम्मद अब्दः का क़ौल तफ़सीरूल मनारिज जिल्द–8 पेज–301 पर नक़्ल किया गया है कि तबाका की रोने में कमी है, रिया नहीं है।

अल्लामा शरीफ़ जर्जानी ने फ़रमाया है कि बाबे तफ़ाअल आमतौर से ग़ैर मौजूद सिफ़त के इज़हार के लिये इस्तेमाल होता है। लेकिन इसके बावजूद इसे जाएज़ क़रार दिया है कि इससे

तहसीले सिफ़त का जज़्बा पैदा होता है जैसा कि सरकारे दोआलम[स०] के इरशादों में है कि रोना मुमकिन न हो तो तबाका करो। (तअ्रीफ़ात पेज–48)

रोने और तबाका की यही अहम्मीयत थी कि जिसके तहत इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] ने आठ सौ दिरहम मुअय्यन किये थे उन औरतों के लिये जो हज के ज़माने में मिना के मैदान में आपकी मुसीबतों पर रोयें जिससे तीन बातों का अन्दाज़ा होता है :–

1– रोने का एहतेमाम करना और उस पर पैसा ख़र्च करना शरीअत के ख़िलाफ़ नहीं है।

2– हज के ज़माने में मिना के मैदान में रोना मनाफ़िए हज व मनासिक व आमाल हज नहीं है।

3– रोने का एहतेमाम एक अहम दीनी अफ़ादियत रखता है कि इस तरह ज़ुल्मों व मुसीबतों दोनों का एलान होता है और मिना का मैदान इसलिये बेहतरीन मैदान है कि वहाँ हज करने वाले फ़ुर्सत से तीन दिन ठहरते हैं और रातों को उनके पास कोई अमल नहीं होता है।

इस रवायत से यह भी अन्दाज़ा हो जाता है कि इस्लाम में औरत की आवाज़ को नामहरम नहीं क़रार दिया गया है वरना इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम औरतों को मिना के मैदान में रोने की दावत न देते और रसूले अकरम[स०] हज़रत हम्ज़ः के ग़म में मदीने की औरतों को रोने की दावत न देते।

औरत के लिये अपनी आवाज़ नामहरम को सुनाना और उसमें लगावट पैदा करना शर्अन सही नहीं लेकिन रोने की आवाज़ में यह बात हरगिज़ नहीं होती है अलबत्ता कोई औरत इन्फ़ेरादी तौर पर अपनी आवाज़ सुनाने का जज़्बा रखती है या ग़ैर मुख़्लिसाना अमल अंजाम देती है तो उसका अमल हराम होगा लेकिन उसके अस्ल क़ानून पर कोई असर नहीं पड़ता है।

अहले सुन्नत फ़िक़्ह में भी इस हक़ीक़त को माना गया है कि औरत की आवाज़ नामहरम नहीं है इसलिये कि उनके यहाँ तो दो तिहाई दीन औरतों ही की आवाज़ में पहुँचा है और सहाबए केराम बराबर औरतों से मसाएल पूछा करते थे। फ़िकही एतबार से गिरया बुका मेहबूब और इमाम हुसैन[अ०] की कुरबानियों के पेशे नज़र एक अम्र मतलूब है जिसका एहतमाम हर साहिबे ईमान को करना चाहिये, क़ाबिले अफ़सोस इन अफ़राद का किरदार है जो गिरया को इबादत, ग़रज़ ख़िलक़त, तक़ाज़ाए मुहब्बत क़रार देने के बावजूद एक आंसू बहाने की तौफ़ीक़ हासिल नहीं करते और ज़िक्रे मसाएब पर उनकी आंखे इस जज़बए मुहब्बत की तरजुमानी नहीं करतीं, रब्बे करीम जुमला साहिबाने ईमान को क़ौल व अमल में मुताबेक़त और नियत में इख़लास की तौफ़ीक़ करामत फ़रमाए।

पसमंज़र

उन ज़मीर बेचने वाले और यतीमुल अक़्ल लिखने वालों के अलल रग़्म जिन्होंने कर्बला के वाक़िए को एक अचानक हादिसे की शक्ल में पेश करना चाहा है और इस्लामी उम्मत को यह तास्सुर देने की कोशिश की है कि "हुर से मुलाक़ात के बाद इमाम हुसैन[अ०] ने इस बात पर अपनी रज़ामन्दी का इज़हार कर दिया था कि मैं इब्ने ज़ियाद के पास हाज़िरी नहीं दूँगा। बल्कि जब यज़ीद ही की बैअत करना है तो शाम जाकर बराहेरास्त उसके हाथ पर बैअत करूँगा और इस बिना पर आपने कूफ़े का इरादा बदल कर शाम का रूख़ कर लिया था और यज़ीद से मुलाक़ात करने के ख़ाहिशमन्द थे कि अचानक इब्ने ज़ियाद के हुक्म पर कर्बला की ज़मीन पर दोबारा क़ाफ़िले को रोक दिया गया और उसे रोकने में मुज़ाहमत[1] हो गयी आख़िर में इमाम हुसैन[अ०] अपने साथियों समेत शहीद हो गये"।

इस बेअक़्ल और बेदीन तारीख़ लिखने वाले को इस क़द्र भी शऊर नहीं है कि शाम जाने वाले का रास्ता क्या होगा और वह कूफ़े का रास्ता छोड़ कर किस रूख़ से शाम का इरादा करेगा। और जिसने मदीने में वाज़ेह लफ़्ज़ों में यह कह दिया है कि मुझ जैसा इन्सान यज़ीद जैसे की बैअत नहीं कर सकता है, वह एक बार में अपने इरादे को किस तरह बदल सकता है और उसके दिमाग़ पर मौत का डर किस तरह आ सकता है जबकि उसने बराबर एलान किया है कि मुझे मेरे बाबा ने ख़बर दी है कि अल्लाह की मर्ज़ी यही है कि मैं क़ुर्बानी दूँ और मेरे घर वाले असीर हों ताकि नाना के दीन को बक़ा और इस्तहकाम का सहारा मिले।

1. किसी पर तंगी करना

हक़ीक़त बात तो यह है कि कर्बला का वाक़िआ एक सोचा–समझा मन्सूबा है और कर्बला तारीख़ के तसलसुल की एक कड़ी है जिसका मक़सद आले रसूल[स०] और दीने इस्लाम को मिटा देना था। और जिसके लिए एक बड़ी मुद्दत से मन्सूबाबंदी हो रही थी।

सवाल सिर्फ़ यह है कि इस तरह की मन्सूबाबंदी के लिये किस क़द्र एहतेमाम की ज़रूरत थी और इतने बड़े क़दम के लिये कितने बड़े आदमी की ज़रूरत थी, और क्या यज़ीद में यह सारी सलाहियतें पायी जाती थीं कि वह इमाम हुसैन[अ०] जैसे मुदब्बिर और मुफ़क्किर इन्सान का मुक़ाबला करे और सारी उम्मत को अपना हमख़याल बनाकर इमाम हुसैन[अ०] के सारे घराने को एक दोपहर में क़त्ल कर दे या यज़ीद का कारोबार एक तारीख़ी सिलसिले की आख़िरी कड़ी था जिसके लिये एक मुद्दत से ज़हन तैयार किये जा रहे थे और मिज़ाजों को नये सांचे में ढाला जा रहा था और हर वक़्त उस लम्हे का इन्तेज़ार किया जा रहा था जब तयशुदा मुक़द्दमात का नतीजा हासिल किया जाये और वह आख़िरी क़दम उठाया जाये जिसकी तैयारी तक़रीबन आधी सदी से की जा रही थी।

इस्लाम की तारीख़ में वह मंज़र और वह अवामिल व मुहर्रिकात महफ़ूज़ हैं जिन्होंने मुसलमान ज़हनियत को बेकार कर दिया था और उम्मत को उस मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया था जहाँ इस्लामी ग़ैरत और इन्सानी शराफ़त सिर्फ़ अलफ़ाज़ की शक्ल में बाक़ी रह जाये और उसकी कोई मअ्नवीयत न रह जाये। तफ़सीली तज़किरे के लिये औराक़ और सफ़हात नहीं बल्कि कुतुब और मुअल्लिफ़ात चाहिये हैं। इजमाली तौर पर कर्बला में पेश आने वाले वाक़िआत के पसमंज़र में सिर्फ़ उन वाक़िआत की निशानदिही करायी जायेगी जिन्होंने उम्मत के मिज़ाज को दरहम–बरहम किया था और इस्लामी ग़ैरत को तबाह व बर्बाद कर डाला था और जिसके बाद कोई शख़्स भी

बेग़ैरती का मुज़ाहेरा करके एक क़दम आगे बढ़ जाये तो उम्मत उसका साथ भी दे सकती थी और उसके ज़ुल्मों को ख़न्दा पेशानी से बर्दाश्त भी कर सकती थी। मिसाल के तौर पर चन्द नमूने मुलाहेज़ा हों :–

1– यज़ीदी शरारत और शैतनियत का सबसे बड़ा नमूना यह था कि उसने भरे दरबार में कमाल के साथ बेहयाई यह एलान कर दिया कि इस्लाम सिर्फ़ बनी हाशिम का खेल है और न कोई ख़बर आयी है और न कोई 'वही' नाज़िल हुई है।

ज़ाहिर है कि इस क़द्र मुजरिमाना ख़याल को पेश करने के बाद यज़ीद को ज़िन्दा नहीं रहना चाहिये था और रसूले अकरम[स०] के कलिमः पढ़ने वाले लोगों को उसे क़त्ल करके टुकड़े–टुकड़े कर देना चाहिये था। लेकिन ऐसा कुछ न हुआ, और क़ौम ने बहुत ही आसानी से उस एलान को सुन लिया और उसका कोई रद्दे अमल ज़ाहिर न हो सका जिसका बुनियादी सबब यह है कि क़ौम इस तरह के गुसताख़ बातों की आदी हो चुकी थी और उसकी नज़र में उस तरह के एलानों में कोई मुज़ाएक़ा नहीं था। क़ौम यह सोच रही थी कि यज़ीद तो रसूले अकरम[स०] के इन्तेक़ाल के बाद मदीने से सैकड़ों मील दूर अपने दरबार में इस तरह का एलान कर रहा है। यज़ीद के पहले के इक़्तेदार[1] वाले मुसलमानों ने तो खुद रसूले अकरम[स०] की ज़िन्दगी में उनके सामने यह कह दिया था कि यह शख़्स हिज़यान बक रहा है और इस पर मरज़ का ग़लबा हो गया है। ज़ाहिर है कि जब रसूले अकरम[स०] की महफ़िल में इतनी बड़ी गुसताख़ी की जा सकती है तो रसूले अकरम[स०] के बाद क्यों नहीं की जा सकती है और जब हिज़यान के इलज़ाम को बर्दाश्त किया जा सकता है तो "फ़ला ख़बर जाय वला वहीयुन नज़ल" को क्यों नहीं बर्दाश्त किया जा सकता है।

2– यज़ीद के ज़ुल्मों की एक अज़ीम बुनियाद यह भी थी कि उसे पूरे आलमे इस्लाम का इक़्तेदार हासिल हो गया था और

1. ताक़तवर होना

वह इस्लामी सरज़मीन के 12 ½ लाख मुरब्बा मील पर हुकूमत कर रहा था। ज़ाहिर है कि उसके पास इतना बड़ा इख़्तियार और तवील व अरीज़ इक़्तेदार न होता तो वह इतने बड़े क़दम का इरादा भी न करता। लेकिन यह इक़्तेदार व इख़्तियार यज़ीद की ज़ाती सलाहियत या उसके हुस्ने तदबीर का नतीजा नहीं था। उसके पसमंज़र में भी वह नेज़ाम काम कर रहा था जिसने यज़ीद जैसे लोगों की हुकूमत के लिये ज़मीन का इन्तेज़ाम किया और फिर उसके नतीजे में इतना बड़ा वाक़िआ मंज़रेआम पर आ गया।

रसूले अकरम[स०] की वफ़ात के फ़ौरन बाद और आपके जसदे अक़दस के दफ़्न से पहले मुसलमानों में इक़्तेदार की जो रस्साकशी शुरू हुई और अंसार व महाजिरीन ने जिस तरह इस्लामी हुकूमत का फ़ैसला किया और जिन बुनियादों पर इक़्तेदार पर क़ब्ज़ा किया गया। उनका लाज़मी नतीजा यही होना था जो हुआ। जब सक़ीफ़ा बनी साएदः में क़ुर्आन व सुन्नत को नज़र अन्दाज़ कर दिया गया और रसूले अकरम[स०] के मुक़र्रर किये हुए हाकिम को नाक़ाबिले तवज्जोह क़रार दे दिया गया और इस्लामी इक़्तेदार का संगे बुनियाद, क़ौम, क़बीले और रिश्तेदारों पर रख दिया गया तो उसका क़हरी नतीजा था कि तमाम इस्लामी सलाहियतों से आरी और तमाम शरीफ़ाना उसूले किरदार से बेख़बर लोग उम्मत की तक़दीर के मालिक हो जायें और अबू सुफ़ियान जैसे इन्सान को अपने चशमो चराग़ ख़ानदान से यह कहने का मौक़ा मिल जाये कि अब ख़िलाफ़त को गेंद की तरह नचाओ और बनी उमय्यः को किलीदी ओहदों का मालिक बना दो और याद रखो कि दुनिया, दुनिया है और इक़्तेदार, इक़्तेदार है। इसके बाद न कोई जन्नत है और न जहन्नम।

सक़ीफ़ा का पहला नतीजा अबू सुफ़ियान के उस एलान की शक्ल में बरामद हुआ, और दूसरा नतीजा यज़ीद के इक़्तेदार

और उसके ज़ुल्मों की शक्ल में बरामद हुआ जिसकी बिना पर यह कहा गया कि :

"हुसैन अन्दर सक़ीफ़ा कुश्ता शुद"

3– यज़ीद के साथ उसके हाथ पर बैअत करने वालों में बेशुमार नमाज़ी, रोज़ादार और क़ुर्आन के हाफ़िज़ भी शामिल थे जो मुसलसल क़ुर्आन की आयतों की तिलावत करते जाते थे और हुसैन[अ०] के लिये खंजर तेज़ करते जाते थे। सवाल यह पैदा होता है कि जिस क़ुर्आन ने मुसलसल हुसैन[अ०] की अज़मत, सदाक़त, तहारत, मवद्दत का एलान किया है उसके पढ़ने वाले और रटने वाले किस तरह हुसैन[अ०] के क़त्ल पर आमादा हो गये और उन्होंने इमाम हुसैन[अ०] के हुक़ूक़ का लेहाज़ क्यों नहीं किया? लेकिन हक़ीक़त यह है कि यह भी एक तारीख़ी हादिसे का लाज़मी नतीजा था। अगर रसूले अकरम[स०] के आख़िरी वक़्त क़ुर्आन लेकर अहलेबैत[अ०] को नज़र अन्दाज़ करने की बुनियाद न रखी होती और रसूले अकरम[स०] के सामने *"हसबुना किताबुल्लाह"* का नारा न लगाया गया होता तो यज़ीदियों में इस अन्दाज़ के किरदार की जुर्अत न होती और उन्हें बहरहाल यह एहसास होता कि अहलेबैत[अ०] को नज़र अन्दाज़ करके उनके क़त्ल का मन्सूबा बनाकर क़ुर्आन से तमस्सुक[1] करने के कोई मानी नहीं हैं। रसूले अकरम[स०] को इस नतीजे की इत्तेला थी और उस वक़्त के वाक़िआत के आईने में अच्छी तरह आने वाले कल का मुशाहिदा कर रहे थे इसीलिये आपने इस नारे की शिद्दत से मुख़ालिफ़त की और ऐसे लोगों को महफ़िल से निकाल बाहर कर दिया जिन्होंने ऐसे ज़ुल्मों की शुरूआत की थी और ऐसे नज़रियात का हवाला दिया था जिसका नतीजा इतने बड़े ज़ुल्म की शक्ल में बरामद होने वाला था।

4– यज़ीद की हुकूमत के जवाज़ के बारे में कहा जाता है कि आलमे इस्लाम ने उसके हाथ पर बैअत कर ली थी लेहाज़ा उसकी हुकूमत एक जाएज़ इस्लामी हुकूमत थी अगरचे इस बैअत

1. दस्तावेज़ पकड़ना, चंगुल मारना

की सही सूरतेहाल यही थी कि इमाम हुसैन[अ०] के बैअत से इनकार करने की बिना पर उनके सारे घराने का ख़ातिमा कर दिया गया और यह बात वाज़ेह कर दी गयी कि मुसलमान हाकिम को अवाम की बैअत से सरोकार है चाहे वह बैअत इख़्तियारी और रज़ामन्दी से हो या मुकम्मल जब्र व इकराह के नतीजे में हो।

सवाल यह पैदा होता है कि मुसलमानों ने इस क़िस्म की बैअत को किस तरह गवारा किया और ऐसे बैअत लेने वाले को किस तरह हाकिम ख़याल कर लिया ? इसका जवाब भी माज़ी के औराक़े परीशाँ में महफ़ूज़ है कि रसूले अकरम[स०] की वफ़ात के बाद जब इस्लामी उम्मत ने हुकूमत का फ़ैसला कर लिया तो पहला ख़याल यह पैदा हुआ कि लोगों से उस हुकूमत की बैअत ली जाये इसलिये कि जिस हुकूमत की बुनियाद क़ुर्आन व सुन्नत की नस और ख़ुदा व रसूल[स०] के इरशादों पर न हो उसका जवाज़ अवामी राय ही से हासिल किया जा सकता है और अवामी राय हासिल करने के लिये जब्र व तशद्दुद ही इस्तेमाल किया जा सकता है। इसलिये कि अवाम अक्सर औक़ात जब्र व इकराह के बग़ैर इत्तेफ़ाक़ राय का इज़हार नहीं करते। चुनान्चे इसी ख़याल का नतीजा था कि अवाम के साथ ख़ास और उम्मत के साथ अहलेबैत[अ०] के साथ भी एक ही तरह का बर्ताव किया गया और उनसे भी बैअत की माँग कर दी गयी और इनकार की सूरत में घर में आग लगा देने की धमकी दी गयी और कुछ रवायतों की बिना पर दरवाज़े से बुलन्द होता हुआ धुआँ भी दिखायी दिया, तो ज़ाहिर है कि शुरूआती दौर में इस तरह की बैअत को हुकूमत का जवाज़ न समझा गया होता और उस शिद्दत से बैअत की माँग न की गयी होती और इनकार की सूरत में आग लगाने की बात न कही गयी होती तो न यज़ीद मुसलमानों का ख़लीफ़ा होता, न उसे इमाम हुसैन[अ०] से बैअत माँगने की हिम्मत होती और न इनकार की सूरत में ख़यामे

हुसैनी में आग लगाने का हुक्म दिया जाता। यह सब उन्हीं शुरूआती हालात के नतीजे थे जिन्हें कर्बला के क़रीब तरीन मुक़द्दमात में गिना जा सकता है और जिनकी बिना पर कर्बला एक वक़्ती हादिसा नहीं है बल्कि एक तारीख़ी तसलसुल का नतीजा है जिसके मुक़द्दमात व मक़ूमात में बड़े-बड़े वाक़िआत और बड़े-बड़े लोगों के नाम आते हैं।

5– यज़ीद ने इमाम हुसैन[अ०] से बैअत लेने के लिये जिन वसाएल को इख़्तियार किया था उनकी आख़िरी कड़ी यह सामने आयी कि अगर वह बैअत न करें तो उन्हें बेआब व गियाह सेहरा में महसूर किया जाये और उनके बच्चों पर पानी बन्द कर दिया जाये अगरचे इस सिलसिले में उसमान की मज़लूमियत का सहारा लिया गया था जिसका इमाम हुसैन[अ०] से कोई तअल्लुक़ नहीं था और यह सिर्फ़ एक बहाना और अवाम को वरग़लाने का एक ज़रीआ था वरना इमाम हुसैन[अ०] ने तो उस मुहासरे के दौरान भी इन्तेहाई किरदार के कमाल का मुज़ाहरा किया था जो ऐसे बिफरे हुए मजमे के मुक़ाबले में कोई अपने अज़ीज़ तरीन आदमी के बारे में भी इख़्तियार नहीं कर सकता जैसा कि तारीख़ खुद गवाही देती है कि शाम की फ़ौजें शहर से बाहर रूकी रहीं और वाक़िए के वाक़ेअ् हो जाने तक किसी बचाव के क़दम के लिये तैयार न हों।

तो सवाल यह पैदा होता है कि हुकूमत मनवाने और बैअत हासिल करने का यह कौन सा तरीक़ा था। बैअत तो एक रज़ामन्दी का सौदा है जो इन्सान हंसी खुशी किसी की इताअत और फ़रमाबरदारी के लिये इख़्तियार करता है उसके लिये खाना पानी बन्द करने की ज़रूरत नहीं होती है और ऐसे क़दम उठाने में इस्लामी मिज़ाज को यक़ीनन बरहम हो जाना चाहिए था और यज़ीद के ख़िलाफ़ इन्क़ेलाब की एक लहर दौड़ जाना चाहिए थी जो काम इमाम हुसैन[अ०] की शहादत से पहले न हो सका।

और इमाम[अ०] की शहादत ही ने इस तहरीक को पैदा किया और मिल्लत के ठण्डे खून में हरारत की लहर दौड़ा दी।

इसका राज़ भी ज़ाहिर में गुज़रे हुए कल की तारीख़ ही में पाया जाता है जब हज़रत अली[अ०] से बैअत लेने के लिये इक़्तेसादी मुहासरे को ज़रीआ बनाया गया था और हक़ ज़विल कुरबा के साक़ित करने से फ़िदक पर क़ब्ज़ा कर लेने तक किसी वसीले से दरीग़ नहीं किया गया और उम्मत को महसूस करा दिया गया कि वक़्त की हुकूमत से इख़्तिलाफ़ करने के नतीजे में इक़्तेसादी मुहासेरा कोई ऐब और ग़ैर इस्लामी क़दम नहीं है बल्कि मुख़ालिफ़ के साथ इस तरह का बर्ताव भी किया जा सकता है, जिसका नतीजा यह हुआ कि यज़ीद को भी इस तरह के क़दम की जुरअत हो गयी और उम्मते इस्लामिया का एहसास बेदार न हो सका।

तारीख़ में एक क़दम पीछे चले जायें तो यही बर्ताव खुद रसूले अकरम[स०] के साथ भी किया गया था। जब आपने "*क़ूलू लाइलाहा इल्लल्लाह*" की आवाज़ बुलन्द की और किसी क़ीमत पर कुफ़ से हमख़याल और हम आवाज़ होने के लिये तैयार न हुए तो मक्के के कुफ़्फ़ार ने आपका मआशी बाइकाट कर दिया और आपको अपने घर वालों समेत तीन साल तक बहुत ही परेशानी की ज़िन्दगी गुज़ारना पड़ी और पेड़ों के पत्तों तक पर गुज़ारा करना पड़ा।

कुफ़ का यही क़दम नज़ीर बनकर इस्लाम में दाख़िल हुआ और मुसलमानों ने भी अपने मुख़ालिफ़ीन के साथ यही बर्ताव रवा कर लिया और ज़ाहिर है कि जब रसूले अकरम[स०] की तरबियत की हुई क़ौम में ऐसे अनासिर पैदा हो सकते हैं तो यज़ीद को तो यह शरफ़ भी हासिल न था और वह एक तरफ़ से अबू सुफ़ियान का पोता और मुआविय: का बेटा था तो दूसरी तरफ़ से ईसाई घराने का चश्मो चिराग़ था और ऐसे शख़्स से इस्लाम के बारे में ऐसी ही उम्मीदें की जा सकती हैं जिनका

मुज़ाहरा उसके किरदार से हुआ, और जिसके ज़रीए उसने क़दीम तारीख़ के बहुत से पन्ने उलट दिये और तारीख़ को फिर से दोहराया।

6– यज़ीद ने इमाम हुसैन[अ०] से मुक़ाबला करने के लिये एक यह हथकण्डा भी इख़्तियार किया कि इस्लामी हुकूमत के तमाम अहम ओहदे अपने ख़ानदान वालों के हवाले कर दिये और किसी हाकिम ने भी अहलेबैत[अ०] के साथ किसी हद तक नर्म रवैये का ख़याल भी किया तो उसे फ़ौरन बर्ख़ास्त कर दिया गया और उसकी जगह दूसरे घटिया शख़्स का तक़र्रुर कर दिया गया और यह सबक़ भी उसने अपनी ख़ानदानी तारीख़ से सीखा था। जब तीसरी ख़िलाफ़त की शुरूआत पर उसके दादा अबू सुफ़ियान ने वक़्त के हाकिम को मुबारकबाद देते हुए यह कहा था कि हुकूमत के मरकज़ी ओहदे बनी उमय्यः के हवाले कर दो और ख़िलाफ़त को गेंद की तरह नचाओ इसलिये कि जन्नत व जहन्नम की कोई हैसियत नहीं है और हाकिम ने भी बड़ी सआदतमन्दी से उसकी नसीहत पर अमल किया और तमाम अहम ओहदों पर ख़ुसूसियत के साथ उन इलाक़ों में जिनमें अहलेबैत[अ०] के मानने वाले पैदा हो सकते थे बदतरीन अम्माल और गवर्नर मुक़र्रर कर दिये। कूफ़े पर सईद बिन आस को मुक़र्रर किया जिसका किरदार आलमे आशकार है। मिस्र पर अब्दुल्लाह बिन आमिर को मुक़र्रर किया जो वक़्त के हाकिम का मामूज़ाद भाई था और अहम मरकज़ी मक़ामों पर वलीद बिन उक़्बः फ़ासिक़ और अब्दुल्लाह बिन सअ्द को गवर्नर बनाया जिनमें अव्वल अज़ज़िक्र ऐसा बेदीन था कि सुबह की नमाज़ चार रक्अत पढ़ाने के बाद भी मजमे से पूछ रहा था कि कहो तो कुछ और बढ़ोत्तरी कर दी जाये और ज़िक्र करने वाला ख़लीफ़ए वक़्त का रेज़ाई भाई था। उसके बाद अपने ख़ानदान वालों को दौलत और जागीर बख़्शने का सिलसिला शुरू हुआ तो उसका हिसाब लाखों बल्कि करोड़ों से गुज़र गया।

ज़ाहिर है कि जब रसूले अकरम[स०] से निस्बतन क़रीब तरीन ज़माने में और रसूले अकरम[स०] से रिश्तेदारी रखने के बाद इन्सान अपने बुज़ुर्ग ख़ानदान के मशविरे पर ऐसा अमल कर सकता है तो यज़ीद तो उन खुसूसियात का हामिल न था और उसके लिये अबू सुफ़ियान हक़ीक़ी दादा की हैसियत रखता था उसे तो उस वसीयत व नसीहत का ख़ास ख़याल रखना चाहिये था और उसी तरह के किरदार को इख़्तियार करना चाहिये था।

और यह नतीजा उस कजरवी का है जो आलमे इस्लाम में पैदा हो गयी थी और जिसकी बिना पर यज़ीद जैसे बदकिरदार इन्सान को हुकूमत का मौक़ा मिल गया था और फिर हुकूमत को संभालने के लिये हर वसीला और हर ज़रीआ मुबाह हो गया था।

इसके अलावा तारीख़ में और बहुत सी कड़ियाँ पायी जाती हैं जिनको तैयार कर लिया जाये तो तारीख़ी माद्दीयत के एतेबार से ऐसा महसूस होता है कि रसूले अकरम[स०] के बाद उम्मते इस्लामिया ने जो रविश इख़्तियार की थी उसका नतीजा लाज़मी तौर पर ऐसा ही बरामद होना चाहिये था। यह और बात है कि मसऊलियत और ज़िम्मेदारी के एतेबार से हर वह शख़्स क़यामत के दिन मसऊल होगा जिसने हालात को उस बुलन्दी तक पहुँचाने में किसी तरह का भी रोल अदा किया था। और जिसकी किसी भी इन्फ़ेरादी या इज्तेमाई हरकत से हालात इतने ज़ियादा अफ़सोसनाक और ख़राब हो गये थे और इस्लामी मिल्लत हमेशा–हमेशा के लिये अपनी हक़ीक़ी क़यादत और वाक़ई देयानत से महरूम हो गयी थी।

ऐसा मालूम होता है कि किताबे कर्बला के ज़ुल्म के हिस्से का मसविदा मुन्तशिर औराक़ में बहुत दिनों से जमा हो रहा था और ज़ुल्म उस मौक़े की तलाश में था जब उन औराक़े परीशाँ को तैयार करके एक पूरे सहीफ़ए ज़ुल्म की शक्ल में दुनिया के सामने पेश कर दे जिस तरह की मज़लूमियत का

हिस्सा व किरदार भी इमाम हुसैन[अ०] के बुज़ुर्गों और ख़ानदान के लोगों की ज़िन्दगी में मुन्तशिर था और इमाम हुसैन[अ०] ने पूरे किरदार को तैयार करके एक वक़्त में पेश कर दिया और एक ही वक़्त तमाम अम्बिया के कारनामों का मज़हर बन गये बल्कि इससे भी बालातर।

कर्बला का मंज़र

आशूर की रात ख़त्म हो रही है, सुब्ह का वक़्त क़रीब आ रहा है और इमाम हुसैन[अ०] अपने क़दीम मुअज़्ज़िन हुज्जाज बिन मसरूक़ को रोक कर अपने बेटे अली अकबर[अ०] को अज़ान का हुक्म दे रहे हैं कि इमाम हुसैन[अ०] के पास कलिमः पढ़ने वाले मुनाफ़िक़ों के मुक़ाबले में अली अकबर[अ०] से बेहतर हुज्जत तमाम करने का कोई ज़रीआ नहीं है।

अली अकबर[अ०] सूरत में, सीरत में, रफ़्तार में, बातें करने में रसूले अकरम[स०] की शबीह हैं, और दुश्मन को मालूम है कि शबीह को टुकड़े–टुकड़े कर देने से अस्ल से दुश्मनी का इज़हार होता है।

अली अकबर[अ०] ने अज़ान कही और यह आवाज़ सारी कर्बला की फ़िज़ा में गूँज गयी। इमाम हुसैन[अ०] अपने वफ़ादार साथियों के साथ सुब्ह की नमाज़ के लिये तैयार हुए। पानी मौजूद नहीं है कि वुज़ू अंजाम देते। कर्बला की गर्म ज़मीन पर तयम्मुम करके साथियों ने सफ़ें तैयार कीं और इमाम हुसैन[अ०] ने नमाज़ शुरू कर दी।

सारी रात अल्लाह की इबादत, तिलावत, ज़िक्र व फ़िक्र और रूकूअ् व सजदों में गुज़ारने वाली क़ौम अपने फ़र्ज़ की अदायगी के लिये आमादा हो गयी और ज़िन्दगी की आख़िरी सुकून के साथ नमाज़ अदा करने के लिये ज़मीन के मुसल्ले पर ईस्तादः हो गयी।

नमाज़ ख़त्म हुई थी कि कर्बला की फ़िज़ा में एक आवाज़ गूँजी। क़ौम वालो ! गवाह रहना ! ख़यामे हुसैनी की तरफ़ पहला तीर मैंने छोड़ा है। यह था लश्कर का सरदार इब्ने सअ्द जो अपनी रियासत व सरदारी की हिफ़ाज़त के लिये और

रै मुल्क की गवर्नरी को बचाने के लिये रसूलुल्लाह[स॰] के बेटे के ख़िलाफ़ जंग छेड़ने का एलान कर रहा था। और कुछ दिनों की दुनिया के बदले हमेशा रहने वाली आख़ेरत को बेच रहा था। इब्ने सअ्द का आवाज़ देना था कि तीरों की बौछार शुरू हो गयी और यज़ीद के लश्कर के चार हज़ार कमानदारों ने सरदार की फ़रमाबरदारी में तीरों का मेंह बरसाना शुरू कर दिया।

उधर इमाम हुसैन[अ॰] ने भी अपने साथियों को मुख़ातिब करके फ़रमाया कि यह तीर नहीं हैं यह मौत के सफ़ीर हैं लेहाज़ा अब मुक़ाबले के लिये आमादा हो जाओ। साथियों ने मोर्चे संभाल लिये मगर यह आमने–सामने की जंग और लोगों की बाहमी नबर्द आज़माई नहीं थी कि जंग का मुज़ाहरा होता और मुजाहिदीन की शुजाअत के जौहर खुलते। यह दुश्मन का इन्तेहाई बुज़्दिलाना हमला था जिसके मुक़ाबले के असबाब इमाम हुसैन[अ॰] के साथियों के पास नापैद थे जिसका नतीजा यह हुआ कि तीरों की बारिश के ख़ातिमे पर इमाम हुसैन[अ॰] ने अपने साथियों का जायज़ा लिया तो चालीस से पचास तक असहाब व अंसार ख़ुदा की राह में काम आ चुके थे जिनके असमाए गेरामी कुछ तारीख़ लिखने वालों के बयान के मुताबिक़ यह हैं :

नुऐम बिन अजलान, इमरान बिन कअ्ब बिन हारिस, हन्ज़लः बिन अमरू शैबानी, क़ासित बिन ज़ुहैर, कनानः बिन अमरू बिन ज़ुबीअः, ज़रग़ामः बिन मालिक, आमिर बिन मुस्लिम, सैफ़ बिन मालिक, अब्दुर्रहमान अल–रजही, आएज़ बिन मुजम्मउल आएज़ी, हुबाब बिन हारिस अमरू जुन्दई, हुलास बिन अमरू रासबी, सव्वार बिन अबी अमीर, अम्मार बिन अबी सलामः, नोअ्मान बिन अमरू, ज़ाहिर मोली, अमरू बिन अब्दुल्लाह, ज–ब–लः बिन अली, मस्ऊद बिन हुज्जाज, अब्दुल्लाह बिन उरवः ग़फ़्फ़ारी, ज़ुहैरी बिन सलीम, अब्दुल्लाह बिन यज़ीद बसरी, उबैदुल्लाह बिन यज़ीद बसरी, दस ग़ुलामाने इमाम हुसैन[अ॰] और दो ग़ुलामाने अमीरूल मोमिनीन[अ॰] ————(मनाक़िब)

ज़ाहिर है कि असहाब की इतनी बड़ी तादाद के शहीद हो जाने के बाद लश्करे इमाम हुसैन[अ०] में एक नुमायाँ कमी हो गयी और इमाम हुसैन[अ०] को पहले ही मरहले में इतनी बड़ी मुसीबत से दोचार होना पड़ा जिसका तहम्मुल मुश्किल था। लेकिन मुश्किलकुशा के लाल के लिये कोई काम मुश्किल नहीं है। इमाम हुसैन[अ०] के हौसले बुलन्द हैं और असहाब के हौसले इमाम के तुफ़ैल में बुलन्द हैं और सब कुर्बानी के लिये हिम्मतन तैयार हैं।

नतीजा यह हुआ कि थोड़ी देर के बाद जब बाज़ाब्ता जंग का आग़ाज़ हुआ तो बाक़ी मांदः असहाब मुकम्मल हौसले के साथ दादे शुजाअत देने के लिये तैयार हो गये और एक के बाद एक राहे ख़ुदा में जान कुर्बान करने लगा।

सबसे पहले अब्दुल्लाह बिन उमैर कल्बी मैदान में आये और एक अज़ीम जेहाद के बाद राहे ख़ुदा में कुर्बान हो गये, अब्दुल्लाह के बाद सैफ़ बिन हारिस बिन सरीअ् जाबरी और मालिक बिन अब्द बिन सरीअ् जाबरी मैदान में आये और दोनों ने जेहाद का हक़ अदा किया।

इन दोनों के बाद बनी ग़फ़्फ़ार के दो मुजाहिदीन ने मैदान में क़दम रखा। अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान (उरवः ग़फ़ारी के बेटे) इन दोनों हज़रात के राहे ख़ुदा में काम आ जाने के बाद चार लोगों ने मैदान का रूख़ किया अमरू बिन ख़ालिद सैदावी, सअ्द, जाबिर बिन हारिस सलमानी और मुज्मअ् और सबने दादे वफ़ा देकर जामे शहादत नोश किया। और आख़िर में मुस्लिम बिन औसजा ने मैदान का रूख़ किया और ऐसी जंग की कि दुश्मनों के हौसले पस्त कर दिये और चलते–चलते हबीब बिन मज़ाहिर को वसीयत कर गये कि जब तक ज़िन्दा रहना इमामे मज़लूम का ख़याल रखना।

असहाब की इस बेमिसाल कुर्बानी के बाद ज़ोहर का हंगाम आ गया और इमाम हुसैन[अ०] ने हबीब बिन मज़ाहिर को

जंगबन्दी का पैग़ाम देकर भेजा, जिसका जवाब बद्तरीन अन्दाज़ से दिया गया और इमाम हुसैन[अ०] ने मुकम्मल देफ़ाई इन्तेज़ाम के साथ नमाज़ शुरू कर दी। ज़ुहैर बिन क़ैन और सईद इमाम[अ०] के सीना सिपर हो गये और नमाज़ तमाम होते–होते सईद ने ज़मीन पर गिरकर आवाज़ दी, फ़रज़न्दे रसूल ! क्या मैंने वफ़ा का हक़ अदा कर दिया ? और इमाम हुसैन[अ०] ने वफ़ा की सनद देकर दुनिया से रूख़्सत कर दिया।

इसके बाद जंग का दूसरा सिलसिला शुरू हुआ, और इधर से हबीब बिन मज़ाहिर और अबू सुमामः मैदान में आये और दादे शुजाअत देकर रूख़्सत हो गये।

इनके बाद हुर बिन यज़ीद, ज़ुहैर बिन क़ैन और उनके चचाज़ाद भाई सलमान बिन मज़ारिब ने मैदाने जेहाद का रूख़ किया और खूब–खूब जंग की। कुछ रवायतों की बिना पर हुर से पहले उनके जवान बेटे अली बिन हुर ने भी क़ुर्बानी पेश की। लेकिन इन तीनों हज़रात के बाद अमरू बिन क़रज़ः मैदान में आये और उनकी शहादत के बाद नाफ़ेअ् बिन हेलाल हम्बली ने शुजाअत के जौहर दिखाये। नाफ़ेअ् के बाद दो ग़ुलाम वाज़ेह और असलम मैदान में आये और इस्लाम में नस्ल व रंग की तफ़रीक़ का ख़ातेमा करके दरजए शहादत पर फ़ाएज़ हो गये।

इन ग़ुलामों के बाद बुरैर बिन ख़ुज़ैर की बारी आयी और उन्होंने दुश्मनों पर हर तरह हुज्जत तमाम करने के बाद जामे शहादत नोश किया।

फिर इसके बाद हन्ज़लः बिन सअ्द शबामी ने शहादत पायी और उनके बाद दो अज़ीम सिपाही मैदान में आये जिनके नाम से दुश्मन लरज़ जाते थे और जिनकी ख़ानदानी शुजाअत का शोहरा हर ख़ास व आम की ज़ुबाँ पर था जनाबे आबिस बिन शबीब शाकिरी और उनके साथ शाकिर के ग़ुलाम शौज़ब जिन्होंने शुजाअत का सबक़ अपने आक़ा के घराने से सीखा था

और कुर्बानी की मंज़िल में गुलामी और आज़ादी के तफ़रिक़े पर ख़त्ते नस्ख़[1] खींच दिया था।

इन अरब के बहादुरों के कुर्बान हो जाने के बाद जनाबे अबूज़र के गुलाम जौन की बारी आयी और जौन ने राहे ख़ुदा में कुर्बान होते–होते इस हक़ीक़त को बेनक़ाब कर दिया कि शहादत के शरफ़ के लिये रंग या नस्ल या क़ौम और क़बीले की शर्त नहीं है। इस शरफ़ के लिये ईमान और किरदार की ज़रूरत है और यह किसी भी नस्ल या क़ौम की मीरास नहीं है।

जौन के बाद अनस बिन हारिस बिन नबीयुल काहिली मैदान में आये और उनकी शहादत के बाद उमरू बिन जुनादः ने मैदान में क़दम रखा। यह उम्र के एतेबार से कमसिन थे लेकिन हिम्मत व हौसला के एतेबार से बिलकुल जवाँ मर्द और मुकम्मल तौर से आज़मूदाकार सिपाही की तरह जेहाद करने वाले थे।

उमरू बिन जुनादः के कुर्बान हो जाने के बाद इमाम हुसैन[अ०] के मुस्तक़िल मुवज़्ज़िन हुज्जाज बिन मसरूक़ की बारी आयी और हुज्जाज की कुर्बानी ने यह वाज़ेह कर दिया कि यज़ीद के लश्कर की निगाह में दाइये हक़ की कोई क़ीमत नहीं है और यह फ़ौज अज़ान और नमाज़ की भी किसी अहम्मीयत की क़ाएल नहीं है। वरना जो इन्सान छः माह से मुस्तक़िल नमाज़ की दावत दे रहा है और हर नमाज़ के वक़्त बुलन्द आवाज़ से अज़ान दे रहा है उसके इस शरफ़े मुअज़्ज़िनियत का तो ख़याल किया जाता और उस पर तलवार न उठाई जाती।

हुज्जाज की शहादत के बाद सवार बिन अबी उमैर ने कुर्बानी पेश की और उसके बाद इमाम हुसैन[अ०] के लश्कर के आख़िरी सहाबी सुवैद बिन उमरू बिन अबी मुताअ् मैदान में आये और उनकी कुर्बानी के साथ असहाब व अन्सार की कुर्बानी का सिलसिला तमाम हो गया और इमाम हुसैन[अ०] के जुमला असहाब राहे ख़ुदा में काम आ गये। जिससे अन्दाज़ा होता है कि नमाज़े ज़ोह्र के हंगाम इमामे आली मक़ाम के साथ नमाज़ अदा करने

1. रद करना, मिटाना

वाले असहाब सिर्फ़ कुछ लोग थे जिन्होंने ज़ोहर के बाद कुर्बानी पेश की है वरना सब पहले हमले में या उसके फ़ौरन बाद राहे खुदा में काम आ चुके थे।

इसके बाद अइज़्ज़ा और बनी हाशिम के जवानों की बारी आयी।

बनी हाशिम के शहीदों की तरतीब के बारे में उलमा व अअ्लाम के दरमियान मुख़्तलिफ़ क़िस्म के इख़्तिलाफ़ात पाये जाते हैं और मुअर्रिख़ीन ने भी मुख़्तलिफ़ तरतीब के साथ इन कुर्बानियों का तज़केरा किया है। लेकिन तमाम बयानात के देखने के बाद जो तरतीब सामने आती है उसका अन्दाज़ा इस एक हक़ीक़त के अन्दाज़े के बाद बिलकुल आसान हो जाता है कि कर्बला के शहीदों को "शोहदाए बनी हाशिम" ज़रूर कहा जाता है और यह सब मुवर्रिसे[1] आला के एतेबार से हाशमी सयादत व शराफ़त ही के वारिस हैं। लेकिन हक़ीक़त बात यह है कि इनका कोई तअल्लुक़ जनाबे हाशिम की दीगर औलाद से नहीं था और यह सब नस्ले अबूतालिब से तअल्लुक़ रखते थे और इस एतेबार से यह कहना बिलकुल सही है कि कर्बला की कुर्बानगाह पर सिर्फ़ औलादे अबूतालिब ने अपनी जानों का नज़राना पेश किया है और हक़ीक़ी इस्लाम अपनी बक़ा में सिर्फ़ अबूतालिब की औलाद का शर्मिन्दए एहसान है। इसके अलावा हाशिम की औलाद में कोई ऐसा नहीं है जिसका कोई एहसान इस्लाम की गर्दन पर हो। बल्कि सबकी गर्दन पर इस्लाम और औलादे अबूतालिब का एहसान है कि उन्होंने कुर्बानी देकर इस्लाम को बचा लिया और मुसलमान को मुसलमान कहलाने का मौक़ा फ़राहम किया वरना मुसलमान होना भी एक जुर्म होता और किसी इन्सान में इस क़द्र हिम्मत न होती कि बनी उमय्यः के दरिन्दों के मुक़ाबले में अपने इस्लाम का एलान करता और शआएरे इस्लामी पर अमल पैरा हो सकता।

1. मीरास पहुंचाने वाला

अबूतालिब[अ॰] की औलाद को निगाह में रखने के बाद कुर्बानियों की तरतीब का अन्दाज़ा करना बड़ी हद तक आसान हो जाता है। सिर्फ़ एक बात का लेहाज़ रखना ज़रूरी होगा कि कर्बला में हज़रत अली अकबर[अ॰] की हैसियत दीगर शुहदाए बनी हाशिम से क़द्रे मुख़्तलिफ़ थी और वह इस बुनियाद पर कि अली अकबर[अ॰] हर एतेबार से रसूले अकरम[स॰] से मुशाबेहत रखते थे और इमाम हुसैन[अ॰] के पास हुज्जत तमाम करने के लिये अली अकबर[अ॰] से बेहतर कोई ज़रीआ नहीं था और इसलिये आपने कर्बला के जेहाद के आग़ाज़ का काम अली अकबर[अ॰] के हवाले कर दिया, सुब्हे आशूरः की अज़ान अली अकबर[अ॰] ने दी ताकि यज़ीद की फ़ौज रसूले अकरम[स॰] का लहजा सुनकर अपनी ग़लती और बेदीनी की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाये और इस तरह हलाक भी हो तो दलील और हुज्जत के क़याम के बाद इमाम हुसैन[अ॰] कुर्बानी भी पेश करें तो हुज्जत तमाम करने और हक़ व हक़्क़ानियत का एलान करने के बाद।

हज़रत अली अकबर[अ॰] की इसी ख़ुसूसियत की बिना पर इन्हें सुब्हे आशूरः अज़ान के लिये मुक़द्दम कर दिया गया और ज़ोह्र के बाद ख़ानदान की कुर्बानियों के मौक़े पर सबसे पहले मैदान में भेजा गया और रवायतों व ज़ियारतों में इन्हें सबसे पहले क़त्ल होने वाले के लफ़्ज़ से ताबीर किया गया है। वरना इस नुक्ते से मुँह फेर लिया जाये तो क़ुदरत ने अबूतालिब[अ॰] की औलाद को शहादत का शरफ़ भी इसी तरतीब के साथ इनायत फ़रमाया है जिस तरतीब के साथ इन्हें लेबासे वुजूद से आरास्ता किया था। यानी जनाबे अबूतालिब के चार बेटे थे। तालिब, अक़ील, जाफ़र और अली[अ॰] और हर एक–दूसरे से दस साल बड़ा था।

और इस एतेबार से सबसे पहले बेटे जनाबे तालिब थे जिनकी औलाद का कोई सुराग़ कर्बला की तारीख़ में नहीं मिलता है। उसके बाद उनसे दस साल छोटे जनाबे अक़ील थे

लेहाज़ा कुदरत ने कर्बला में शहादत का शरफ़ भी सबसे पहले औलादे अक़ील को अता किया और औलादे अक़ील में सफ़ीरे हुसैनी की हैसियत से जनाबे मुस्लिम[अ०] सबसे पहली कुर्बानी पेश कर चुके थे इसलिये कुदरत ने कर्बला में भी कुर्बानी का शरफ़ सबसे पहले उन्हीं के बेटे को अता किया जो मुस्लिम की कुर्बानी की कुबूलियत की अज़ीम तरीन दलील है।

कर्बला की तारीख़ लिखने वालों के बयान के मुताबिक़ सबसे पहले क़त्ल होने वाले जनाबे अली अकबर[अ०] के बाद सबसे पहले अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम मैदान में आये और बाप की जैसी शेराना शुजाअत का मुज़ाहेरा करके राहे हक़ में कुर्बान हो गये। इसके बाद यके बाद दीगरे आठ औलादे अक़ील काम आयीं।

जाफ़र बिन अक़ील, अब्दुर्रहमान बिन अक़ील, मुहम्मद बिन अक़ील, अब्दुल्लाह अकबर बिन अक़ील, मुहम्मद बिन अबी सईद बिन अक़ील, मुहम्मद बिन मुस्लिम बिन अक़ील और अली बिन अक़ील।

औलादे अक़ील की कुर्बानियों के बाद औलादे जाफ़रे तय्यार की बारी आयी इसलिये कि औलादे जनाबे अबूतालिब[अ०] में जनाबे जाफ़रे तय्यार जनाबे अक़ील से दस साल छोटे थे।

औलादे जाफ़र तय्यार में जनाबे अब्दुल्लाह बिन जाफ़र मुसालेह इमामत की बुनियाद पर मदीने में रह गये थे लेहाज़ा उनकी नियाबत में उनकी औलाद ने कुर्बानियाँ पेश कीं। औन बिन अब्दुल्लाह बिन जाफ़र जिनकी माँ जनाबे ज़ैनब[अ०] थीं और मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन जाफ़र और उबैदुल्लाह बिन जाफ़र जिनकी माँ कुछ तारीख़ लिखने वालों ने खूसाअ् को क़रार दिया है।

औलादे जाफ़रे तय्यार के बाद औलादे अली[अ०] की बारी आयी कि जनाबे अमीरूल मोमिनीन[अ०] जनाबे जाफ़रे तय्यार से दस साल छोटे थे। अलबत्ता औलादे अली[अ०] की कुर्बानी में जनाबे अब्बास[अ०] अलमदार ने यह एहतेमाम रखा कि पहले छोटे

भाईयों को राहे हक़ में क़ुर्बान किया और उसके बाद ख़ुद मैदान में आये और उसके दो बुनियादी असबाब थे :–

एक सबब यह था कि जनाबे अब्बास[अ०] लश्कर के अलमदार थे और लश्कर के अलमदार को आख़िरी मरहले तक लश्कर की निगरानी करना पड़ती है और दूसरा सबब यह था कि जनाबे अब्बास[अ०] इस बड़ी मुसीबत को भी बर्दाश्त करने का हौसला रखते थे और चाहते थे कि लश्कर, सरदार की निगरानी में जेहाद करे और उसकी हिदायतों के मुताबिक़ क़ुर्बानी पेश करे।

औलादे अली[अ०] में जनाबे अब्बास[अ०] ने सबसे पहले अब्दुल्लाह बिन अली[अ०] को भेजा। उसके बाद जाफ़र बिन अली[अ०] को रवाना किया और उनकी शहादत के बाद उसमान बिन अली[अ०] को राहे हक़ में क़ुर्बानी की दावत दी और आख़िर में ख़ुद भी क़ुर्बान हो गये।

इन हज़रात के अलावा भी औलादे अली[अ०] में दो नाम और ज़िक्र किये जाते हैं। मुहम्मद असग़र बिन अली[अ०] और अब्बास असग़र बिन अली[अ०]। लेकिन ये दोनों हज़रात जनाबे उम्मुल बनीन की औलाद में नहीं थे।

जनाबे अमीरूल मोमिनीन[अ०] की बराहेरास्त औलाद के क़ुर्बान हो जाने के बाद उनकी नस्ल की बारी आयी और वहाँ भी यही तरतीब बरक़रार रही कि इमाम हसन[अ०] बड़े भाई थे। तो उनकी औलाद पहले क़ुर्बान हुई और इमाम हुसैन[अ०] छोटे थे तो उनकी औलाद की क़ुर्बानी बाद में पेश हुई और उसे आख़िरी क़ुर्बानी क़रार दिया गया।

इमाम हसन[अ०] की औलाद में जिन शहीदों का ज़िक्र किया जाता है उनमें अब्दुल्लाह बिन हसन, क़ासिम बिन हसन नुमायाँ हैसियत रखते हैं। जिनके बाद इमाम हुसैन[अ०] की औलाद में हज़रत अली असग़र[अ०] की क़ुर्बानी पेश की गयी और इस तरह जनाबे अली अकबर[अ०] की हुज्जत तमाम करने की हैसियत और

जनाबे अब्बास[अ०] की अलमदारी व सरदारी की हैसियत को अलग कर लिया जाये तो कर्बला में औलादे अबूतालिब[अ०] ने नेहायत दरजा मुनज़्ज़म और मुरत्तब अन्दाज़ से कुर्बानियाँ पेश की हैं और हक़ व हक़्क़ानियत को बाक़ी रखने और दीन व मज़हब को ज़िन्दगी देने में अबूतालिब[अ०] की औलाद के अलावा किसी का कोई हिस्सा नहीं है। अबूतालिब[अ०] न होते तो इस्लाम पेश न हो सकता और अबूतालिब[अ०] की औलाद न होती तो इस्लाम ज़िन्दा न रह सकता। *वस्सलामु अलैहिम व-रहमतुल्लाहि व-ब-र-कातुह०*

तमहीदे कर्बला

1- इमाम हुसैन[अ०] वलीद के दरबार में

हाकिम देख ! हम अहलेबैते[अ०] नुबूवत और मुअद्दुने रिसालत हैं, हमारे घर में मलाएका नाज़िल होते हैं। उमूर की इब्तेदा व इन्तेहा हम से है। यज़ीद एक शराबी और क़ातिले नफ़्से मोहतरम शख़्स है। उसका फ़ुस्क़ व फ़ुजूर वाज़ेह है। और मुझ जैसा इन्सान इस जैसे शख़्स की बैअत नहीं कर सकता है। अलबत्ता सुब्ह होने दे उस वक़्त ग़ौर किया जायेगा कि हम में वाक़ेअन ख़िलाफ़त का मुस्तहक़ कौन है ?

(मुसीरूल हिज़ान इब्ने नुमा हिल्ली)

2- इमाम हुसैन[अ०] क़ब्रे रसूल[स०] पर

ख़ुदा के रसूल[अ०] आप पर मेरा सलाम ! मैं हुसैन[अ०] इब्ने फ़ातिमः[अ०] आपका बेटा और आपकी बेटी का बेटा हूँ। आपने मुझे अपना वारिस बनाकर छोड़ा है। लेकिन गवाह रहियेगा कि इस उम्मत ने मुझे छोड़ दिया है और मेरी हिफ़ाज़त नहीं की है। अब आपकी बारगाह में मेरी फ़रियाद है यहाँ तक कि मैं ख़ुद आपकी बारगाह में हाज़िर हूँ।

(बिहारूल अनवार जिल्द–20 पेज–172)

परवरदिगार ! यह तेरे नबी हज़रत मुहम्मद[स०] की क़ब्र है और मैं तेरे नबी[स०] की बेटी का बेटा हूँ। जो हालात पेश आये हैं वह तुझे मालूम हैं। मैं नेकियों को दोस्त रखता हूँ, बुराईयों से नफ़रत करता हूँ। ऐ ज़ुल–जलाल वल–इकराम ! तुझे साहिबे क़ब्र का वास्ता – मेरे लिए वह चीज़ें पसन्द करना जिसमें तेरी और पैग़म्बर[स०] की रिज़ा हो। !

3- इमाम हुसैन[अ०] और मुहम्मद हनफ़ीयः

भाई ! खुदा आपको जज़ाए ख़ैर दे कि आपने नसीहत फ़रमायी और अपने एतेबार से नेक मशवेरा दिया। लेकिन मैं मक्के की तरफ़ जाने का अज़्म कर चुका हूँ और मेरा और मेरे भाईयों और अक़रबा का अज़्म मुकम्मल है। इन सबका ख़याल एक और सबका इरादा मुत्तहिद है। आपको इख़्तियार है आप चाहें तो मदीने में रहें और मुझे दुश्मन की नक़्ल व हरकत से बाख़बर करते रहें।

(मक़तल मुहम्मद बिन अबीतालिब)

4- इमाम हुसैन[अ०] और हज़रत उम्मे सलमः

नानी ! मुझे मालूम है कि मुझे ज़ुल्म व सितम के साथ शहीद होना है। मशीयत यही है कि मेरे घर वाले दर–बदर फिराये जायें, मेरे बच्चे ज़िब्ह किये जायें, उन्हें क़ैदी बनाया जाये और फ़रियाद करें तो कोई उनका फ़रियाद सुनने वाला न हो, इसी में दीन की बक़ा और हयात है।

नानी ! मैं आज न जाऊँगा तो कल जाऊँगा, और कल न जाऊँगा तो परसों जाऊँगा। मौत से कोई मफ़र नहीं है। मैं वह दिन और साअत भी जानता हूँ जब मुझे क़त्ल होना है और वह जगह भी जानता हूँ जहाँ मुझे दफ़्न होना है। गोया मैं वह जगह देख रहा हूँ और आप चाहें तो आपको भी दिखा दूँ। यह कहकर जगह दिखा दी और एक मुश्ते ख़ाक उठाकर जनाबे उम्मे सलमः को दे दी कि जब यह मिट्टी खून हो जाये तो समझ लीजिये कि मेरा हुसैन[अ०] शहीद हो गया।

(मक़तले अवालिम पेज–27)

5- इमाम हुसैन[अ०] और अब्दुल्लाह इब्ने उमर

ऐ अब्दुल्लाह ! दुनिया की पस्ती की इससे बड़ी मिसाल क्या होगी कि हज़रत यहया बिन ज़करिया का सर एक ज़िनाज़ादे के सामने पेश किया गया और मेरा सर भी एक ऐसे

ही आदमी के सामने पेश किया जायेगा। क्या तुम्हें नहीं मालूम कि बनी इसराईल तुलूए फ़ज्र से तुलूए आफ़ताब तक के दरमियान सत्तर 70 अम्बिया को क़त्ल करके यूँ कारोबार करते थे जैसे कोई वाक़िआ हुआ ही न हो। इसके बाद भी अल्लाह ने फ़िलफ़ूर बदला नहीं लिया। लेकिन थोड़े ही अरसे में उन्हें फ़ना कर दिया। (लहूफ़)

6- वसीयतनामा इमाम हुसैन[अ०]

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम – यह हुसैन[अ०] इब्ने अली[अ०] की वसीयत है मुहम्मद हनफ़ीयः के नाम —— हुसैन[अ०] गवाही देता है कि अल्लाह एक है, उसका कोई शरीक नहीं है, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स०] उसके बन्दे और रसूल हैं। उनका पैग़ाम हक़ और जन्नत व जहन्नम सब बरहक़ हैं। क़यामत बहरहाल आने वाली है इसमें किसी शक और शुब्हे की गुंजाइश नहीं है उस वक़्त अल्लाह सबको क़ब्रों से निकालेगा।

मैं किसी तफ़रीह, ग़ुरूर, फ़साद और ज़ुल्म के इरादे से नहीं निकल रहा हूँ। मैं अपने नाना की उम्मत की इस्लाह चाहता हूँ। मेरा मक़सद है कि नेकियों का हुक्म दूं और बुराईयों से रोकूं, अपने बाप और नाना की सीरत पर चलूँ। इसके बाद जो मेरी बात को क़बूल करेगा तो अल्लाह ऊला बिल हक़ है, और जो रद्द करेगा उसके रद्द कर देने पर सब्र करूँगा, यहाँ तक कि ख़ुदा मेरे और उसके दरमियान फ़ैसला कर दे और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है।

यह मेरी वसीयत है और मेरी तौफ़ीक़ात अल्लाह की तरफ़ से हैं। उसी पर भरोसा है और उसी की तरफ़ तवज्जोह है। (मक़तल अवामिल पेज–54)

7- इमाम हुसैन[अ०] का ख़त बसरा वालों के नाम

अम्मा बअ्द ! अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद[स०] को मुन्तख़ब करके अपना नबी और रसूल बनाया और फिर अपनी बारगाह में

बुला लिया। उन्होंने बन्दगाने ख़ुदा को नसीहत की, पैग़ामे इलाही को पहुँचवाया। हम उनके अहलेबैत[अ०], औलिया और वारिस हैं। क़ौम ने हमारे ऊपर सबक़त की और हमने बर्दाश्त कर लिया कि हम इफ़्तिराक़ को नापसन्द करते हैं और आफ़ियत चाहते हैं। और हमें मालूम है कि हम इसके सबसे ज़ियादा हक़दार हैं। मैं इस पैग़ाम के ज़रीए तुमको ख़ुदा की किताब और रसूल[स०] की सुन्नत की दावत देता हूँ। सुन्नत को मुर्दा बना दिया गया है और बिद्अत ज़िन्दा की जा रही है। अगर तुम लोग मेरी बात मानोगे तो मैं तुम्हें हक़ की हिदायत करूँगा।

(तबरी पेज–200)

8- कूफ़े वालों के ख़त का जवाब

तुमने मेरे आने के बारे में जिस इश्तियाक़ का इज़हार किया है उसका हाल मुझे मालूम हुआ। मैं इस वक़्त अपने चचाज़ाद भाई और मेरे घर वालों में से एक मोअ्तबर फ़र्द मुस्लिम बिन अक़ील को भेज रहा हूँ ताकि हक़ीक़त हाल वाज़ेह हो जाये। अगर सूरतेहाल वही है जिसका तुम लोगों ने इज़हार किया तो मैं जल्द तुम्हारी तरफ़ आ रहा हूँ।

(तबरी जिल्द–6 पेज–198)

9- मक्के से रवानगी

ख़ुदा का शुक्र है। सारी क़ूवत उसी के सहारे है। सलवात व सलाम हज़रत मुरसल[स०] पर। मौत इब्ने आदम के गले का हार है। मैं अपने बुज़ुर्गों से मिलने का मुशताक़ हूँ जैसे याकूब[अ०] यूसुफ़[अ०] से मिलने के मुशताक़ थे। मैं अपने आख़िरी मरकज़ तक बहरहाल जाऊँगा। बल्कि मैं अपनी आँखों से देख रहा हूँ कि बनी उमय्यः के दरिन्दे इन्सान मुझको नवावीस व कर्बला के दरमियान टुकड़े–टुकड़े कर रहे हैं और अपने ज़ुल्म व सितम के पेट भर रहे हैं। ख़ुदा की मर्ज़ी हम अहलेबैत[अ०] की मर्ज़ी है, हम उसके इम्तेहान पर साबिर हैं, वही बेहतरीन अज्र

देने वाला है जिससे आँखों की ठण्डक हो और ख़ुदा का वादा पूरा हो। जो मेरे साथ चलना चाहता हो उसे मालूम रहे कि मैं सुब्ह जा रहा हूँ। बक़ाये इलाही के लिये नफ़्स आमादा है तो मेरे साथ चले वरना नहीं।

(लहूफ़ पेज–33)

10- इमाम हुसैन[अ०] और इब्ने सअ्द

इब्ने सअ्द ! क्या तू मुझसे जंग करना चाहता है ? क्या तेरे दिल में ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं है ? क्या तुझे नहीं मालूम कि मैं किसका बेटा हूँ। अब भी इन्हें छोड़कर मेरे साथ आ जाओ तो अल्लाह से क़रीब हो जाओगे।

अगर मकान के गिरा दिये जाने का ख़ौफ़ है तो मैं हेजाज़ में बेहतरीन मकान दे दूँगा।

ख़ुदा जाने तुझे क्या हो गया है। अल्लाह तुझे तेरे बिस्तर पर ज़िब्ह करे और क़यामत के दिन माफ़ न करे। ख़ुदा की क़सम तू इराक़ के दानए गन्दुम से बहरयाब न हो सकेगा।

(मक़तल ख़्वारज़मी पेज–225)

11- शबे आशूर

मैं ख़ुदा की हम्द व सना और हर सख़्ती व आराम पर उसका शुक्रिया अदा करता हूँ। परवरदिगार तेरा शुक्र है कि तूने हमें नुबूवत के ज़रीये मोहतरम बनाया, क़ुर्आन का इल्म दिया, दीन का फ़ह्म दिया, हमारे लिये चश्म व गोश व दिल क़रार दिये और हमें मुश्रिकीन में से नहीं बनाया।

अम्मा बअ्द ! मैं अपने असहाब से ज़ियादा बावफ़ा असहाब और अपने अहलेबैत[अ०] से ज़ियादा नेक किरदार अहलेबैत[अ०] नहीं जानता हूँ। मेरे नाना ने ख़बर दी है कि मैं इराक़ में कर्बला की ज़मीन पर उतारा जाऊँगा और वहीं मेरी शहादत होगी और अब उसका हंगाम आ चुका है। कल मेरी शहादत होगी। मैं तुम सबको इजाज़त देता हूँ कि रात का परदा हाएल

है। हर शख़्स मेरे घर वालों में से एक–एक का हाथ पकड़ ले और जहाँ चाहे चला जाये। क़ौम मेरे खून की प्यासी है, मुझे पाकर तुम्हारी पूछताछ न करेगी।

(इरशाद मुफ़ीद – तबरी जिल्द–6 पेज–239)

12- रोज़े आशूर

ऐ लोगो ! मेरी बात सुनो और जल्दबाज़ी न करो कि मैं अपने हक़ को अदा कर लूँ और अपना उज़्र बयान कर लूँ। इसके बाद तुम क़बूल कर लो और तसदीक़ कर दो और मेरे साथ इन्साफ़ करो तो तुम्हारी नेकबख़्ती है वरना फिर खुदा के फ़ैसले के लिये तैयार हो जाओ कि वही मेरा मालिक और सरपरस्त है।

सारी तारीफ़ उस खुदा के लिये है जिसने दुनिया को पैदा करके उसे महल्ले फ़ना व ज़वाल बनाया है जहाँ हर वक़्त एक न एक तग़य्युर होता रहता है। धोखा खाया हुआ वह है जिसे दुनिया धोखा दे दे, और शक़ी व बदबख़्त वह है जो इस फ़ित्ने का शिकार हो जाये। ख़बरदार ! तुम्हें यह दुनिया धोखा न दे दे। यह हर उम्मीदवार की उम्मीद तोड़ देती है और हर लालची को मायूस कर देती है। मैं देख रहा हूँ कि तुमने इस बात पर एका किया है जिसमें परवरदिगार का ग़ज़ब और उसकी नाराज़गी है। यह काम अज़ाब का सबब और रहमत की दूरी का सबब है। वह बेहतरीन रब है और तुम बद्तरीन बन्दे। तुमने इताअत का इक़रार किया, नबी[स०] पर ईमान लाये और फिर उनकी ज़ुर्रियत पर हुजूम करके उन्हें क़त्ल करना चाहते हो। शैतान तुम पर ग़ालिब आ गया है और तुम्हें खुदा की याद से ग़ाफ़िल बना दिया है। खुदा तुम्हारा बुरा करे क्या बुरा इरादा तुम्हारा है। *इन्नालिल्लाह*.......यही वह क़ौम है जो ईमान के बाद काफ़िर हो गयी है और ज़ालिमीन के लिये हलाकत ही हलाकत है।

ऐ लोगो ! ज़रा मुझे पहचानो मैं कौन हूँ। फिर फ़ैसला करो कि मेरा क़त्ल तुम्हारे लिये जाएज़ है। क्या मैं तुम्हारी नबी[स०] की बेटी का बेटा नहीं हूँ ? क्या मैं उनके वसी और इब्ने अम अव्वलुल मोमिनीन वल मुसद्दिक़ीन का बेटा नहीं हूँ ? क्या हज़रत हम्ज़ः[अ०] सय्यदुश्शुहदा मेरे बाप के चचा नहीं हैं ? क्या हज़रत जाफ़र तय्यार[अ०] मेरे चचा नहीं हैं ? क्या पैग़म्बर[स०] के इस इरशाद की ख़बर नहीं है कि हसन[अ०] व हुसैन[अ०] जवानाने जन्नत के सरदार हैं ?

अगर मेरी बातें सहीं हैं और तुम तसदीक़ करते हो जैसा कि यह सही है कि मेरा क़ौल हक़ है, इसलिये कि मैंने कभी कलमए बातिल से ज़ुबान को आशना नहीं किया कि इसमें ख़ुदा की नाराज़गी और बन्दे का नुक़सान होता है। तो यह सब क्या है ? और अगर मेरी तकज़ीब करते हो, तो अभी जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह अन्सारी, अबू सईद ख़ुदरी, सह्ल बिन सअ्द साअदी, ज़ैद बिन अरक़म, अनस बिन मालिक जैसे असहाब ज़िन्दा हैं उनसे पूछ लो, यह बतायेंगे कि यह इरशादे रसूल[स०] है या नहीं ? और क्या ये सारी बातें तुम्हें मेरे क़त्ल से बाज़ नहीं रख सकतीं ?

अगर तुम्हें मेरी बातों में शक हो तो क्या इस बात में है कि नबी का नवासा हूँ ? तो बताओ मशरिक़ व मग़रिब के दरमियान मेरे अलावा कौन रसूल[स०] का नवासा है ? क्या मुझसे किसी का बदला ले रहे हो या मैंने तुम्हारा कोई माल तबाह कर दिया है या किसी ज़ख़्म का बदला ले रहे हो...............?।

(तबरी 6 पेज–243)

13– दूसरा ख़ुत्बा रोज़े आशूर

ऐ ज़लालतों की जमाअत ! तुम्हारे लिये हलाकत व बर्बादी है कि तुमने हमसे फ़रियाद की और हम तुम्हारी फ़रियाद को पहुँचे तो तुमने वह तलवार हमारे ख़िलाफ़ खींच ली जो हमारे दुश्मनों पर खींचना चाहिये थी और वह आग हमारे

ख़िलाफ़ भड़का दी जो हम तुम्हारे दुश्मनों के ख़िलाफ़ भड़काना चाहते थे। तुमने दुश्मनों का साथ दिया और हक़ व इन्साफ़ का ख़याल नहीं किया, तुम्हें उनसे क्या मिलने वाला है ?..........तुम सरबराहों के ग़ुलाम, किताब के नज़र अन्दाज़ करने वाले, कलिमात में तहरीफ़ करने वाले और गुनाहगार जमाअत के अरकान हो। शैतान तुम्हारे ऊपर ग़ालिब है। तुमने सीरतों को फ़रामोश कर दिया है, दुश्मनों का साथ दे रहे हो, और हमसे अलग हो रहे हो। यह तुम्हारा पुराना तरीक़ा है उसी पर तुम्हारी बुनियादें क़ायम हैं। तुम बद्तरीन फल हो।

यह नातहक़ीक़ इब्ने नातहक़ीक़ – इसने मुझे दोराहे पर खड़ा कर दिया है कि तलवार निकाल लूँ या ज़िल्लत बर्दाश्त कर लूँ। ज़ाहिर है कि ज़िल्लत गवारा नहीं कर सकता। यह मेरे ख़ुदा और रसूल[स०] की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ और मेरी परवरिश की पाकीज़ा आग़ोश और मेरे बुज़ुर्गों के पाक व पाकीज़ा नफ़्सों के तक़ाज़ों के ख़िलाफ़ है। मैं कमीनों की इताअत को शरीफ़ों की तरह शहादत पर मुक़द्दम करूँ यह नामुमकिन है। मैं अपने मुख़्तसर साथियों को लेकर राहे ख़ुदा में आगे बढ़ रहा हूँ।..........

(लहूफ़ पेज–56)

14– आख़िरी दुआ

ऐ ख़ुदा ! ऐ बुलन्द मकान, अज़ीम जब्रवत, शदीद तक़वा, मख़लूक़ात से बेनयाज़, किब्रियाई के मालिक, हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाले, रहमतों के एतेबार से क़रीब, वादों के सच्चे, नेअ्मतों के पूरा करने वाले, बेहतरीन इम्तेहान लेने वाले, तुझे बुलाया जाता है तो तू क़रीब है, मख़लूक़ात पर मुहीत[1] है, तौबा का क़बूल करने वाला है, इरादों पर क़ादिर है, जो चाहता है हासिल कर लेता है, शुक्रगुज़ारों का शुक्रिया क़बूल करता है, याद करने वालों को याद रखता है। मैं एहतेयाज के साथ तुझे पुकार रहा हूँ और फ़क़्र व फ़ाक़े के साथ तेरी बारगाह की तरफ़

1. घेरा, गोलाई

आ रहा हूँ, मैं रंजीदा व परेशान हाल हूँ और तुझ से मदद माँग रहा हूँ। तुझे काफ़ी समझ कर तुझ पर भरोसा करता हूँ।

परवरदिगार ! मेरे और इस क़ौम के बीच फ़ैसला फ़रमा। इन्होंने मुझे धोखा दिया, नज़र अन्दाज़ कर दिया, क़त्ल किया, हम तेरे रसूल[स०] की इतरत व ज़ुर्रियत हैं जिन्हें तूने रिसालत के लिये और 'वही' के लिये अमीन बनाया है। हमें कशाइश अहवाल अता फ़रमा, तू अरहमर्राहेमीन है। मैं तेरे फ़ैसले पर साबिर हूँ। तेरे अलावा कोई खुदा और तेरे सिवा कोई मअ्बूद नहीं है, तू ही सबका फ़रियादरस है। मैं तेरे हुक्म पर सब्र कर रहा हूँ। ऐ बेसहारों के सहारे, हमेशा रहने वाले........मेरे और इनके बीच बेहतरीन फ़ैसला फ़रमा कि तुझसे बेहतर फ़ैसला करने वाला कोई नहीं है।

(रियाज़ुल मसाएब – मिस्बाह कफ़्अमी इक़बाल)

शोहदाए कर्बला

1- औलादे अबूतालिब[अ०]

हज़रत इमाम हुसैन[अलैहिस्सलाम], हज़रत अली अकबर[अ०], हज़रत अली असग़र[अ०], हज़रत अब्बास[अ०], हज़रत अब्दुल्लाह बिन अली[अ०], हज़रत उसमान बिन अली[अ०], हज़रत जाफ़र बिन अली[अ०], हज़रत अबूबक्र बिन अली[अ०], हज़रत अबूबक्र बिन हसन बिन अली[अ०], हज़रत क़ासिम बिन हसन[अ०], हज़रत अब्दुल्लाह बिन हसन[अ०], हज़रत औन व मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन जाफ़र, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन अक़ील[अ०], हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिम[अ०], हज़रत मुहम्मद बिन सईद बिन अक़ील[अ०], हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अक़ील[अ०], हज़रत जाफ़र बिन अक़ील[अ०]।

2- शोहदाए बनी असद

अनस बिन हर्स असदी, हबीब बिन मज़ाहिर असदी, मुस्लिम बिन औसजः असदी, क़ैस बिन मुस्हर असदी।

3- शोहदाए आले हमदान

अबू सुमामः अमरू बिन अब्दुल्लाह, बुरैर हमदानी, आबिस शाकरी, हन्ज़लः बिन सअ्द, अब्दुर्रहमान रजी, सैफ़ बिन हर्स, अमरू बिन अब्दुल्लाह हमदानी।

4- मज़हजी शोहदा

जुनादः बिन हर्स, मजमअ् बिन अब्दुल्लाह, नाफ़ेअ् बिन हेलाल, हुज्जाज बिन मसरूक़।

5- अन्सारी शोहदा

अमरू बिन क़रज़ः, अब्दुर्रहमान बिन अब्दुर्रब, जुनादः बिन कअ्ब, अमरू बिन जुनादः, नुऐम बिन अजलान, सअ्द बिन हर्स।

6- बेजिल्ली और ख़शअमी शोहदा

जुहैर बिन क़ैन, सलमान बिन मज़ारिब, सदीद बिन उमर, अब्दुल्लाह बिन बशीर।

7- किन्दी और ग़ेफ़ारी शोहदा

यज़ीद बिन ज़ियाद किन्दी, हर्ब बिन अम्र क़ैस, ज़ाहिर बिन अमरू, बिशर बिन अमरू, अब्दुल्लाह बिन उरवः ग़ेफ़ारी, जौन गुलाम अबूज़र ग़फ़ारी।

8- कलबी शोहदा

अब्दुल्लाह बिन उमैर, अब्दुल आला बिन यज़ीद, सालिम बिन अमरू।

9- अजदी शोहदा

क़ासिम बिन हबीब, जुहैर बिन सलीम, नोअ्मान बिन अमरू।

10- अबदी शोहदा

यज़ीद बिन सबीत, आमिर बिन मुस्लिम, सैफ़ बिन मालिक।

11- तैमी व ताई शोहदा

जाबिर बिन हुज्जाज, मस्ऊद बिन हुज्जाज, अब्दुर्रहमान बिन मस्ऊद, बक्र बिन हई। अम्मार बिन हस्सान ताई।

12- तुग़लबी शोहदा

ज़रग़ामः बिन मालिक, कुनानः बिन अतीक़।

13- जहनी व तमीमी शोहदा

उक़्बः बिन सल्त, हुर बिन यज़ीद तमीमी, उक़्बः बिन सल्त।

14- मुतफ़र्रिक़ शोहदा

जुबलः बिन अली शैबानी, क़अ्नब बिन उमर, अब्दुल्लाह बिन यक़्तुर।

इन्क़ेलाबे कर्बला

मौजूद दौर में आमतौर से इन्क़ेलाब का मफ़हूम यह समझा जाता है कि एक ही नेज़ाम के मानने वालों में एक नाअह्ल को कुर्सी से उतार कर दूसरे को उसकी जगह पर बिठा दिया जाये।

और इससे बड़ा इन्क़ेलाब यह हुआ कि नेज़ाम में भी जुज़वी तबदीली कर दी जाये और पार्टी के मन्शूर के मुताबिक़ मुल्क का नया नेज़ामे हुकूमत मुरत्तब कर लिया जाये।

तीसरी क़िस्म इन्क़ेलाब की यह हो सकती है कि नेज़ाम की बुनियादी शक्ल को मुख़्तलिफ़ कहा जाये और दरहक़ीक़त एक ही क़िस्म के इन्सानों को मुख़्तलिफ़ नामों से हुकूमत के तख़्त पर बिठाया जाये। पहले इसी क़िस्म का इन्सान शहंशाह के नाम तख़्त नशीन हो, और फिर बदले हुए हालात में वैसा ही इन्सान या वही इन्सान सद्र जम्हूरिया के नाम से तख़्त नशीन हो जाये और उसका नाम "बुनियादी इन्क़ेलाब" रख दिया जाये।

चौथी क़िस्म इन्क़ेलाब की यह होती है कि सरहदों के मुहाफ़िज़ हुदूदे मुम्लेकत के अन्दर दाख़िल हो जायें और बज़ोर ताक़ते क़दीम नेज़ाम के नेफ़ाज़ का अमल तेज़तर कर दें जिसके बारे में उनका अक़ीदा यह हो कि गुज़िश्ता हुकूमत उसे नाफ़िज़ करने में नाकाम रही है और उसी की वजह से मुल्क में बदअमनी फैल गयी है जिसे फ़ौजी इन्क़ेलाब कहा जाता है। इस इन्क़ेलाब में हुकूमत का नेज़ाम और दस्तूर में कोई बुनियादी तबदीली नहीं होती है सिर्फ़ नेफ़ाज़ के अमल को तेज़तर बनाया जाता है और अपनी मक़बूलियत में इज़ाफ़े के लिये कुछ ख़ुशगवार तबदीलियों का नाम ले लिया जाता है वरना मुल्की दस्तूर बिलकुल वही

दस्तूर होता है जिसका नेफ़ाज़ ज़रूरी था और गोया कि साबिक़ हुकूमत के ज़ेरे असर नहीं हो सकता है।

पाँचवीं क़िस्म एक मख़लूत इन्क़ेलाब की है जो बयक वक़्त सियासी भी होता है और फ़ौजी भी। यानी फ़ौजी हुक्मुराँ अपने इन्क़ेलाब को अवामी ज़ाहिर करने के लिये एक फ़र्ज़ी इलेक्शन करा देता है और फिर उसी फ़ौजी इन्क़ेलाब को अवामी और सियासी इन्क़ेलाब का नाम दे दिया जाता है।

इन तमाम क़िस्मों में जो बात मुश्तरका तौर पर पायी जाती है वह यह है कि सारे रहनुमा एक ही जैसे होते हैं और उन्हें अवामी ताईद हासिल हो या न हो, ख़ुदाई ताईद बहरहाल हासिल नहीं होती है और इसके नतीजे में इनके इन्क़ेलाब में कम व बेश वह सारी कमज़ोरियाँ पायी जाती हैं जो साबिक़ नेज़ाम में राएज थीं।

दौरे हाज़िर में कुछ मक़ामात पर इन्क़ेलाब की एक जदीद तरीन शक्ल निकल आयी है जिसे बज़ाहिर मज़हबी इन्क़ेलाब कहा जाता है लेकिन हक़ीक़तन वह भी एक नीम सियासी इन्क़ेलाब होता है जैसे कि दौरे हाज़िर की अकसर इस्लामी तहरीकात में देखा जाता है कि नाम इस्लामी इन्क़ेलाब का लिया जाता है और भरोसा मशरिक़ या मग़रिब पर किया जाता है जिनका इस्लाम से कोई तअल्लुक़ नहीं होता है। या मौजूदा हाकिमे वक़्त ही से यह मुतालेबा किया जाता है कि वह इस्लामी नेज़ाम को राएज करे और तहरीक में यह बात मुज़मिर[1] होती है कि जिस हाकिम ने आज तक इस्लाम राएज नहीं किया और इस्लाम से यगाना होकर अपना इक़्तेदार जमाये रखा है, जिसने इस्लाम के नेसाब की चार किताबें भी नहीं पढ़ी हैं। उसका इक़्तेदार तसलीम शुदा है सिर्फ़ उसका नेज़ाम तसलीम नहीं है और यह नतीजा उस ज़हनी ग़ुलामी या ज़मीर फ़रोशी का होता है जो इन्क़ेलाबी लोगों को विरासत में मिली है वरना इस्लामी इन्क़ेलाब के मानी तो यह हैं कि सबसे पहले नाअह्ल

1. पोशीदा

हुक्मुराँ को माजूल[1] किया जाये जिसने अब तक इस्लाम से कत्ए नज़र करके हुकूमत की है और खुदा के मुल्क को दूसरे खुदा के रास्ते पर चलाया है और अब हालात की मजबूरी के तहत इस्लामी नेज़ाम नाफ़िज़[2] करना चाहता है। ऐसे हुक्मुराँ के इक़्तेदार का बाक़ी रखना और इस्लामी नेज़ाम के नेफ़ाज़ का मुतालबा करना एक सियासी मक्कारी है जिसे इस्लामी इन्क़ेलाब का नाम दिया जा रहा है वरना इस अमल का इस्लाम से कोई तअल्लुक़ नहीं है।

इमाम मूसा बिन जाफ़र[अलैहिस्सलाम] ने अपने दौर के हाकिमे वक़्त से यही बात कही थी जब उसने अपनी शराफ़त व अदालत का मुज़ाहेरा करने के लिये हज़रत[अ०] से यह मुतालेबा किया कि मैं तमाम साहिबाने हुकूक़ के हुकूक़ वापस करना चाहता हूँ आप भी फ़िदक के हुदूद का तअय्युन कर दें ताकि मैं उसे आपके हवाले कर दूँ और इस तरह आपके हक़ से भी सुबुकदोश हो जाऊँ, तो आपने उस दौर के पूरे ख़त्तए इस्लाम का रक़्बा शुमार करा दिया था कि मशरिक़ व मग़रिब और शुमाल व जुनूब में दरहक़ीक़त फ़िदक एक पूरे आलमे इस्लाम का नाम है और हाकिमे वक़्त हैरतज़दा रह गया था कि मैंने तो इतनी बड़ी जागीर के बारे में सोचा भी नहीं था मैं तो एक बाग़ या एक जागीर के ख़याल में था जिसके दे देने के बाद अपने इक़्तेदार पर कोई असर नहीं पड़ सकता था। लेकिन यह तो पूरे आलमे इस्लाम का रक़्बा शुमार करा रहे हैं जिसके बाद अपनी हुकूमत का कोई तसव्वुर ही नहीं रह जाता है।

इमाम मूसा बिन जाफ़र यही वाज़ेह करना चाहते थे कि ज़ालिम के तख़्ते हुकूमत पर रहते हुए मज़लूम के हुकूक़ की अदायगी का कोई सवाल ही नहीं पैदा होता है। हमारे हुकूक़ में तो खुद यह मुम्लेकते इस्लामिया भी शामिल है जिसे बहक़्क़े विरासते पैग़म्बर[स०] और नब्से आयाते क़ुर्आनिया हमें मिलना

1. बेकार किया हुआ, 2. लागू करना

चाहिये था और इस मुम्लेकत पर क़ब्ज़ा बाक़ी रखने के बाद हमारे हुकूक़ की बहाली का कोई सवाल ही नहीं पैदा होता है।

यह दरहक़ीक़त इस नुक्ते की वज़ाहत थी कि ज़ालिमीन के इक़्तेदार को बहाल रखते हुए इस्लामी इन्केलाब का ख़याल एक जाहिलाना ख़याल है जिसके वाक़ई कोई मानी नहीं हैं।

आसारे इन्केलाब

इन्केलाब की तमाम क़िस्में अपने आसार के एतेबार से भी मुख़्तलिफ़ होते हैं। कुछ क़िस्मों में सिर्फ़ जुज़्वी अमल दरआमद होता है और अस्ल नेज़ाम मुअत्तल ही रहता है। कुछ क़िस्मों में अमल दरआमद की मिक़दार ज़ियादा हो जाती है लेकिन नेज़ाम के असरात बदस्तूर बाक़ी रहते हैं। कुछ क़िस्मों में, अवाम में मोहतरम शख़्सीयत या एहतेराम की नौईयत में फ़र्क़ आ जाता है। लेकिन समाज की हालत पर कोई असर नहीं पड़ता है और कुछ क़िस्मों में सिर्फ़ दहशत का इज़ाफ़ा हो जाता है और बाक़ी हालात बदस्तूर रहते हैं।

इस्लाम ऐसे किसी इन्केलाब का हामी नहीं है। वह इलाही क़ानून के तहत समाज के जुम्ला शोअ्बों में इन्केलाब चाहता है और उसका मन्शा यह है कि मैं किसी सरज़मीन पर क़दम रखूँ तो वहाँ के अक़ाएद व अफ़कार बदलें, तहज़ीब व तमद्दुन में तबदीली पैदा हो, इक़्दारे हयात मुतग़य्यर हों, तरीक़ए ज़िन्देगानी में फ़र्क़ आ जाये, हुकूमत बदले, हाकिम बदले, रिआया का अन्दाज़े हयात बदले, और क़दीम दुनिया एक दूसरी दुनिया नज़र आने लगे। जिस तरह कि सरकारे दोआलम[स०] का इस्लामी इन्केलाब था कि आपने पत्थरों के पुजारियों को ज़हनी तौर पर इतना बुलन्द कर दिया था कि वहदहू लाशरीक के अलावा कोई ख़ुदा नहीं रह गया था। सैकड़ों ख़ुदाओं में बंटी हुई क़ौम को एक तौहीद के परचम तले जमा कर दिया था, घमण्डियों को नमाज़ी बना दिया था, लुटेरों को ज़कात व ख़ुम्स का पाबन्द बना दिया था, बेतहाशा खाने वालों

को रोज़े का खूगर बना दिया था, ग़ारतगरी करने वालों को मुजाहिद बना दिया था और मुजाहिद बनाकर मैदाने जेहाद में ग़नीमत के खुम्स का आदी बना दिया था। सूदख़ोरों को ईसारगर बना दिया, जुआरियों को इबादत गुज़ार बना दिया, शराबियों को पारसा बना दिया, बदकारों को पाकीज़ा निगाह बना दिया। और इस तरह हैवानों को इन्सान, इन्सानों को मुसलमान और मुसलमानों को ईमान वाला बना दिया।

दरहक़ीक़त ऐसा ही इन्क़ेलाब, इन्क़ेलाब कहे जाने के क़ाबिल होता है, यह और बात है कि ऐसा इन्क़ेलाब किसी ज़हनी मरीज़ के लिये कभी क़ाबिले क़बूल नहीं होता है। नतीजा यह हुआ कि मुश्रिक, बुत परस्त, शराबी, जुआरी, सूदख़ोर, हरामख़ोर, बदकार सब मुत्तहिद हो गये और मक्के की गलियों में एक क़िस्म की "सर्द जंगे अहज़ाब" शुरू हो गयी। सरकारे दोआलम[स०] ने अपने क़वानीन के इस्तेहकाम,[1] अपने क़दम के सेबात और अपने परवरदिगार की मदद का सहारा लेकर पूरे तूफ़ान का मुक़ाबला किया और आख़िर में एक बड़ी जमाअत को मुसलमान बना लिया। इस राह में कांटे मिले, कूड़ा मिला, गालियाँ मिलीं, धमकियाँ मिलीं, क़त्ल की साज़िश मिली, प्रोपेगण्डा मिला, इत्तेहामात व इलज़ामात मिले, ग़रीबुल वतनी मिली, लेकिन सबके आख़िर में कामियाबी मिली और एक दिन वह भी आया जब मक्के से बेवतन कर दिया जाने वाला पैग़म्बर[स०] इस शान से मक्के में दाख़िल हुआ कि अबूसुफ़ियान तक मुसलमान हो गया और यह फ़त्हे का अंदाज़ परवरदिगार की तरफ़ से हर इन्क़ेलाबी इन्सान, इन्क़ेलाबी तहरीक और इन्क़ेलाबी जमाअत के लिये एक मिसाल बन गया कि इस्लामी इन्क़ेलाब की राह में हलवे–पराठे की उम्मीद नहीं करनी चाहिये। इस राह में गालियाँ हैं, इलज़ामात हैं, धमकियाँ हैं, प्रोपेगण्डे हैं, गरोहबन्दी है, ज़ुबान के खंजर और क़लम के नैज़े हैं, ग़रीबुल वतनी है लेकिन इस्तेक़ामत बरक़रार है तो कामियाबी भी है,

1. मज़बूती

कामरानी भी है, फ़लाह भी है, नजात भी है और फ़त्हे मुबीन भी है। इस्तेक़ामत[1] के बाद वह दिन भी आ सकता है जब अबूसुफ़ियान कलिमः पढ़ने लगे और कुफ़ भी इस्लाम की पनाह ढूँढने लगे।

इस्लामी इन्क़ेलाब एक हमगीर इन्क़ेलाब था। तहज़ीब व तमद्दुन का इन्क़ेलाब, अक़ाएद व अफ़कार का इन्क़ेलाब, मफ़ाहीम व इक़्दार का इन्क़ेलाब, ज़िन्दगी और बन्दगी का इन्क़ेलाब। और फिर हर शोअ्बए हयात में इन्क़ेलाब ही इन्क़ेलाब।

ज़ाहिर है कि यह इन्क़ेलाब जिन लोगों से बर्दाश्त न हो सका और उसकी रोज़ अफ़ज़ूँ तरक़्क़ी जिनकी निगाहों में न समा सकी, उन्होंने उसके ख़िलाफ़ रीशा दवानियों का सिलसिला शुरू कर दिया और उसकी हर तरह की मुख़ालेफ़त पर आमादा हो गये।

दुश्मन के इक़्दामात हमेशा दो तरह के होते हैं। शुरू में वह ज़ोर आज़माई करता है और जब नाकाम हो जाता है तो साथ मिलकर नेज़ाम को बर्बाद करने की कोशिश करता है। बद्र व ओहद् और फ़त्हे मक्का के बाद अबूसुफ़ियान का इस्लाम इसी तदरीजी रद्दे अमल का इज़्हार था कि अब मिलकर इस्लाम को तबाह करना है।

चुनान्चे उसने पैग़म्बरं इस्लाम[स०] की वफ़ात के बाद पहले मौलाए काएनात की मदद का रास्ता इख़्तियार किया और जब आपने सरीही तौर पर उस मदद को ठुकरा दिया और फ़रमाया कि मैं इस्लाम की बक़ा की ख़ातिर मुन्हरिफ़ हुकूमत को बर्दाश्त कर सकता हूँ कुफ़ की मदद को बर्दाश्त नहीं कर सकता कि इस तरह कुफ़ को दोबारा इस्लामी दुनिया में काम करने का मौक़ा मिल जायेगा।........तो आपके इन्कार के बाद तख़्ते इक़्तेदार का रूख़ किया कि इससे ख़ुलूस का इज़्हार करके इस्लामी इक़्दार की तबाही का अमल शुरू किया जाये। चुनान्चे चार दिन

1. सीधापन, मुस्तक़ीम होना

के अन्दर इतना नुमायाँ फ़र्क़ हो गया कि नफ़्से पैग़म्बर[स०] की हिमायत का एलान करने वाला हज़्बे इख़्तिलाफ़ से इतना क़रीबतर हो गया कि अपने चश्मो चराग़ ख़ानदान को इस्लाम का हुक्मुराँ बनाने में कामियाब हो गया और फिर बराहेरास्त अपने फ़रज़न्द को भी एक मुमलिकत के हिस्से का हाकिम बनवा दिया जिसके बाद वह उसके मुक़ाबले में सफ़आरा हो गया, जिसकी हिमायत के लिये कल बाप ने हर कुर्बानी देने का वादा किया था।

उस वक़्त इस्लाम एक इन्तेहाई ख़तरनाक मोड़ पर आ गया और दाख़िली रीशा दवानियों की बिना पर वह सारे इक़्दार अचानक तबदील हो गये जो सरकारे दोआलम[स०] की 23 साल रियाज़त व मेहनत से क़ायम हुए थे। जहाँ मुमलेकत में एक–एक क़त्रए शराब का फुक़दान था वहाँ तख़्ते ख़िलाफ़त पर शराब आ गयी। जहाँ नामहरम पर निगाह करना जुर्म था वहाँ सौतेली माँओं से ज़िना का रिवाज हो गया। जहाँ इल्म मेअ्यारे फ़ज़ीलत था वहाँ उलमा की तौहीन शेआर बन गयी। इस्लामी दरबार में रिसालत को बनी हाशिम का खेल और इस्लाम को बेबुनियाद नज़रिया क़रार दिया जाने लगा और इस तरह नाअह्ल बाप के नालायक़ बेटे ने बाप की कमी को पूरी कर दिया और पूरा समाज यक्सर तबदील हो गया अब सूरतेहाल यह है कि बुराईयाँ हैं और टोकने की हिम्मत नहीं है। मुन्किरात हैं और 'नही' नहीं है। फ़वाहिश हैं और रोकने वाला नहीं है। इल्म वाले महरे बलब हैं और अपनी हैसियत को बचाने में लगे हुए हैं। दरबारी उलमा 'नही अनिल मुनकर' के ख़िलाफ़ फ़त्वे सादिर कर रहे हैं और इस्लाम फ़ना के रास्ते पर ले जाया जा रहा है।

ऐसे वक़्त में ज़रूरत थी कि कोई एक मर्दे मुजाहिद उठे और "पाये हवस से ताक़ते रफ़्तार खींच ले, मैदान में नेयाम से तलवार खींच ले"।

चुनान्चे रसूलुस्सक़लैन के बेटे हुसैन[अ०] उठे और आपने हर मुसीबत को बर्दाश्त करने का अज़्म करके इस सेलाब के सामने बन्ध बांध दिया। आपने अपना भरा घर कुर्बान कर दिया लेकिन दोबारा ऐसा इस्लामी इन्क़ेलाब बरपा कर दिया कि पूरे आलमे इस्लाम में यज़ीद के ख़िलाफ़ जज़्बात भड़क उठे और कुछ दिनों में यह सूरतेहाल पैदा हो गयी कि जिस घराने में फ़क़त वेरासत पर हुकूमत की जाती थी वहीं यज़ीद का बेटा बाप के तख़्त पर बैठने से इनकार करने लगा।

इमाम हुसैन[अ०] के इस इन्क़ेलाब में ख़वातीने कर्बला और बिल ख़ुसूस सानिये ज़हरा[अ०] का भी एक अज़ीम हिस्सा था कि जिस यज़ीद के सामने बड़े–बड़े सूरमाओं में सांस लेने की ताक़त नहीं थी उसी के दरबार में वह अज़ीमुश्शान ख़ुत्बा पढ़ा कि दरबार हिल गया और अवाम में अज़ सरे नौ हाकिम ज़ालिम के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने का तसव्वुर पैदा हो गया।

कर्बला का वाक़ेआ ख़त्म हो गया। अहले हरम ने कूफ़ा व शाम के बाज़ारों और दरबारों को फ़त्ह कर लिया। लेकिन जिस ईसाइयत और बुत परस्ती ने यज़ीद को अपना मुश्तरक नुमाइंदा बनाया था वह पसपा होकर दोबारा बातिनी इन्तेक़ाम के दौर में उस रीशा दवानी का मुकम्मल मुक़ाबला किया और हर दौर में बातिल को बेनक़ाब करते रहे और एक इस्लामी मुआशरे के क़ायम करने की कोशिश करते रहे।

लेकिन ग़ैबत का ज़माना बातिल ताक़तों को गोया ज़ोर आज़माई का बेहतरीन ज़माना मिल गया और हर तरफ़ से इस्लाम की बर्बादी का अमल शुरू हो गया। काफ़िर, मुश्रिक, यहूदी, ईसाई सब मुत्तहिद हो गये और सबका एक ही मंशा था कि इस्लाम को सफ़्हए हस्ती से मिटा दिया जाये और यह मुमकिन न हो तो इसके तालीमात को बेरूह, बेजान और बेअसर बना दिया जाये जैसा कि यज़ीद के दौर में हुआ था कि इस्लाम

को तमाशा भी कहा जा रहा था और नमाज़ें भी हो रही थीं। गोया बातिल ताक़तें चाहती थीं कि दोनों तज्रबात एक साथ होते रहें कि अगर उम्मत का एहसास बिलकुल मुर्दा हो गया है तो इस्लाम ही तमाशा बन जायेगा और अगर उम्मत में कोई ज़मीर वाला ज़िन्दा है तो कम से कम अहकाम बेरूह और बेजान हो जायेंगे।

हमारे मुल्कों में ईसाईयत ने मुद्दतहाए दराज़ तक अपनी हुकूमत में यही काम किया है और इस्लाम को फ़ना नहीं कर सकती तो बेजान ज़रूर बना दिया है और सारे इक़्दार को यक्सर बदल दिया है। (यज़ीद भी ईसाई माँ का बेटा और ईसाई माहौल का परवरदः था और ईसाईयत उस रीशा दवानी में महारत रखती है)। नतीजा यह है कि मस्जिदें आबाद हैं लेकिन दिल वीरान हैं। नमाज़ें हैं लेकिन बुराईयों से रोकने की सलाहियत नहीं है। पाकीज़ा किरदार लोगों से मुहब्बत का नाम है लेकिन अपने किरदार में पाकीज़गी नहीं है। तक़रीरों का हंगामा है लेकिन असर का फ़ुक़दान है। मज़हब का चर्चा है लेकिन अहकाम से नावाक़िफ़ीयत आम है और हदिया है कि इमाम[अ०] व रसूल[स०] पर कुर्बान हैं लेकिन उनके अहकाम से बेख़बर हैं। उलमा की जूतियाँ उठाते हैं लेकिन उनके अहकाम का बोझ नहीं उठाते। सरकार के ख़ादिम हैं लेकिन सरकार के दीन के ख़ादिम नहीं हैं। इल्म को फ़ज़ीलत का मेअ्यार मानते हैं लेकिन जाहिलों का इत्तेबाअ्[1] करते हें। ग़रज़ कि ज़िन्दगी का हर अमल बेजान होकर रह गया है और बन्दगी अपने असरात से आरी हो गयी है और जिन्हें बेदार करना चाहिये था वह खुद भी सो रहे हैं, बल्कि ख़ाबे ग़फ़लत के फ़ज़ाएल बयान कर रहे हैं ताकि सोने वाला ज़ियादा सो जाये और शायद उन्हें यह ख़तरा भी है कि मुआशरा बेदार हो गया तो नक़ब ज़नी के मौक़े हाथ से निकल जायेंगे और मुफ़्त के माल के ज़रीये एक रात में लखपती बनने का ख़ाब शर्मिन्दए ताबीर न हो सकेगा।

1. पैरवी

परवरदिगार इस्लामी उम्मत को बेदारी की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाए और रहबराने क़ौम को बेदार बनाने की सलाहियत अता फ़रमाये।

नक़्शे हयात

1- नाम	:	हुसैन[अ०] (यह नाम ख़ुद अल्लाह का रखा हुआ है) अर्‌जहुल मतालिब
2- कुन्नियत	:	अबू अब्दिल्लाह
3- अलक़ाब	:	सय्यद, सिब्ते असग़र, सय्यदुश्शोहदा वग़ैरह
4- वालिद	:	हज़रत अली इब्ने अबीतालिब[अलैहिस्सलाम]
5- वालिदः	:	हज़रत फ़ातिमः ज़हरा[अलैहस्सलाम]
6- विलादत	:	3 शअ्बान सन् 4 हिजरी
7- शहादत	:	10 मुहर्रम सन् 61 हिजरी
8- विलादत का मक़ाम	:	मदीना मुनव्वरा
9- दफ़्न की जगह	:	कर्बलाए मुअल्ला
10- अज़वाज	:	जनाबे शहर बानो[अ०], जनाबे उम्मे लैला[अ०], जनाबे रबाब[अ०]
11- औलाद	:	इमाम ज़ैनुल आबिदीन[अ०], अली अकबर[अ०], अली असग़र[अ०], सकीना[अ०], फ़ातिमः[अ०] (बरबिनाए मशहूर)

इमाम हुसैन[अ०] - वसीलए अमल बिल क़ुर्आन

1- हुक्मे इबादत पर आख़िरी सांस तक अमली दर्स देते रहे।

2- हुक्मे तक़्वा पर अमल के लिये सरापा तक़्वा बने रहे।

3- हुक्मे इन्फ़ाक़[1] पर अमल के लिये भरा घर लुटा दिया।

4- हुक्मे जेहाद पर बहरे नौअ् और बहरे अन्दाज़ जेहाद का तरीक़ा तालीम फ़रमाया।

5- हुक्मे '*तज़व्वदू*' पर तक़्वा को हर मुहिब के लिए ज़ादेराह बना दिया।

1. ख़र्च करना, रोज़ी देना

6- हुक्मे 'अक्रिज़' पर सब कुछ राहे ख़ुदा में दे दिया।

7- हुक्मे इस्तेजाबत पर ताहयात हुक्मे ख़ुदा और रसूल[स०] पर लब्बैक कहने का ज़रीआ बने रहे।

8- हुक्मे तक़दीम पर सब कुछ राहे ख़ुदा में पेश कर दिया।

9- हुक्मे 'सारिऊ' पर सबके लिये मग़फ़ेरत का सबब बन गये।

10- हुक्मे दुआ पर वसीलए इस्तिजाबते दुआ बन गये।

11- हुक्मे नुस्रते ख़ुदा पर राहे नुस्रते परवरदिगार क़रार पाये।

12- हुक्मे इजाबत दाइये ख़ुदा पर मुस्तक़िल दाइये इलल्लाह बन गये।

13- हुक्मे जुस्तुजूए वसीले पर सारी उम्मत के लिये वसीलए नजात बन गये।

14- हुक्मे इख़्तियारे सबीलिल्लाह पर बेहतरीन सुबुल व अक़रब तर्क़ बन गये।

इमाम हुसैन[अ०] और क़ुर्आन

1. तारीख़े ज़िन्दगानी

हमने इंसान को उसके माँ–बाप के साथ नेक बर्ताव करने की वसीयत की कि उसकी माँ ने हमल के ज़माने और विलादत के वक़्त बड़े रंज का सामना किया है और उस इंसान के हमल और दूध पीने का ज़माना कुल मिलाकर तीस[30] महीने होता है। यहाँ तक कि जब वह इंसान तवाना व तंदुरूस्त और चालीस[40] साल का हो गया तो उसने हमारी बारगाह में दुआ की कि ऐ अल्लाह मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी उन नेअ्मतों का शुक्रिया अदा करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे वालिदैन पर नाज़िल की हैं और मैं ऐसा अमल सालेह करूँ कि तू राज़ी हो जाये और मेरी औलाद को सालेह क़रार दे कि मैं तेरी ही तरफ़ मुतवज्जेह हूँ और तेरा ही इताअत गुज़ार बन्दा हूँ। – – – –

(अहक़ाम 15)

2. सुकूत ता मर्ग हाकिमे शाम

ईमान वालो ! अपने अहद को वफ़ा करो। – – –

(माइदः)

3. ख़बर मर्गे हाकिमे शाम

सब्र करने वालों की शान यह है कि मसाएब में कहते हैं कि हम अल्लाह के लिये हैं और उसी की बारगाह में पलट कर जाने वाले हैं। – – – (माइदः)

4. दरबारे वलीद

अगर वह लोग सुल्ह पर आमादा हो जायें तो तुम भी तैयार हो जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो। – – –

(इनफ़ाल)

5. बैअत की माँग

ख़बरदार ! ज़ालिमों की तरफ़ मैलान न पैदा होने पाये कि तुम जहन्नम के हक़दार हो जाओ।– – – (हूद)

6. वतन छोड़ना

जो शख़्स अपने घर से ख़ुदा की राह में हिजरत करता है वह मर भी जाता है तो उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे होता है। (निसा)

7. मक्के का इरादा

जो ख़ानए काबा में दाख़िल हो जाये वह महफ़ूज़ हो जाता है। (आले इमरान)

8. इरसाल मुस्लिम[अ०] इब्ने अक़ील[अ०]

अगर वह लोग दीन के बारे में तुमसे मदद माँगे तो तुम्हारा फ़र्ज़ है कि उनकी मदद करो। (आले इमरान)

9. मक्के से रवानगी

जो शख़्स भी शाएरूल्लाह की ताज़ीम करेगा वह उसके तक़वे का नतीजा होगा। (हज)

10.इराक़ का इरादा

ऐ पैग़म्बर ! कह दीजिये कि अगर तुम लोग अपने घरों में बैठ रहोगे तो वह लोग बहरहाल निकलेंगे जिनका मक़सद शहादत है। (आले इमरान)

11. इम्तेहान

अल्लाह तुम्हारा एक नहर के ज़रीए इम्तेहान लेगा जो उससे पानी न पियेगा वह मुझसे होगा। (ब–क़–र:)

12. जेहाद

जिन लोगों से ज़बरदस्ती जंग की जाती है उन्हें अल्लाह की तरफ़ से जेहाद की इजाज़त दी गयी है। (हज)

13. ख़त्मे जेहाद

ऐ नफ़्से मुत्मइन्ना अपने रब की तरफ़ पलट आ। तू हमसे राज़ी है हम तुझसे राज़ी हैं। (फ़ज्र)

14. शहादत

ख़बरदार ! ख़ुदा की राह में शहीद होने वालों को मुर्दा ख़याल भी न करना। वह ज़िन्दा हैं और अपने परवरदिगार की बारगाह में रिज़्क़ पाते हैं। (आले इमरान)

इमाम हुसैन अ० और इरशादात रसूले अकरम स०

1– परवरदिगार ! मैं हुसैन अ० को दोस्त रखता हूँ तू उसे और उसके दोस्तों को दोस्त रखना। (मसनद बिन हम्बल)

2– मैं अहलेबैत अ० से जंग करने वाले के लिये सरापा जंग और सुल्ह करने वाले के लिये सरापा सुल्ह हूँ। (मसनद अहमद)

3– हुसैन अ० मुझसे है और मैं हुसैन अ० से हूँ। परवरदिगार हुसैन अ० के दोस्त को दोस्त रखना। (मसनद अहमद)

4– हसन अ० व हुसैन अ० जन्नत के जवानों के सरदार हैं। (मसनद अहमद)

5– जो जन्नत के जवानों के सरदार को देखना चाहता है वह हुसैन अ० की तरफ़ नज़र करे। (मसनद अहमद)

6– हसन अ० व हुसैन अ० दुनिया में मेरे दो[2] फूल हैं। (मसनद अहमद)

7– मेरे तमाम घराने में सबसे ज़ियादा महबूब हसन अ० व हुसैन अ० हैं। (तिरमिज़ी)

8– मैंने हसन[अ०] व हुसैन[अ०] के नाम इसलिये रखे हैं कि यह जन्नती नाम हैं। (ईज़ाह बग़वी)

9– जो हसन[अ०] व हुसैन[अ०] को दोस्त रखेगा वह मेरा दोस्त, और जो उनसे नफ़रत करेगा वह मेरा दुश्मन है। (अबू सअ्द)

10– मुझे हुसैन[अ०] के रोने से तकलीफ़ होती है। (इब्ने मुनीअ्)

11– जो हसन[अ०] और हुसैन[अ०], उनके बाप और उनकी माँ से मुहब्बत करेगा वह जन्नत में साथ होगा। (मसनद अहमद)

12– हुसैन[अ०] ! तुम सय्यद इब्ने सय्यद, इमाम इब्ने इमाम, बरादरे इमाम, हुज्जत इब्ने हुज्जत और बरादरे हुज्जत हो। (मवद्दतुल क़ुरबा)

13– हुसैन[अ०] मेरे जिगर का टुकड़ा है। जो इसे और इसकी औलाद को दोस्त रखे उसके लिये तूबा है और इसके क़ातिल के लिये जहन्नम। (मवद्दतुल क़ुरबा)

14– मेरा हुसैन[अ०] तफ़ की ज़मीन पर शहीद होगा और यह उम्मत मेरे बाद फ़ित्ने में मुब्तेला हो जायेगी। (जमउल फ़राएद)

हुसैन[अ०] के ग़म का अन्दाज़

1. दिल का रंजीदा होना।
2. दिल में दर्द उठ जाना।
3. आँखों का नम हो जाना।
4. आँसुओं का निकल आना।
5. आँसुओं का टपकने लगना।
6. आँसुओं का रूख़सारों पर जारी होना।
7. आवाज़ का बुलन्द हो जाना।
8. रोते–रोते हिचकियाँ बंध जाना।
9. सदाए नाला व शेवन का बुलन्द हो जाना।
10. सर व सीना पीट लेना।
11. रोने का अन्दाज़ व ग़म पैदा करना।
12. रोते–रोते आँसुओं का ख़ुश्क हो जाना।
13. ग़म की शिद्दत से खाना–पानी छोड़ देना।

14. आँखों से आँसुओं के बजाय खून के क़तरे टपक पड़ना।

अलीयुल हुसैन[अ०] पर रोने के असबाब

1. जनाबे आदम[अ०] ने आलमे कुद्स में तसवीर देखी तो रोए।
2. मोमिन के सामने ज़िक्र आयेगा तो रोएगा।
3. मुरसले आज़म[स०] की निगाह पड़ गयी तो रोए।
4. कर्बला की ज़मीन पर निगाह रोने का सबब है।
5. अम्बिया ने हुसैन[अ०] का नाम लिया और रोए।
6. पैग़म्बर[स०] ने होंठ व दाँतों के बोसे लिये और रोए।
7. इन्तेसाब[1] अलल हुसैन[अ०] मोजिब रोयी है। जनाबे नूह[अ०] ने हुसैन[अ०] के नाम से कील उठाई और रोए।
8. मुहर्रम का महीना आया और आँसू निकल पड़े।
9. मोमिन कर्बला की ज़मीन पर पहुँचा और रोया।
10. कर्बला का नाम आया और आँसू निकल आये।
11. ठण्डा पानी पिया और इमाम सादिक़[अ०] के आँसू निकल पड़े।
12. कर्बला की मिट्टी को सूँघा और सानिये ज़हरा[अ०] रोने लगीं।
13. किसी ग़रीब व मज़लूम का ज़िक्र आया और हुसैन[अ०] के मसाएब पर रोना आ गया।
14. कर्बला के मसाएब पर ग़ौर किया और आँसुओं का सिलसिला शुरू हो गया।

फ़ज़ाएल व रोने के इम्तियाज़

1. रोना रसूले अकरम[स०] से इरतेबात[2] का ज़रीआ है।
2. रोना मासूमए आलम[अ०] की तसकीन का ज़रीआ है।
3. रोना पैग़म्बर[स०] के हक़ का अदा करना है।
4. रोना इक़्तेदाए सीरते मुरसलीन है।
5. रोना मिसदाक़े अज्रे रिसालत है।
6. रोना मासूमीन[अ०] के दिल की तसल्ली है।

1. मन्सूब करना, 2. राब्ते का ज़रिया

7. रोना हुसैन[अ०] इब्ने अली[अ०] की मदद है।
8. रोना हर वक़्त इबादत है।
9. रोना शिफ़ाअत की वजह है।
10. रोना जहन्नम की आग को ख़ामोश करने का ज़रीआ है।
11. जो आँखें हुसैन[अ०] पर रोती हैं वह क़यामत के दिन न रोयेंगी।
12. आँसू का एक क़तरा परवरदिगार का महबूब है।
13. आँसुओं के क़तरों को फ़रिश्ते शीशे में जमा करते हैं।
14. अज़ा के आँसू आख़ेरत का ज़ख़ीरा और मूजिब[1] सवाब बेहिसाब है।

ख़बरदार———! इन रवायतों पर कोई शख़्स यह एतेराज़ न करे कि इसका मतलब यह है कि अब किसी अमल की ज़रूरत नहीं है इसलिये कि रोना ख़ुद अमल की दावत है। रोना इमाम हुसैन[अ०] से रब्त की अलामत है और रब्ते हुसैन[अ०] मुस्तक़िल अमल की दावत है। हुसैन[अ०] का रब्त अमले सालेह से है बेअमली से नहीं है।

मजलिसें इमाम हुसैन[अ०] की विलादत से पहले

1- जनाबे आदम[अ०] ने अरफ़ात में पंजतने पाक का वास्ता देकर दुआ की तो हुसैन[अ०] के नाम पर आँसू निकल आये और जिबरील ने मसाएब बयान किये।
2- मेअ्राज की रात जन्नत में हूरियः ने मसाएब बयान किये और पैग़म्बरे इस्लाम[स०] समाअत फ़रमाते रहे।
3- मेअ्राज की रात दो क़स्र सुर्ख़ व सब्ज़ देखकर जन्नत में जिबरील ने इमाम हुसैन[अ०] के मसाएब बयान किये और हुज़ूर सरवरे काएनात रोए।
4- जनाबे आदम[अ०] कर्बला की ज़मीन से गुज़रे तो ठोकर खाने पर पैरों से खून जारी हो गया और अल्लाह की 'वही' आयी कि यह कर्बला की ज़मीन है और आदम रोए।

1. सबब, ज़रिया

5- जनाबे नूह के सफ़ीने को झटका लगा तो कुदररत का इरशाद हुआ कि सफ़ीना कर्बला की ज़मीन से गुज़र रहा है और जनाबे नूह रोए।

6- जनाबे मूसा[अ०] और ख़िज़्र[अ०] की मुलाक़ात हुई तो ख़िज़्र ने आले मुहम्मद[अ०] के मसाएब बयान किये और दोनों रोए।

7- बिसाते सुलैमानी का गुज़र कर्बला की तरफ़ से हुआ तो चक्कर आ गया और हामिलाने बिसात ने कर्बला के मसाएब बयान किये।

8- जनाबे इब्राहीम[अ०] ने मलकूते समावात व अर्ज़ के मुशाहिदे में हुसैन[अ०] की शबीह देखी तो रोना शुरू कर दिया।

9- बुत शिकनी के मौक़े पर हुसैन[अ०] के मसाएब का ख़याल आने पर फ़रमाया कि मैं बीमार हूँ।

10- इसमाईल[अ०] की कुर्बानी पर हुसैन[अ०] का ज़िक्र आ गया तो बेसाख़्ता रोए।

11- जनाबे इब्राहीम[अ०] का कर्बला की ज़मीन से गुज़र हुआ तो घोड़े से गिर पड़े और रोए।

12- जनाबे इसमाईल[अ०] शत्ते फुरात पर भेड़ चरा रहे थे और भेड़ों ने पानी नहीं पिया तो कर्बला के मसाएब पर रोए।

13- जनाबे ईसा ने हवारियीन[1] के बीच कर्बला का ज़िक्र किया और सब रोने लगे।

14- जनाबे मूसा[अ०] तूरे सीना पर बार–बार रोये।

(अल–ख़साएसुल हुसैनियः)

मजलिसें इमाम हुसैन[अ०] की विलादत के बाद

1- आसमानों पर तहनियते विलादत के लिये आने वाले दस लाख फ़रिश्तों से परवरदिगारे आलम ने हुसैन[अ०] के मसाएब बयान किये।

2- जनाबे सय्यदः[अ०] के हुजरे में मसाएब का ज़िक्र किया गया।

3- अज़वाज के हुजरों में यही ज़िक्र किया गया।

1. साथी

4- मस्जिदे पैग़म्बर[स०] में कभी खुद पैग़म्बर[स०] ने बयान किया, कभी जिबरील ने और कभी बारह फ़रिश्तों ने जो इमाम हुसैन[अ०] की ज़ियारत के लिये आये थे।
5- कर्बला की ख़ाक जनाबे उम्मे सलमः के हवाले करते हुए जनाबे पैग़म्बरे इस्लाम[स०] का बयान।
6- कूफ़े के मिम्बर से मौलाए काएनात का मसाएब का बयान।
7- सिफ़्फ़ीन से वापसी पर कर्बला की ज़मीन पर मौलाए काएनात का बयान।
8- सिद्दीक़ए ताहिरा[अ०] की मजलिसें।
9- मदीने में उम्मुल बनीन[अ०] का बयान।
10- वक़्ते आख़िर इमाम हसन[अ०] का मसाएब का बयान जिसके सुनने वाले खुद इमाम हुसैन[अ०] थे।
11- मदीने से रूख़सत के वक़्त रसूल[स०] की क़ब्र पर मसाएब का ज़िक्र जिसके बयान करने वाले रसूले अकरम[स०] थे और सुनने वाले इमाम हुसैन[अ०]।
12- हाशमी औरतों के बीच मदीने से रूख़सत के वक़्त इमाम हुसैन[अ०] का मसाएब का बयान।
13- इमाम हुसैन[अ०] का मदीने से रवानगी के वक़्त फ़रिश्ते और जिन्नात के बीच मसाएब का बयान।
14- हाजियों के बीच इमाम हुसैन[अ०] का मसाएब का बयान बैतुलहराम में। (ख़साएस हुसैनियः)

मजलिसें इमाम हुसैन[अ०] की शहादत के बाद

1- मक़तल में सानिये ज़हरा[अ०] का बयान।
2- लाशे मुतह्हर के गिर्द जिन्नात का नौहा।
3- कूफ़े के बाज़ार में अहले हरम का बयान।
4- शाम व मदीने में अहलेबैत[अ०] का बयान।
5- यज़ीद के दरबार में मसाएब का ज़िक्र।
6- मस्जिदे उमवी में इमाम ज़ैनुल आबिदीन[अ०] का खुत्बा।

7- शाम की औरतों के बीच सानिए ज़हरा[अ०] का बयान।
8- मदीने के बाहर आबिदे[अ०] बीमार का बयान।
9- मदीने के क़रीब जनाबे उम्मे कुलसूम[अ०] का मरसियः ।
10- इमाम हुसैन[अ०] की क़ब्र पर फ़रिश्तों का नौहा व मातम।
11- आसमानों पर हज़रत फ़ातिमः ज़हरा[अ०] की मजलिस।
12- अइम्मए मासूमीन[अ०] की मजलिसें।
13- फ़रिश्तों की मजलिसें।
14- इमाम हुसैन[अ०] के अज़ादारों की मजलिसें।

मनाज़िले शहादत

1. शहीद मरबूते बहक़ होता है।
2. शहीद क़ौम पर हक़ वाला होता है। अपनी ज़िन्दगी देकर सारी क़ौम को ज़िन्दा करता है।

3- शहीद ईसार का नमूना होता है।
4- शहीद का जिस्म भी मोहतरम होता है।
5- शहीद का हर खून का क़तरा परवरदिगार का महबूब होता है।
6- शहीद नेकियों के आख़िरी मरतबे का नाम है।
7- शहीद क़यामत के दिन गवाही देता है।
8- शहीद क़यामत के दिन शिफ़ाअत करता है।
9- शहीद की तुरबत की ख़ाक पाक व पाकीज़ा होती है।
10- शहीद का लफ़्ज़ हर क़ौम व मिल्लत में एहतेराम के क़ाबिल है।
11- शहीद जन्नत का ख़रीदार होता है।
12- शहीद नफ़्से मुत्मइन और मरज़ीए हक़ का तलबगार होता है।
13- शहीद नेअ्मत वाला व फ़ज़्ले इलाही होता है।
14- शहीद ज़िन्दए जावेद और मरज़ूक़े इन्दल्लाह होता है।

कर्बला के दर्स

1. वतन कितना ही अज़ीज़ क्यों न हो, इस्लाम पर वक़्त पड़ जाये तो उसे छोड़ देना चाहिये।
2. मक़सद की राह में हर तरह की क़ुर्बानी ज़रूरी है।
3. हक़ीक़ी मुहब्बत यही है कि दोस्त की राह में जान भी दे दी जाये।
4. हुर्रियत का इस्लामी मफ़हूम यह है कि ज़ालिम की नौकरी से आज़ादी हासिल कर ली जाये।
5. फ़क़ाहत के मानी यह हैं कि हुसैन[अ०] की नुस्रत में क़दम आगे बढ़ें, और ज़ालिमों को भी नमाज़ की दावत दी जाये।
6. हक़ीक़ी मसावात[1] यह है कि ग़ुलाम का सर भी अपने ज़ानू पर रखा जाये।
7. शुजाअत नफ़्स के जज़्बात पर क़ाबू पाने और जज़्बात को मशीय्यत का पाबन्द बना देने का नाम है।
8. वफ़ा का तक़ाज़ा यह है कि अमाननामा मिले मगर उसे ठुकरा दिया जाये।
9. क़ुर्बानी का मफ़हूम यह है कि जज़्बात की क़ुर्बानी दी जाये न कि जज़्बाती क़ुर्बानी।
10. तबलीग़ का सही रास्ता यह है कि रास्ता रोकने वाले को भी पानी पिला दिया जाये।
11. इस्लामी जेहाद का अन्दाज़ यह है कि ज़ुल्मों की शिद्दत में भी जंग की शुरूआत न की जाये।
12. दुश्मन लाख सरकशी पर आमादा हो लेकिन दावते इलल्लाह देते रहो।
13. जेहाद के मैदान में क़दम जमा दो तो लाखों के मुक़ाबले में भी क़दम पीछे न हटें।
14. बन्दगी की हक़ीक़ी शान यह है कि ख़ंजर के नीचे भी सजदए मअबूद अदा किया जाये।

✿✿✿✿✿✿

1. बराबरी

तरजुमए

दुआए अरफ़ः

इमाम हुसैन अ०

इमाम हुसैन[अ०] मैदाने अरफ़ात में

ज़िल्हिज्जः के महीने की नवीं तारीख़ थी। मक्के के क़रीब अरफ़ात के मैदान में अल्लाह के घर के हाजी सना व दुआ में मसरूफ़ थे कि एक बार रावी की निगाह दामने कोह के उस हिस्से पर पड़ गयी जहाँ सरकार सय्यदुश्शुहदा इमाम हुसैन[अ०] अपने असहाब व अन्सार और ख़ानदान वालों के साथ दुआ व मुनाजात में मसरूफ़ थे। ज़ुबान पर हम्द व सना और इल्तेमास व दुआ के फ़िक़्रे थे और आँखों से मुसलसल आँसू जारी थे।

रूख़ आसमान की तरफ़ और हाथ उठे हुए

लहजे में दुआ व मुनाजात का अन्दाज़ और इल्तेमास के तरीक़े में ऐसा गुदाज़ जैसे कोई गदाए बेनवा सुल्तानुस्सलातीन की बारगाह में हाज़िर होकर अर्ज़े मुद्दआ कर रहा हो।

उम्मत के लिये इससे बेहतर शिफ़ा व दुआ का नुस्ख़ा और क़ौम की तरबियत के लिये इससे बालातर मुद्दआ के बयान का अन्दाज़ मुमकिन नहीं है। रब्बे करीम सभी ईमान वालों को तौफ़ीक़ दे कि मैदाने अरफ़ात में हाज़िर होकर या कम से कम अरफ़े के दिन इस दुआ की तिलावत का शरफ़ हासिल करें।

...............*जवादी*

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सारी तारीफ़ उस ख़ुदा के लिये है जो बिना माँगे अता करने वाला और बेपायाँ करम का मालिक है। न कोई उसके फ़ैसले को टोक सकता है न कोई उसकी अता को रोक सकता है और न उसकी जैसी कोई चीज़ ईजाद कर सकता है।

उसने बेमिसाल चीज़ें ईजाद की हैं और अपनी हिकमते कामिला से हर सिनअत को मोहकम बनाया है।

ज़माने की ईजादात उसकी नज़र से छिपे नहीं हैं और अमानतें उसकी बारगाह में बर्बाद नहीं होतीं।

हर अमल करने वाले को जज़ा देने वाला, हर क़नाअत करने वाले को सुल्ह अता करने वाला और हर फ़रियाद करने वाले पर रहम खाने वाला है। मुनाफ़े का नाज़िल करने वाला और रौशन व ताबनाक नूर के साथ मुकम्मल किताब का उतारने वाला है।

हर एक की दुआ सुनने वाला, हर एक के रंज को मिटाने वाला, दरजों को बुलन्द करने वाला और जब्बारों का क़लअ् क़मअ् करने वाला है। उसके अलावा कोई ख़ुदा नहीं है, उसका कोई हमसर नहीं है, वह बेमिसाल और हर एक की सुनने वाला, हर चीज़ का देखने वाला और हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

ख़ुदाया ! मैं तेरी तरफ़ मुतवज्जेह हूँ और तेरी रुबूबियत की गवाही देता हूँ। मुझे इक़रार है कि तू मेरा परवरदिगार है। मेरा परवरदिगार है। तेरी बारगाह में मुझे पलट कर आना है।

तूने मुझ पर उस वक़्त से इनामात शुरू किये हैं जब मैं कोई ज़िक्र के क़ाबिल चीज़ न था। मुझे ख़ाक से पैदा किया, मुख़्तलिफ़ सुल्बों से गुज़ारा, ज़माने के हादिसों, दह्र के

इख़्तिलाफ़ों, सिन व साल के तग़य्युरात व इन्क़ेलाबों से महफ़ूज़ रखा।

मेरा सफ़र एक मुद्दत तक असलाब से अरहाम की तरफ़ जारी रहा और आख़िर में यह तेरा करम हुआ कि तूने इस दुनिया में भेज दिया लेकिन अपने रहम व करम के कमाल और तमाम लुत्फ़ व एहसान की बिना पर उन सरबराहाने कुफ़्र की हुकूमत में नहीं भेजा जिन्होंने तेरे अहद को तोड़ा और तेरे उसूलों को झुठलाया बल्कि उस माहौल में भेजा जहाँ आसान हिदायत के इन्तेज़ामात थे और फिर उसी में मेरी नशो व नुमा का इन्तेज़ाम किया।

इस ख़िलक़त व तरबियत से पहले भी तेरा बेहतरीन बर्ताव और कामिल तरीन इनाम यह था कि तूने एक नजिस क़तरे से मुझे बनाया और अजीबतर बनाया। गोश्त, खून और खाल के बीच तीन–तीन पर्दों में रखा और खुद मुझे भी मेरी ख़िलक़त से आगाह न किया। मेरे मामलात को अपने हाथों में रखा और मुझे मेरे हाल पर नहीं छोड़ दिया।

अब जो तूने दुनिया में भेजा तो हिदायत व रहनुमाई के सारे इन्तेज़ामात के साथ मुकम्मल बराबर और कामिल ख़िलक़त पैदा किया। मैं गहवारे में बच्चा रहा तो तूने हिफ़ाज़त का इन्तेज़ाम किया। ग़िज़ा के लिये ताज़ा दूध फ़राहम किया। पालने वाली औरतों को मेहरबान बना दिया। रहम दिल माँओं को कफ़ील और देखभाल करने वाला बना दिया। जिन्नात के आसेब से महफ़ूज़ रखा। ज़ियादती और कमी से बचाये रखा। बेशक ऐ रहीम व करीम खुदा तेरी हस्ती बहुत बुलन्द व बरतर है।

इसके बाद जब मैं बोलने के लायक़ हुआ तो तूने और मुकम्मल नेअ्मतें दीं और तरबियत के ज़रीए हर साल मुझे आगे बढ़ाया यहाँ तक कि जब मेरी फ़ित्रत पूरी हो गयी और मेरे कूवा मज़बूत हो गये तो तूने अपनी हुज्जत को लाज़िम क़रार दे दिया। मुझे मारेफ़त का इलहाम किया, अपनी हिकमत के

अजाएबात से मदहोश बना दिया और ज़मीन व आसमान की अजीब तरीन मख़लूक़ात के समझने के लिये मुझे बेदार मग़ज़ बना दिया और फिर अपनी याद, अपने शुक्रिये और अपनी इताअत व इबादत के लिये होशियार कर दिया। इतनी सलाहियत दी कि रसूलों के पैग़ाम को समझ सकूँ। इतनी आसानी फ़राहम की कि तेरी मर्ज़ी की बातों को क़बूल कर सकूँ और फिर उन सब मौक़ों पर अपनी मदद और अपने लुत्फ़ व करम व एहसान से महरूम नहीं रखा। मुझे बेहतरीन मिट्टी से पैदा किया और फिर उसी एक नेअ्मत पर इक्तेफ़ा नहीं की बल्कि तरह–तरह खाने दिये। तरह–तरह के लेबास दिये। तेरा एहसान मेरे ऊपर अज़ीम और तेरा लुत्फ़ क़दीम है।

फिर जब सारी नेअ्मतों को मुकम्मल कर दिया और सारी बलाओं को मिटा दिया तो भी मेरी जेहालत और मेरी जसारत तुझे करम से रोक नहीं सकी और तूने उस रास्ते की रहनुमाई की जो तुझसे क़रीबतर बना सके, उन आमाल की तौफ़ीक़ दी जो तेरी बारगाह में क़रीब होने का सबब बन सकें।

अब भी जब मैं दुआ करता हूँ तो क़बूल कर लेता है और जब सवाल करता हूँ तो अता कर देता है, जब इताअत करता हूँ तो शुक्रिया अदा करता है और जब शुक्रिया अदा करता हूँ तो ज़ियादा दे देता है। यह सब हक़ीक़त में तेरे एहसानों और इनामों की तकमील है और उसके अलावा कुछ नहीं है।

तू पाक, बेनयाज़, पैदा करने वाला, वापस ले जाने वाला, हम्द व सना के क़ाबिल और मालिके मुजिद व बुज़ुर्गी है। तेरे नाम पाकीज़ा और तेरी नेअ्मतें अज़ीम हैं।

ख़ुदाया ! मैं तेरी किन–किन नेअ्मतों को शुमार करूँ और किसे–किसे याद रख सकूँ। तेरे किस–किस अतीये का शुक्रिया अदा करूँ जब कि सारी नेअ्मतें शुमार करने वालों के एहसाअ् से बालातर और बड़े–बड़े हाफ़िज़े वालों के इल्म की रसाई से बुलन्दतर हैं। इसके अलावा जिन नुक़सानों, मुसीबतों

और बलाओं को तूने टाला है वह उस आफ़ियत व ख़ुशी से कहीं ज़ियादा अहम हैं जिनका मैंने मुशाहेदा किया है और जो मेरी निगाहों के सामने हैं।

परवरदिगार ! मैं अपने ईमान की हक़ीक़त, अपने मोहकम यक़ीन, अपनी ख़ालिस और वाज़ेह तौहीद, ज़मीर के छुपे हुए इसरार, नूरे बसारत की गुज़रगाहों, सफ़हए पेशानी के ख़ुतूत, सांस के गुज़रने के शिगाफ़, सूँघने की ताक़त के ख़ज़ानों, सुनने की ताक़त तक आवाज़ पहुँचने के सूराख़ों, होठों के अन्दर दबे हुए रूमूज़, ज़ुबान की हरकत से निकले हुए अलफ़ाज़, दहन के ऊपर और नीचे के जबड़ों के इरतेबात की जगहों, दाढ़ के उगने के मक़ामों, खाने–पीने की सहूलत के रास्ते, कासए सर को संभालने वाले इस्तेख़्वान,[1] गर्दन के आसाब के इरतेबात[2] की वस्अतों, सीने की फ़िज़ाओं, गर्दन के रिश्तों को संभालने वाले आसाब, दिल के परदे को रोकने वाले डोरे, जिगर के टुकड़ों को जमा करने वाले हिस्से, पहलू, जोड़बन्द, क़वाए अमल, अतराफ़ अंगुश्त के महतूयात व मुश्तमिलात, गोश्त, ख़ून, बाल, खाल, आसाब, शराईन, इस्तख़्वान, मग़ज़, रगें, जवारेह और दौराने रज़ाअत व शीरख़्वारी मुरत्तब करने वाले हिस्से बदन और ज़मीन ने जो मेरे वुजूद का बार उठा रखा है और अपनी नींद, बेदारी, हरकात व सुकनात, रूकूअ् व सजदों सबके हवाले से इस बात की गवाही देता हूँ कि अगर मैं इरादा भी करूँ और कोशिश भी करूँ कि आख़िर ज़माने तक ज़िन्दा रहकर तेरी एक नेअ्मत का शुक्रिया अदा कर लूँ तो यह नामुमकिन है। मगर यह कि तेरा एहसान ही शामिले हाल हो जाये। मगर वह ख़ुद भी तो एक शुक्रिये तलबगार है। मेरे ऊपर हर वक़्त एक नया एहसान है और जिससे हर वक़्त एक नये शुक्रिये का तक़ाज़ा पैदा होता है।

बेशक ! मैं क्या अगर मेरे साथ तमाम गिने जाने वाले इन्सान शरीक होकर तेरे जदीद व क़दीम एहसानात की इन्तेहा मालूम करना चाहें तो हरगिज़ नहीं कर सकते और न उन्हें गिन

1. हड्डी, 2. रब्त–ज़ब्त, मेल–जोल

सकते हैं। और यह मुमकिन भी किस तरह होगा जब कि तूने खुद अपनी किताबे नातिक़ और सच्ची ख़बर के ज़रीए यह एलान कर दिया है कि :–

"अगर तुम सब मिलकर भी मेरी नेअ्मतों को गिनना चाहोगे तो नहीं कर सकते हो"।

बेशक तेरी सच्ची किताब, तेरी ख़बर सच्ची और तेरा बयान हक़ है। तेरे अम्बिया व मुरसलीन ने तेरी वही और शरीअत को मुकम्मल तरीक़े से पहुँचाया है और मैं खुद भी अपनी कोशिश, हिम्मत, इताअत की हद और वुस्अत व इमकान भर इस बात की गवाही देता हूँ और उस पर अपने ईमान व यक़ीन का एलान करता हूँ कि सारी तारीफ़ उस ख़ुदा के लिये है जिसका कोई बेटा नहीं है कि उसकी मीरास का मालिक हो जाये। कोई शरीक नहीं है कि ईजादात में झगड़ा करे, कोई वली व सरपरस्त नहीं है कि सिन्अत[1] में तआवुन करे। वह पाक व पाकीज़ा और बेनयाज़ है। अगर ज़मीन व आसमान में उसके अलावा कोई भी खुदा होता तो ज़मीन व आसमान दोनों बर्बाद हो जाते और टूट फूट कर बराबर हो जाते।

वह पाक व बेनयाज़, एक, अकेला और सबसे मुस्तग़नी है। न उसका कोई बाप है, न बेटा और न हमसर।

मैं उसकी उस हम्द का एलान करता हूँ जो फ़रिश्ते मुक़र्रिबीन और अम्बिया व मुरसलीन की हम्द के बराबर हो। खुदा ख़ैरूल मुरसलीन, ख़ातिमुन्नबीयीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स०] और उनकी आल तय्यिबीन व ताहिरीन पर रहमतें नाज़िल फ़रमाये।

खुदाया ! मुझे ऐसा बना दे कि मैं तुझसे उस तरह डरूँ जैसे तुझे देख रहा हूँ। अपने तक़वे से मेरी मदद फ़रमा और मासियत से मुझे दुश्मन और बदबख़्त न बना देना, अपने फ़ैसले को मेरे हक़ में बेहतर क़रार दे और अपने मुक़द्दरात को मेरे लिये मुबारक बना दे ताकि जिस चीज़ को तूने देर में रखा है

1. हुनर, कारीगरी

उसकी जल्दी न करूँ और जिस चीज़ को मुक़द्दम कर दिया है उसकी देरी न चाहूँ।

खुदाया मुझे दिल का ग़नी बना दे। मेरे नफ़्स में यक़ीन, अमल में खुलूस, बसारत में नूर और दीन में बसीरत अता फ़रमा, मेरे लिये बदन के सभी हिस्सों को फ़ायदा पहुँचाने वाला क़रार दे दे और सुनने व देखने को मेरा वारिस बना दे, ज़ुल्म करने वालों के मुक़ाबले में मेरी मदद फ़रमा और उनसे मेरा बदला मेरी नज़रों के सामने ले ले ताकि मेरी आँखों को ठण्डक नसीब हो।

खुदाया ! मेरे रंज को दूर फ़रमा, मेरे ग़लत कामों की पर्दापोशी फ़रमा, मेरी ख़ताओं को बख़्श दे, शैतान को मुझ से दूर रख, गिरफ़्तारियों में रिहाई अता फ़रमा और दुनिया व आख़ेरत में बुलन्दतरीन दरजों पर फ़ाएज़ फ़रमा।

खुदाया ! तेरा शुक्रिया तूने पैदा किया तो देखने व सुनने के साथ पैदा किया। तेरा शुक्रिया कि तूने पैदा किया तो ताम व कामिल पैदा किया।

यह सिर्फ़ तेरी रहमत है वरना तू मेरी तख़लीक़ से बेनयाज़ था।

खुदाया ! जिस तरह तूने तख़लीक़ में ख़िलक़त को मोअ्तदिल बनाया है और तस्वीर में सूरत को हसीन और मुतनासिब बनाया है मुझ पर एहसान करके मेरे नफ़्स में आफ़ियत अता की है मुझे महफ़ूज़ रखा है। और तौफ़ीक़ करामत फ़रमाई है, मुझ पर इन्आम किया है और मुझे हिदायत दी है, मुझे एहसान के क़ाबिल बनाया है और हर ख़ैर का एक हिस्सा अता किया है, मुझे खाना खिलाया है और पानी पिलाया है, मुझे बेनयाज़ बनाया है और सरमाया व इज़्ज़त अता की है। मेरी मदद की है और मुझे मुअज़्ज़िज़ बनाया है। मुझे अपनी ख़ास करामत से सित्रपोशी करने वाला लेबास दिया और अपनी मख़सूस रहमत से मुश्किलों को आसान बनाया है।

खुदाया ! तू अब मुहम्मद व आले मुहम्मद[स०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और ज़माने के महल्लेकात और दिन व रात के तसर्रूफ़ात के मुक़ाबले में मेरी मदद फ़रमा। दुनिया के हौलनाक मौक़ों और आख़ेरत के रंज अफ़्ज़ा मरहलों से नजात अता फ़रमा और ज़मीन के ज़ालिमों की तद्बीरों से महफ़ूज़ फ़रमा।

खुदाया ! जिस चीज़ का मुझे डर है उसके लिये किफ़ायत फ़रमा और जिस चीज़ से परहेज़ करता हूँ, उससे बचा ले। मेरे नफ़्स और दीन में मेरी हिरासत फ़रमा और मेरे सफ़र में मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा, अहल व माल कमी को पूरी फ़रमा, और जो रिज़्क़ तूने दिया है उसमें बरकत अता फ़रमा। मुझे खुद मेरे नज़दीक ज़लील बना दे और लोगों की निगाहों में इज़्ज़त वाला क़रार दे दे, जिन्नातों और इन्सानों के शर से सही व सालिम रखना और गुनाहों की बिना पर मुझे रूस्वा न करना, मेरे असरार को बेनक़ाब न फ़रमाना और मेरे आमाल में मुझे मुब्तेला न करना, जो नेअ्मतें दे दी हैं उन्हें वापस न लेना और अपने अलावा किसी दूसरे के हवाले न कर देना।

खुदाया ! तू मुझे अपने अलावा किसके हवाले करेगा ? रिश्तेदारों के हवाले करेगा क़तअ् तअल्लुक़ कर लें। या दूर वालों के सिपुर्द करेगा कि हमलावर हो जायें। या मुझे कमज़ोर बना देने वालों के हवाले कर देगा जबकि तू ही मेरा रब और मेरे कामों का मालिक है।

खुदाया ! मैं तुझसे अपनी ग़रीबी, वतन से दूरी और इख़्तियार वालों की निगाहों में अपनी ज़िल्लत की फ़रियाद करता हूँ।

खुदाया ! मुझ पर अपना ग़ज़ब नाज़िल न फ़रमाना कि तूने ग़ज़ब से आज़ाद कर दिया है तो मुझे किसी की परवाह नहीं है। तू पाक व बेनयाज़ है और तेरी आफ़ियत मेरे लिये बहुत वसीअ् है।

परवरदिगार ! मैं तेरे रूए रौशन के वास्ते से जिसने ज़मीन व आसमान को मुनव्वर कर दिया है और ज़ुल्मतों को काफ़ूर बना दिया है और अव्वलीन व आख़िरीन के कामों की इसलाह कर दी है। यह सवाल करता हूँ कि मेरी मौत तेरे ग़ज़ब के आलम में न हो और मुझ पर तेरी नाराज़गी न नाज़िल हो। मैं बार–बार गुज़ारिश करता हूँ कि अज़ाब नाज़िल होने से पहले मुझसे राज़ी हो जा और अपनी नाराज़गी को लुत्फ़ व करम में बदल दे तेरे अलावा कोई खुदा नहीं है। तू मोहतरम शहर, मशअरूल हराम और उस अज़ाब से आज़ाद कराने वाले क़दीम तरीन घराने का मालिक है जिसे तूने बरकतों से भर दिया है और लोगों के लिये सुकून का ज़रीआ बना दिया है।

ऐ खुदा ! जिसने अपने हिल्म से अज़ीम तरीन गुनाहों को माफ़ किया है और अपने फ़ज़्ल व करम से मुकम्मल तरीन नेअ्मतें अता की हैं।

ऐ खुदा ! जिसने अपने करम से बहुत कुछ अता फ़रमाया है। अपने शिद्दतों के लिये ज़ख़ीरए बन्दगान ! तन्हाईयों के साथी रंज व ग़म के फ़रियादरस, नेअ्मतों के मालिक ! मेरे और मेरे ख़ानदान के बुज़ुर्ग इब्राहीम[अ०] व इसमाईल[अ०] व इसहाक़ व याकूब के मालिक ! जिबरील व मीकाईल और इसराफ़ील और आख़िरी नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा[स०] और उनके पाक व पाकीज़ा घर वालों के परवरदिगार ! तौरैत व इंजील व ज़ुबूर व कुर्आन के नाज़िल करने वाले ! ....व ताहा व यासीन और कुर्आन के अर्शे आज़म से उतारने वाले ! तू उस वक़्त भी मेरी पनाहगाह है जब वसीअ् तरीन रास्ते भी मुश्किल हो जायें और बेपनाह और बेपनाह वुस्अतें रखने वाली ज़मीन भी तंग हो जाये।

तेरी रहमत न होती तो मैं हलाक हो जाता कि तू गिरते हुए को सहारा देने वाला है, तेरी पर्दापोशी न होती तो मैं रूस्वा हो जाता कि तू दुश्मनों के मुक़ाबले में मदद करने वाला है और तेरी कुमक न होती तो मैं बिलकुल मग़लूब हो जाता।

ऐ वह ख़ुदा ! जिसने बुलन्दी और रफ़्अत को अपने लिये मख़सूस रखा है और चाहने वाले उसी की इज़्ज़त से इज़्ज़त वाले बने हुए हैं।

ऐ वह ख़ुदा ! जिसके सामने बादशाहों ने ज़िल्लत और ख़ाकसारी का तौक़ अपनी गर्दन में डाल रखा है और वह हैबत से लरज़ा बरअन्दाम हैं।

वह आँखों के ख़ेयानतकार इशारों और दिल के हमारंग राज़ों से बाख़बर है और उसे आने वाले ज़मानों के तमाम हालात व कैफ़ियात की ख़बर है।

ऐ वह ख़ुदा ! जिसके बारे में किसी को नहीं मालूम कि वह क्या है और कैसा है कि उसका इल्म उसी के पास है।

ऐ ज़मीन को पानी पर रोकने वाले और हवा के रास्तों को आसमानों से बन्द करने वाले ! ऐ वह ख़ुदा जिसके नाम बुज़ुर्ग तरीन हैं और जिसकी नेकियाँ ख़त्म होने वाली नहीं हैं।

ऐ सेहराए बेआब व गेयाह में यूसुफ़[अ०] के लिये क़ाफ़िले के रोकने वाले ! और उन्हें कुएँ से निकाल कर ग़ुलामी की कैफ़ियत से बादशाहत तक पहुँचाने वाले ! ऐ रोने की शिद्दत से आँखों के सफ़ेद हो जाने के बाद उन्हें याक़ूब तक पहुँचा देने वाले !

ऐ अय्यूब[अ०] की बलाओं और मुसीबतों के दूर करने वाले ! और ऐ इब्राहीम[अ०] की ज़ईफ़ी में उनका हाथ पकड़ कर बेटे के ज़िब्ह के इम्तेहान से रोकने वाले !

ऐ ज़करिया[अ०] की दुआ को क़बूल करके यहया जैसा बेटा अता करने वाले और उन्हें अकेला और लावारिसी की मुसीबत से बचाने वाले !

ऐ यूनुस[अ०] को मछली के पेट से निकालने वाले !

ऐ समन्दर के सीने को खोलकर बनी इसराईल को नजात दिलाने वाले और फ़िरऔन और उसके लश्कर को डुबोने वाले !

ऐ अपनी ख़ास रहमत से हवाओं को ख़ुश गवार मौसम की बशारत देकर भेजने वाले !

ऐ अपनी गुनाहगार मख़लूक़ात पर जल्दी अज़ाब न करने वाले ! और मूसा[अ०] के मुक़ाबले में आने वाले जादूगरों को अज़ाब से बचा लेने वाले ! जब कि उन्होंने बहुत दिनों तक हक़ाएक़ का इनकार किया था और ख़ुदा का रिज़्क़ खाकर दूसरे ख़ुदा की इबादत की थी और उसके रसूलों की तकज़ीब करके उनसे बरसरे पैकार रह चुके थे।

ऐ अल्लाह ! ऐ अल्लाह ! ऐ बेमिस्ल ईजाद करने वाले और बेमिसाल पैदा करने वाले ! तेरा कोई जवाब नहीं है और तू हमेशा से है, तुझे फ़ना नहीं है तू उस वक़्त भी ज़िन्दा रहने वाला है जब कोई ज़िन्दा न रह जाये। ऐ मुर्दों को ज़िन्दा करने वाले और हर नफ़्स के आमाल व अफ़आल की निगरानी करने वाले !

ऐ वह ख़ुदा ! जिसका शुक्रिया मैंने बहुत कम अदा किया है लेकिन उसने नेअ्मतों से महरूम नहीं रखा है। मेरी ख़ताएँ बहुत अज़ीम रही हैं लेकिन उसने रूसवा नहीं किया है, मुझे गुनाह करते हुए देखा है और उसे मशहूर नहीं किया है। उसने बचपने में भी मेरी हिफ़ाज़त की है और बुढ़ापे में भी मुझे रिज़्क़ दिया है।

ऐ वह ख़ुदा ! जिसकी नेअ्मतें मेरे पास बेशुमार हैं और उसके अलताफ़[1] और मकारिम[2] नाक़ाबिले मुआवज़ा हैं।

ऐ वह ख़ुदा ! जिसने मेरा सामना ख़ैर व एहसान के साथ किया है जबकि मैंने उसका मुक़ाबला बुराई और इसयान से किया है।

ऐ वह ख़ुदा ! जिसे मैंने बीमारी की हालत में पुकारा तो शिफ़ा दे दी, बरहनगी में आवाज़ दी तो लेबास अता फ़रमा दिया, भूख में पुकारा तो ग़िज़ा दे दी, प्यास में फ़रियाद की तो पानी पिला दिया, ज़िल्लत में पुकारा तो इज़्ज़त दे दी, जेहालत

1. लुत्फ़ की जमा, 2. बख़्शिश में बराबरी करने वाला

में पुकारा तो मअ्रिफ़त दे दी, अकेले आवाज़ दी तो कसरत दे दी, ग़ायब के बारे में गुज़ारिश की तो वापस पहुँचा दिया, ग़रीबी में फ़रियाद की तो अमीर बना दिया, ज़ुल्म के मुक़ाबले में कुमक[1] माँगी तो अता फ़रमा दी, मालदारी में पुकारा तो नेअ्मत वापस नहीं ली और कुछ न माँगा तो ख़ुद से अता कर दिया।

ऐ वह ख़ुदा ! जिसने लग़ज़िशों में सहारा दिया, रंज व ग़म से नजात दी, दुआ को क़बूल किया, मख़फ़ी कामों की पर्दापोशी की, गुनाहों को माफ़ किया, मक़सद को पूरा किया, दुश्मनों के मुक़ाबले में मेरी मदद की। मैं तेरी नेअ्मतों, तेरे एहसानों और तेरी अज़ीम बख़्शिशों को गिनना भी चाहूँ तो हरगिज़ गिन नहीं सकता।

तू ही वह है जिसने एहसान किया है। तू ही वह है जिसने इनाम दिया है। तू ही वह है जिसने लुत्फ़ व फ़ज़्ल किया है। तू ही वह है जिसने बेहतरीन बर्ताव किया। तू ही वह है जिसने फ़ज़्ल व करम किया है। तू ही वह है जिसने पूरी नेअ्मतें अता की हैं।

तू ही वह है जिसने रिज़्क़ दिया है। तू ही वह है जिसने तौफ़ीक़ दी है। तू ही वह है जिसने अता किया है। तू ही वह है जिसने मालदार बनाया है। तू ही वह है जिसने चुनी हुई नेअ्मतें अता की हैं। तू ही वह है जिसने पनाह दी है। तू ही वह है जिसने किफ़ायत की है। तू ही वह है जिसने हिदायत की है। तू ही वह है जिसने महफ़ूज़ रखा है। तू ही वह है जिसने पर्दापोशी की है। तू ही वह है जिसने मग़फ़ेरत की है। तू ही वह है जिसने लग़ज़िशों[2] में सहारा दिया है। तू ही वह है जिसने ताक़त दी है। तू ही वह है जिसने इज़्ज़त दी है। तू ही वह है जिसने मदद की है। तू ही वह है जिसने बाज़ुओं का ज़ोर अता किया है। तू ही वह है जिसने ताईद की है। तू ही वह है जिसने मदद की है। तू ही वह है जिसने शिफ़ा दी है। तू ही वह है जिसने आफ़ियत दी है। तू ही वह है जिसने बज़ुर्गी अता की है।

1. मदद, 2. फिसलन, ग़लती

तू बरकत व अज़्मत वाला है, तेरी हम्द हमेशा–हमेशा के लिये है और तेरा शुक्रिया बेहिसाब व बहुत ज़ियादा है। अब इसके बाद मेरा हाल यह है कि मैं वह गुनाहगार बन्दा हूँ जिसे अपने गुनाहों का इक़रार और अपनी ख़ताओं का एअ्तेराफ़ है। मैं ही वह हूँ जिसने बुराईयाँ की हैं। मैं ही वह हूँ जिसने ख़ताएँ की हैं। मैं ही वह हूँ जिसने गुनाहों का इरादा किया है। मैं ही वह हूँ जिसने जेहालत से काम लिया है। मैं ही वह हूँ जिसने लापरवाही बरती है। मैं ही वह हूँ जिसको सह्व व निसयान आरिज़ हुआ है। मैं ही वह हूँ जिसने जानबूझ कर गुनाह किये हैं। मैं ही वह हूँ जिसने जानबूझ कर ग़लत क़दम उठाये हैं। मैं ही वह हूँ जिसने बेशुमार वादे किये हैं। मैं ही वह हूँ जिसने वादा ख़िलाफ़ी की है। मैं ही वह हूँ जिसने अहदों को तोड़ा है। मैं ही वह हूँ जिसने बुराईयों का इक़रार किया है। मैं ही वह हूँ जिसने इस बात का भी एअ्तेराफ़ किया है कि नेअ्मतें मुझ पर नाज़िल होती रही हैं और अ़ब भी मेरे पास हैं लेकिन मैं बराबर गुनाहों में मुब्तेला रहा हूँ।

परवरदिगार! मुझे माफ़ फ़रमा दे कि मुझ जैसे बन्दों के गुनाहों से तेरा कोई नुक़सान नहीं होता, तू हर एक की इबादत से बे नियाज़ है और हर नेक अमल करने वाले को अपनी तौफ़ीक़ व ताईद से सहारा भी देता रहता है, मेरे मालिक और मेरे परवरदिगार ! सारी हम्द तेरे लिए है ख़ुदाया !तूने मुझे हुक्म दिया है तो मैने सरताबी की है और मना किया है तो मैने इताअत नहीं की है। अब मेरे पास बराअत के लिए कोई उज़्र नहीं है और अज़ाब को दफ़ा करने के लिए कोई साहिबे ताक़त भी नहीं है।

मैं किस तरह तेरा सामना करूं और किसके सहारे तेरी बारगाह में हाज़िर हूं इस समाअत के सहारे या इस बसारत के ज़रिए इस ज़बान के सहारे या इस दिल के सहारे, इस हाथ के वसीले से या इन पैरों के सहारे से ? ये सब ही तो तेरी नेमतें हैं

और इन सब ही से तो मैने तेरी मासीयत की है, ये सब ही तो मेरे ख़िलाफ़ तेरी हुज्जतें और दलीलें हैं।

मेरे परवरदिगार! जिसने मेरी बुराईयों को मेरे मां बाप से भी मख़्फ़ी रखा है और उन्हें झिड़कने नहीं दिया है अशीरा व क़बीला से मख़्फ़ी रखा है और उन्हे सरज़निश नहीं करने दिया है। हुक्काम व सलातीन से पोशीदा रखा है और उन्हें सज़ा नहीं देने दी है जबकि ये सब तेरी तरह सारी हरकतों पर मुत्तला होते तो एक लम्हे की भी मोहलत न देते और मुझे बिल्कुल नज़र अदांज़ कर देते बल्कि मुझसे क़तअए ताअल्लुक़ कर लेते।

अब तेरी बारगाह में ख़ुज़ु व ख़ुशु, तवाज़ो व इन्केसारी और अपनी हिक़ारत व ज़िल्लत के साथ हाज़िर हूं न बराअत ज़िम्मे के लिए कोई उर्ज़ रखता हूं और गुनाहों से बचाने वाला कोई ताक़तवर सहारा, न मेरे पास कोई दलील है जिस से इस्तदलाल करूं और न यह कह सकता हूं कि यह गुनाह मैने नहीं किया है या यह बुराई मुझसे नहीं हुई है, मैं तो इन्कार भी नहीं कर सकता हूं और इन्कार करूं भी तो क्या फ़ाएदा होगा जबकि सारे आज़ा व जवारे मेरे ख़िलाफ़ गवाही देने के लिए तैयार हैं और मझे ख़ुद भी इस बात का यक़ीन है और इसमें कोई शक नहीं है कि तू इन बड़े बड़े उमूर के बारे मे सवाल ज़रूर करेगा और तू हाकिम आदिल है तेरे यहाँ ज़ुल्म का गुज़र नहीं है लेकिन ख़ुदाया मेरे लिए तो इन्साफ़ व अद्ल भी तो तबाह कुन है, मै तो तेरे अद्ल व इंसाफ़ से भी तेरी पनाह चाहता हूं और सिर्फ़ फ़ज़्ल व करम का मामला चाहता हूं।

मेरे परवरदिगार ! तू अग़र अज़ाब भी करेगा तो यह मेरे गुनाहों का नतीजा होगा कि तेरी हुज्जत तमाम हो चुकी है और तू माफ़ भी कर देगा तो ये तेरे हिल्म व जूद व करम का नतीजा होगा, कि तेरे अलावा कोई ख़ुदा नहीं है, तू पाक और बे नियाज़ है और मैं ज़ुल्म करने वालों में हूं, तू अकेला और बे नियाज़ है और मै असतग़फ़ार करने वालों में हूं, तू अकेला और बे नियाज़

है और मैं तौहीद का कलेमा पढ़ने वालों में हूं, तू अकेला और बे नियाज़ है और मैं ख़ौफ़ ज़दा हूं, तू अकेला और बे नियाज़ है और मैं लर्ज़ा बर अन्दाम हूं, तू अकेला और बे नियाज़ है और मैं उमीदवारों में हूं, तू अकेला और बे नियाज़ है और मैं रग़बत रखने वालों में हूं, तू अकेला और बे नियाज़ है और मैं तेरी वहदानियत का इक़रार करने वालों में हूं, तू अकेला और बे नियाज़ है और मैं तेरी बुज़ुर्गी का एतराफ़ करने वालों में हूं, तू अकेला और बे नियाज़ है और मेरे आबाओ अजदाद सबका परवरदिगार भी है।

परवरदिगार यह मेरी हम्द व सना तेरी बुर्ज़ुगी के इक़रार के साथ है और यह मेरा इख़लासे ज़िक्र तेरी तौहीद के एतराफ़ के हमराह है, मै तेरी नेमतों का एक एक करके इक़रार करता हूं और फिर यह भी इक़रार करता हूं कि कोई उन्हें शुमार नहीं कर सकता, वह बेहद व हिसाब और बे निहायत व बे शुमार हैं, ताम व कामिल भी हैं और वाज़ेह व रौशन और क़दीम व जदीद भी।

तेरी नमतों का सिलसिला रोज़े अव्वल से जारी है जिस दिन से तूने मुझे ख़ल्क़ किया और मेरी ज़िंदगी का आग़ाज़ किया—— वह नेमतें यह हैं कि तूने फ़कीरी में बे नियाज़ी दी है, नुक़सानात को रफ़ा किया है, सहूलतों के इन्तेज़ामात किये हैं, सख़्तियों को दूर किया है, रंज व अलम को बर तरफ़ किया है, बदन में आफ़यत दी है, दीन में सलामती दी है——और यह नेमतें इस क़द्र बे हिसाब हैं कि अगर अव्वलीन व आखरीन मिल कर मेरी मदद करें और मैं इनका हिसाब करना चाहूं तो नहीं कर सकता और न वही सब कर सकते हैं, तू पाक और पाकीज़ा व बुलन्द व बरतर है–तू रब्बे करीम व अज़ीम व रहीम है और तेरी नेमतों का शुमार नहीं है– तेरी हम्द व सना की मंज़िल तक कोई पहुंच नहीं सकता और तेरी नेमतों का बदला मुम्किन नहीं है।

परवरदिगार ! मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरे ऊपर अपनी नेमतों को मुकम्मल कर दे और अपनी इताअत से नेक बख़्त बना दे तू पाक व बे नियाज़ और वैहदहु ला शरीक है।

ख़ुदाया ! तू मुज़तर लोगों की दुआओं को क़ुबूल करता है, और बुराईयों को दफ़ा करता है, सितम रसीदा की फ़रयाद रसी करता है, बीमारों को शिफ़ा देता है, फ़क़ीरों को ग़नी बनाता है, दिल शिकस्ता के दिल को जोड़ देता है, बच्चों पर रहम करता है, बड़ों को मदद बहम पहुंचाता है, तेरे अलावा कोई मदद गार नहीं है और तुझसे बालातर कोई साहेबे ताक़त नहीं है, तू ख़ुदाए अली व कबीर है।

ऐ पाबस्तए ज़ंजीर असीरों को रिहाई दिलाने वाले ! ऐ कमसिन बच्चों को रोज़ी देने वाले! ऐ ख़ौफ़ ज़दा तालिबान पनाह को पनाह देने वाले ! ऐ वो ख़ुदा जिसका कोई शरीक और वज़ीर नहीं है–मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़िल फ़रमा और आज की शाम मुझे वो सब कुछ अता फ़रमा दे जो तूने किसी भी नेक बन्दे को अता किया है– ज़ाहिरी नेमतों का तसलसुल, बातिनी नेमतों की तजदीद, बलाओं से निजात, रंज व ग़म का दफ़िया, दुआओं की इस्तेजाबत, नेकियों की क़बूलियत, बुराईयों की पर्दा पोशी वग़ैराह, तू लतीफ़ भी है और ख़बीर भी है और हर शै पर क़ादिर व क़दीर भी।

ख़ुदाया ! जिस जिस को पुकारा जाता है उनमें तू सबसे ज़्यादा क़रीब है और जो भी लब्बैक कहने वाला है उनमे तू सबसे जल्दी क़ुबूल करने वाला है, हर माफ़ करने वाले से ज़्यादा करीम और हर अता करने वाले से ज़्यादा बख़्शने वाला है, हर मशग़ूल से ज़्यादा सुनने वाला है और दुनिया व आख़ेरत के लिए रहमान व रहीम है, तेरा जैसा कोई क़ाबिले सवाल नहीं है और तेरे अलावा कोई उमीदों का मरकज़ नहीं है, मैने तझे पुकारा तो तूने क़ुबूल किया, तुझसे मांगा तो तूने अता कर दिया,

तेरी तरफ़ रग़बत की तो तूने रहम किया, और तुझपर भरोसा किया तो तूने निजात अता करदी, तेरी पनाह मागीं तो अकेला ही काफ़ी हो गया।

ख़ुदाया ! अपने बन्दे अपने रसूल व नबी हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा[स०] और उनकी आले तय्यबीन व ताहेरीन पर रहमत नाज़िल फ़रमा, और हमारे लिए अपनी नेमतों को मुकम्मल फ़रमा दे, हर अता को ख़ुशगवार बना दे और हमारा नाम शुक्रगुज़ारों में और नमतों को याद रखने वालों में दर्ज फ़रमा दे–आमीन या रब्बुल आलेमीन।

ख़ुदाया ! ऐ वह परवरदिगार जिसकी मिलकियत के साथ इख़तियारात भी हैं और जिसके इख़तियारात के साथ क़हारी भी है, जिसने आसियों की पर्दा पोशी की है, असतग़फार करने वालों को माफ़ किया है, ऐ तलबगारों और रग़बत करने वालों की मज़िले आख़िर, उमीदवारों की उमीदों की आमाजगाह, हर शै पर इल्मी अहाता रखने वाले और उज़्र ख़्वाहों पर राफ़्त व रहमत व तहम्मुल का मुज़ाहेरा करने वाले !

ख़दाया ! हम इस शाम के वक़्त तेरी तरफ़ मुतावज्जे हैं जिसे तूने बा शरफ़ व बा अज़मत क़रार दिया है हमारा वसीला तेरा रसूल[स०], तेरी मखलूक़ात का मुन्तख़ब तरीन बन्दा तेरी वही का अमीन, तेरे सवाब की बशारत देने वाला, तेरे अज़ाब से डराने वाला और रौशन चिराग़ पैग़म्बर है जिसके ज़रिए तूने मुसलमान बन्दों पर इनआम किया है और उसे आलेमीन के लिए रहमत क़रार दिया है।

ख़ुदाया ! मोहम्मद[स०] व आले मोहम्मद[अ०] पर वैसी रहमत नाज़िल फ़रमा जिसके वह अहल हैं– ऐ ख़ुदाए अज़ीम ! हज़रत मोहम्मद[स०] और उनकी आल तय्यबीन व ताहेरीन पर रहमत नाज़िल फ़रमा और अपनी माफ़ी और मग़फ़िरत के ज़रिए हमारे गुनाहों की पर्दा पोशी फ़रमा।

तेरी तरफ़ मुख़तलिफ़ ज़बानों में आवाज़ें और फ़रयादें बुलन्द हैं लेहाज़ा आज की शाम मुझे हर उस नअ्मत में हिस्सेदार क़रार देदे जिसे तू अपने बन्दों पर तक़सीम कर रहा है और जिस नूर से हिदायत कर रहा है, और जिस रहमत को नश्र कर रहा है और जिस बरकत को नाज़िल कर रहा है और जिस लिबास आफ़ियत से पर्दा पोशी कर रहा है और जिस रिज़्क़ में वसअत दे रहा है, ऐ तमाम रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले।

ख़ुदाया ! मैं इस वक़्त वापस जांऊ तो कामयाब, निजात याफ़्ता, नेक अमल, बहरावर और फ़ाएज़ुलमराम वापस जांऊ, मुझे मायूसे रहमत न क़रार देना और रहमत से खाली न रखना, मेरी उम्मीदें मेहरूमी का शिकार न होने पाएँ और मुझे अपने फ़ज़्लो करम से अलग न रखना, जिस अता की उम्मीद रखता हूं उससे मायूस न हो जाऊँ और तेरी बारगाह से न मुराद वापस न जाऊँ, अपने दरवाज़े से हटा न देना कि तू बेहतरीन बख़शिश करने वाला है और बुलन्द तरीन करम करने वाला है।

मैं तेरी तरफ़ बड़े यक़ीन के साथ मुतावज्जे हूं, और तेरे मोहतरम मकान का दिल से क़स्द किये हुए हूं, इन मनासिक में मेरी इमदाद फ़रमा, मेरे हज को शरफ़ क़ुबूलियत अता फ़रमा, मेरे गुनाहों को बख़्श दे और मेरी ख़ताओं को माफ़ फ़रमा।

मैने तेरी बारगाह में वह हाथ फैलाया है जिस पर ज़िल्लत व हिक़ारत के निशानात लगे हुए हैं लेकिन परवरदिगार जो हमने मागां है वो आज की शाम अता करदे और जिस काम के लिए पुकारा है उसके लिए काफ़ी बन जा, तेरे अलावा कोई और काफ़ी नहीं है और तेरे सिवा कोई और परवरदिगार भी नहीं है तेरा हुक्म नाफ़िज़ है और तेरा इल्म मुहीत और तेरा फ़ैसला मब्नी बर इंसाफ़ है हमारे हक़ में ख़ैर का फ़ैसला फ़रमा और हमें एहले ख़ैर में क़रार दे।

खुदाया ! अपने जूदो करम से हमारे लिए अज़ीम तरीन अज्र और बेहतरीन ज़खीरए सवाब और दाएमी सहूलत व रिफ़ाहियत को लाज़िम क़रार दे दे, हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा और हमे हलाक होने वालों में न क़रार देना, अपनी रहमत व राफ़्त का रूख़ हमारी तरफ़ से न मोड़ देना कि तू अरहमुर–राहेमीन और ख़ैरूल ग़ाफ़ेरीन है।

खुदाया ! आज की शाम उन लोगों में क़रार दे जिनके सवाल पर तूने अता किया और जिनके शुक्र पर इज़ाफ़ा किया है जिनकी तौबा को क़ुबूल किया और जिनके गुनाहों से जुदा हो जाने पर उन्हे माफ़ कर दिया, ऐ साहेबे जलाल व इकराम !

खुदाया ! हमें पाकीज़ा बना दे हमारी मदद फ़रमा हमारी फ़रयाद व ज़ारी पर रहम फ़रमा ऐ बेहतरीन मसऊल और सबसे ज़्यादा रहम करने वाले ऐ वह खुदा जिस पर पलकों की बन्दिश और आंखो के इशारे मख़्फ़ी नहीं, जो दिलों के मुज़मरात को भी जानता है और सीने के अन्दर छुपे हुए राज़ों से भी बाख़बर है, उसका इल्म सबका अहसा किए हुए है और इसका हिल्म हर शै पर अहाता रखता है।

तू पाक व बे नियाज़ है और मुख़ालेफ़ीन के अक़वाल व तसव्वुरात से बहुत ज़्यादा बुलन्द व बरतर है सातों आसमान, तमाम ज़मीनें और दोनों की मख़लूक़ात सब तेरी तस्बीह कर रही हैं हर ज़र्रा काएनात तेरा तस्बीह ख़्वां है हम्द तेरे लिए है और बुज़ुर्गी और बरतरी भी तेरे ही लिए है तू साहेबे जलाल व इकराम है और मालिके अफ़ज़ल व इनआम है तेरी नेअ़मतें अज़ीम हैं और तू जवाद व करीम और रऊफ़ व रहीम है।

परवरदिगार ! हमारे लिए रिज़्क़े हलाल में वुसअत अता फ़रमा। हमारे बदन और दीन दोनो में आफ़ियत अता फ़रमा। हमें ख़ौफ़ में अमन व अमान अता फ़रमा और हमारी गरदन को आतिशे जहन्नम से रिहाई अता फ़रमा।

ख़ुदाया ! हमें अपनी तदबीरों का निशाना न बना और अपने अज़ाब में धीरे धीरे खींच न लेना हम किसी धोके में न रहने पाएँ और जिन्नात व इंसान के फ़ासिक़ों के शर से महफ़ूज़ रहें।

उसके बाद हज़रत ने सरे मुबारक आसमान की तरफ़ बुलन्द किया इस आलम में कि चश्में मुबारक से मसलसल आँसू रवाँ थे और ज़बान पर ये फ़िक़रात थे:

ऐ सबसे बेहतर सुनने वाले और सबसे ज़्यादा निगाह रखने वाले ! सबसे तेज़ तर हिसाब करने वाले और सबसे ज़्यादा रहम करने वाले! मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़िल फ़रमा।

परवरदिगार ! मैं तुझसे ऐसी हाजत तलब कर रहा हूं कि अगर तू उसे पूरा कर देगा तो बाक़ी सबका रद कर देना भी मुज़िर न होगा और अगर उसे रद कर देगा तो बाक़ी सबका अता कर देना भी मुफ़ीद न होगा और वह ये है कि मेरी गरदन को आतिशे जहन्नम से आज़ाद कर दे कि तेरे अलावा कोई दूसरा ख़ुदा नहीं है और तू वहदहू ला शरीक है तेरे ही लिये हम्द है और तेरे ही लिए मुल्क है तू ही हर शै पर क़ादिर व मुख़्तार है।

ऐ रब– ऐ रब– ऐ रब– ऐ रब– ऐ रब– ऐ रब– ऐ रब– ऐ रब– ऐ रब– ऐ रब !

ख़ुदाया मैं अपनी मालदारी में भी फ़क़ीर हूं तो ग़ुरबत में किस तरह फ़कीर न हूंगा और अपने इल्म के बावजूद जाहिल हूँ तो जिहालत में किस तरह जाहिल न हूंगा।

तेरी तदबीरों की नेरंगी और तेरे मुक़दरात की बसरअत तब्दीली ने तेरे बा मारफ़त बन्दों को इन दोनो बातों से रोक रखा है कि न किसी अतिये की तरफ़ से पुर सुकून होने पाते हैं और न किसी बला की वजह से मायूस होने पाते हैं।

परवरदिगार ! मेरी तरफ़ से वह सब कुछ है जो मेरी ज़िल्लत व पस्ती के मुताबिक़ है तो तेरी तरफ़ से भी वह सब कुछ होना चाहिए जो तेरे रहम व करम के शायाने शान है।

ख़ुदाया–! तूने अपनी तारीफ़ लफ़्ज़ लतीफ़ व रऊफ़ से की है और मेरे ज़ोफ़ के वजूद से पहले से इसका मुज़ाहेरा भी किया है तो क्या अब ज़ोफ़ के ज़ाहिर हो जाने के बाद उसे रोक देगा।

ख़ुदाया ! अगर मुझसे नेकियों का ज़हूर हो तो वह तेरे करम ही का नतीजा है और अगर बुराईयाँ ज़ाहिर हों तो ये मेरे आमाल का नतीजा हैं और उन पर तेरी हुज्जत तमाम है।

ख़ुदाया ! जब तू मेरा कफ़ील है तो दूसरे के हवाले किस तरह करेगा ? और जब मेरा मददगार है तो मैं ज़िल्लत से दो चार किस तरह हूंगा ? तू मेरे हाल पर मेहरबान है तो मायूस और नाकाम होने की क्या वजह है ?

अब मैं अपनी फ़क़ीरी का वास्ता क़रार देता हूँ लेकिन उसे किस तरह वास्ता क़रार दूं, जिसके तेरी बारगाह तक पहुंचने का सवाल ही नहीं है मैं अपने हालात का शिकवा किस तरह करूं कि तू ख़ुद ही बेहतर जानता है, अपनी ज़बान से किस तरह तरजुमानी करूं कि सब तो तुझ पर ख़ुद ही वाज़ेह और रौशन है तू कैसे मेरी उम्मीदों को न उम्मीद करेगा कि वह तेरे ही करम की बारगाह में पेश की गईं हैं और कैसे मेरे हालात की इस्लाह नहीं करेगा जबकि उनका क़याम तेरी ही ज़ात से वाबस्ता है।

ख़ुदाया ! मेरी अज़ीम तरीन जेहालत के बावजूद तू किस क़द्र मेहरबान है और मेरे बदतरीन आमाल के बावजूद तू किस क़द्र रहीम व करीम है।

ख़ुदाया ! तू किस क़द्र मुझसे क़रीब है और मैं किस क़द्र तुझसे दूर हूँ– और जब तू इस क़द्र मेहरबान है तो अब कौन दरम्यान में हाएल हो सकता।

खुदाया–! आसार के इख़्तिलाफ़ और ज़माने के तग़इयुरात से मैं सिर्फ़ ये समझा हूँ कि तू हर रंग में अपने को वाज़ेह करना चाहता है कि मैं किसी तरह जाहिल न रह जाऊं और बहरहाल तुझे पहचान लूं।

परवरदिगार ! जब मेरी ज़िल्लत व ख़सासत मेरी ज़बान को बन्द करना चाहती है तो तेरा करम कूवते गोयाई अता कर देता है और जब मेरे हालात व कैफ़ियात मुझे मायूस बनाना चाहतें हैं तो तेरे एहसानात फिर पुर उमीद बना देते हैं।

खुदाया ! मैं जिसकी नेकियां भी बुराईयों जैसी हैं उसकी बुराईयों का क्या हाल होगा और मै जिसकी निगाह के हक़ाएक़ भी दावे से ज्यादा हैसियत नहीं रखते हैं इसके दावों की क्या हैसियत होगी।

परवरदिगार ! तेरे नाफ़िज़ हुक्म और तेरी मेहरबान मशियत ने किसी के लिए बोलने का मौक़ा नहीं छोड़ा और न किसी को किसी हाल पर साबित रहने दिया है कितनी ही मर्तबा मैंने इताअत की बिना रखी और हालात को मज़बूत बनाया लेकिन तेरे अद्ल व इंसाफ़ ने मेरे ऐतमाद को मुन्हदिम कर दिया और फिर फ़ज़्ल व करम ने मुझे सहारा दे दिया।

परवरदिगार ! तुझे मालूम है कि अगर फे़ल व अमल के एतबार से मेरी इताअत दाएमी नहीं है तो अज़्म व जज़्म के एतबार से बेहरहाल दाएमी है मेरी हालत तो यह है कि मैं किस तरह अज़्म करूं जबकि साहेबे इक़तेदार और क़ाहिर तू है और किस तरह अज़्म न करूं जबकि हाकिम व आमिर भी तू है।

खुदाया ! आसारे कायनात में ग़ौर व फ़िक्र मुझे तेरी मुलाक़ात से दूर तर किये जा रहे हैं लेहाज़ा किसी ऐसी ख़िदमत का सहारा दे दे कि मैं तेरी बारगाह में पहुंच जाऊं मैं इन चीज़ों को किस तरह राहनुमा बनाऊं जो खुद ही अपने वजूद में तेरी मोहताज हैं–क्या किसी शै को तुझसे ज़्यादा भी ज़हूर हासिल है कि वह दलील बन कर तुझे

ज़ाहिर कर सके तू कब हमसे ग़ायब रहा है कि तेरे लिए किसी दलील और रहनुमाई की ज़रूरत हो और कब हमसे दूर रहा है कि आसार तेरी बारगाह तक पहुंचाने का ज़रिया बनें वह आँखे अंधी हैं तो तुझे अपना निगरां नहीं समझ रही हैं और वह बन्दा अपने मुआमलाते हयात में सख़्त ख़सारे में है जिसे तेरी मुहब्बत का कोई हिस्सा नहीं मिला।

ख़ुदाया ! तूने आसारे कायनात की तरफ़ रूजू करने का हुक्म दिया है तो अब नूर के लिबास और हिदायत की बसीरत के सहारे अपनी बारगाह में वापस बुला ले ताकि मै इस शान से वापस आऊं कि मेरा बातिन इस कायनात की तरफ़ तवज्जो से महफ़ूज़ हो और मेरी हिम्मत इस दुनिया पर भरोसा करने से बुलन्द हो–तू हर शै पर क़ुदरत व इख़्तियार रखता है।

परवरदिगार ! यह मेरी ज़िल्लत है जो तेरी जनाब में बिल्कुल वाज़ेह और रौशन है और यह मेरी हालत है जिस पर कोई पर्दा नहीं है मैं तेरे ही ज़रिए तेरी बारगाह तक पहुंचना चाहता हूं और तेरी ही रहनुमाई का तलबगार हूं अपने नूर से अपनी तरफ़ हिदायत फ़रमा और अपनी सच्ची बन्दिगी के साथ अपनी बारगाह में हाज़री की सआदत करामत फ़रमा।

ख़ुदाया! मुझे अहले तक़र्रुब को हासिल होने वाले हक़ाएक़ अता फरमा और जज़्ब व कशिश रखने वालों के मसलक पर चलने की तौफ़ीक़ करामत फरमा।

अपनी तदबीर के ज़रिये मुझे मेरी अपनी तदबीर से बे नियाज़ कर दे और अपने इख़्तियार के ज़रिए मेरे इख़्तियार व इन्तेख़ाब मुस्तग़नी बना दे और इज़्तरार और इज़्तराब के मौक़े की इत्तेला और आगाही अता फ़रमा।

परवरदिगार ! मुझे मेरे नफ़्स की ज़िल्लत से बाहर निकाल दे और मौत से पहले हर शक व शिर्क से पाक व पाकीज़ा बना दे, मै तेरी ही मदद चाहता हूं तू तो मेरी इमदाद कर और तुझी पर भरोसा करता हूं तो तू किसी और के हवाले न कर देना। मै तुझसे सवाल करता हूं तू न उम्मीद न करना और सिर्फ़ तेरे फ़ज़्लो करम में रग़बत

रखता हूं तू मुझे महरूम न रखना। मै तेरी जनाब से रिश्ता रखता हूं तू मुझे दूर न करना और मै तेरे दरवाज़े पर खड़ा हूं तू मुझे भगा न देना तेरी मरज़ी इस बात से बुलन्द तर है कि इसमें तेरी तरफ़ से कोई नुक़्स पैदा हो सके तो मेरी तरफ़ से क्या नुक़्स पैदा हो सकता है, तू अपनी ज़ात से इस बात से बे नियाज़ है कि तुझे तेरी तरफ़ से कोई फ़ाएदा पहुंचें तो मेरी तरफ़ से क्या फ़ाएदा पहुंच सकता है।

खुदाया! यह तो सिर्फ़ क़ज़ा व क़द्र है जो उम्मीदवार बनाए हुए है वरना ख़्वाहिश तो आरज़ुओं की रस्सियों में जकड़े हुए थी, अब तूही मेरा मददगार बन जाता कि तू ही मदद करे और तूही रास्ता दिखाए अपने फ़ज़्लो करम से ऐसा ग़नी बना दे कि अपनी तलब से भी बे नियाज़ हो जाऊं।

तू ही वह है जिसने अपने दोस्तों के दिलों में अनवारूलवहीत की रौशनी पैदा कराई है तो वह तुझे पहचानने लगे हैं और तेरी वहदानियत का इक़रार करने लगे हैं और तूही वह है जिसने अपने मेहबूब के दिलों से अग़यार को निकाल बाहर कर दिया है, तो अब तेरे अलावा किसी के चाहने वाले नहीं है और किसी की पनाह नहीं माँगते हैं तूने उस वक़्त उन्स का सामान फ़राहम किया जब सारे आलम सबबे वहशत बने हुए थे और तूने इस तरह हिदायत दी है कि सारे रास्ते रौशन हो गए हैं।

परवरदिगार ! जिसने तुझे खो दिया उसने पाया क्या? और जिसने तुझे पा लिया उसने खोया क्या? जिसने तेरा बदल तलाश किया वह मायूस हो गया और जिसने तुझसे मुंह मोड़ा वह घाटे में रहा। तेरे अलावा ग़ैर से उम्मीद ही क्यों की जाए जबकि तूने एहसान का सिलसिला रोका नहीं है और तेरे सिवा दूसरे से मांगा ही क्यों जाए जबकि तेरे फ़ज़्ल व करम की आदत में फ़र्क़ नहीं आया है।

परवरदिगार ! जिसने अपने दोस्तों को उन्स व मुहब्बत की हलावत का मज़ा चखा दिया है तो उसकी बारगाह में हाथ फैलाए खड़े हुए हैं और अपने औलिया को हैबत का लिबास पहना दिया है तो उसके सामने असतग़फ़ार

करने के लिए इस्तादा हैं, तू तमाम याद करने वालों से पहले याद करने वाला है और तमाम मांगने वालों से पहले अता करने वाला है और फिर करम बालाए करम ये है कि खुद ही देकर खुद ही क़र्ज़ का मुतालेबा करता है।

खुदाया ! मुझे अपनी रहमत के दरवाज़े से तलब कर ले ताकि मैं तेरी बारगाह तक पहुंच जाऊं और मुझे अपने एहसान के सहारे अपनी तरफ़ खींच ले ताकि मैं तेरी तरफ़ मुतावज्जे हो जाऊं।

खुदाया ! मैं हज़ार गुनाह करूं मगर मेरी उम्मीद तुझसे क़ताअ होने वाली नहीं है और मैं लाख इताअत करूं मगर तेरे जलाल से मेरा ख़ौफ़ ख़त्म होने वाला नहीं है सारे आलम ने तेरी तरफ़ ढकेल दिया है और तेरे फ़ज़्लो करम की इत्तेलाअ ने मुझे अपनी तरफ़ खींच लिया है।

खुदाया ! जब तू मेरी उम्मीद है तो मैं मायूस किस तरह हो जाऊं और जब तुझ पर मेरा भरोसा है तो मैं ज़लील किस तरह हो सकता हूं, अगर तूने ज़िल्लत में डाल दिया तो साहेबे इज़्जत कैसे बनूंगा ? और तूने अपना बना लिया तो ज़लील कैसे हो सकूंगा?

परवरदिगार ! मैं किस तरह फ़क़ीर न बनूं कि तूने फ़क़ीरों के दरमियान रखा है, और कैसे फ़क़ीर रह सकूंगा जबकि तूने अपने फ़ज़्ल व करम से ग़नी बना दिया है तेरे अलावा कोई खुदा नहीं है तूने अपने को हर एक को पहचनवा दिया है तो अब कोई तुझसे न वाक़िफ़ नहीं है और मेरे लिए और भी वाज़ेह और नुमाया हो गया है तो मुझे तेरा जलवा हर शै में नज़र आने लगा है तू दर हक़ीक़त हर एक के लिए ज़ाहिर और रौशन है।

ऐ खुदा जिसने अपनी रहमानियत से हर शै पर अहाता कर लिया है तो अर्श अज़ीम भी इसकी ज़ात में गुम हो गया है, तूने आसारे वजूद को दूसरे आसार के ज़रिए नाबूद कर दिया है और अग़यार को अफ़लाके नूर के अहाते से महो कर दिया है।

ऐ वह खुदा–! जो अर्श के सरा पर्दों में इस तरह पोशीदा हुआ कि निगाहें इसके देखने को तरस गयीं और

कमाले तजल्ली से इस तरह रौशन हुआ कि इसकी अज़मत हर शै पर हावी हो गई।

तू कैसे छुप सकता है जबकि हर शै में तेरा ज़हूर है और किस तरह ग़ाएब हो सकता है जबकि हर एक के सामने रह कर उसके आमाल की निगरानी कर रहा है, तू हर शै पर क़ादिर है और सारी तारीफ़ तेरी ज़ाते वाजिब के लिए है।

मोमेनीन केराम आख़िर रोज़े अरफ़ा मासूमीन की दुआओं के इन दो फ़िक़रात को ज़रूर दोहराएं और ये महसूस करें कि हादियाने इस्लाम ने अपने चाहने वालों को तौबा व असतग़फ़ार के कैसे कैसे तरीक़े तालीम फ़रमाए हैं सलातीने दुनिया को इनका तसव्वुर भी नहीं है।

1 –परवरदिगार ! मेरे गुनाहों से तेरा कोई नुक़सान नहीं है और मुझे माफ़ कर देने से तेरे यहां कोई कमी न पैदा हो जाएगी लेहाज़ा जिस चीज़ से तेरे यहां कमी का ख़तरा नहीं है वह दे दे और जिस चीज़ से तेरा नुक़सान नहीं है उसे माफ़ कर दे।

2 –ख़ुदाया मेरी बुराईयों की वजह से मुझे अपनी नेकियों से महरूम न करना, और अगर मेरी ज़हमत व मुसीबत और मेरे रंजो अलम पर रहम नहीं भी करना है तो कम से कम मुझे मुसीबत ज़दगान और आफ़त रसीदों का अज्र ही दे दे–

अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मद व आले मोहम्मद व जाअलना मिन अतबाअहुम व शीअतहुम व औलियाओहुम व मुहिब्बेहिम वलहम्दो लिल्लाहे अव्वलन व आख़ेरन।

☆☆☆☆☆☆☆☆

Tanzeemul Makatib
Golaganj, Lucknow-18 (INDIA)
Ph. 0522-6565982, 6565985
Email: makatib.makatib@gmail.com